04 - फोड़ा

05 - दर्शन के विशेष धरातल के कलाकार हरि दर्शन

A Daily News Magazine

भोपाल

रविवार, 23 नवंबर, 2025

06 - समन्वित प्रयासों और सहयोग से बैतूल बनेगा मॉडल नगरः खंडेलवाल

07 - सिनेमा के परदे पर कला और नग्नता के सवाल

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 23, अंक 83, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com

facebook.com/subahsaverenews

www.subahsavere.news

twitter.com/subahsaverenews

राजसमंद की प्रभात

कोशी नदी को बिहार का शोक कहा जाता है। पूर्णिया कोशी क्षेत्र का यह दृश्य अद्भुत है।

फोटो- पंकज शर्मा

वैश्विक विकास की प्राथमिकताएं फिर तय करने की जरूरतःपीएम

मोदी ने जी-20 समिट पेश किए तीन प्रस्ताव,रखा भारत का पक्ष

नई दिल्ली (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शनिवार को जोहान्सबर्ग में जी 20 समिट को संबोधित किया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने जोहान्सबर्ग में जी 20 समिट के शुरुआती सेशन में ग्लोबल डेवलपमेंट की प्राथमिकताओं को फिर से तय करने की बड़ी अपील की। उन्होंने सदस्य देशों से ऐसे मॉडल अपनाने की अपील की जो सबको साथ लेकर चलने वाले, टिकाऊ और सभ्यता की समझ पर आधारित हों। पीएम मोदी ने कहा कि उन्होंने बड़े पैमाने पर विकास को आगे बढ़ाने के लिए कई उपायों का सुझाव दिया है। पीएम मोदी ने इनक्लूसिव और सस्टेनेबल इकोनॉमिक ग्रोथ की वकालत की। प्रधानमंत्री ने कहा कि भारत का इंटीग्रल ह्यूमनिज्म का सिद्धांत अधिक बैलेंस्ड ग्रोथ के लिए एक टेम्पलेट देता है।

- **ग्लोबल ट्रेडिशनल नॉलेज रिपॉजिटरी-** उन्होंने कहा कि एक मुख्य विचार भारत की समृद्ध विरासत का इस्तेमाल करते हुए एक जी 20 ग्लोबल ट्रेडिशनल नॉलेज रिपॉजिटरी बनाना है। उन्होंने कहा कि ऐसी रिपॉजिटरी बेहतर स्वास्थ्य और सेहत को बढ़ावा देने के लिए सामूहिक ज्ञान को बनाए रखने और शेयर करने में मदद करेगी। अफ्रीका में पहली बार समिट होस्ट करने के साथ, पीएम मोदी ने कहा कि इस समय दुनिया को इस बात पर फिर से सोचने की जरूरत है कि तरक्की को कैसे मापा जाए जो लंबे समय से पिछड़े हैं।

ड्रग-टेरर नेक्सस का मुकाबला करना

फेंटानिल जैसे बहुत असरदार सिंथेटिक ड्रग्स के दुनिया भर में फैलने पर चिंता जताते हुए, प्रधानमंत्री ने दुनिया भर में पब्लिक हेल्थ, सोशल स्टेबिलिटी और सिक्योरिटी सिस्टम पर इसके नतीजों के बारे में चेतावनी दी। उन्होंने ड्रग-टेरर नेक्सस का मुकाबला करने के लिए एक खास जी 20 पहल की मांग की, जिसे फाइनेंशियल, गवर्नेंस और सिक्योरिटी फ्रेमवर्क को एक साथ लाने के लिए डिजाइन किया गया है। इस पहल का फोकस ड्रग-ट्रैफिकिंग नेटवर्क को खत्म करना, गैर-कानूनी पैसे के फ्लो को रोकना और टेरर ग्रुप्स के लिए फंडिंग के एक मुख्य सोर्स को कमजोर करना होगा। उन्होंने कहा कि इस चुनौती के लिए एकजुट ग्लोबल ऐक्शन की जरूरत है। समिट में इनक्लूसिव और सस्टेनेबल ग्रोथ पर फोकस करते हुए, पीएम मोदी ने कहा कि जी 20 स्टेज पर अफ्रीका के आने से दुनिया को कोर्स करेक्शन का मौका है।

ग्रीन एनर्जी राष्ट्र के विकास का सबसे मजबूत स्तंभः सीएम

- **मप्र में हरित ऊर्जा उत्पादन क्षेत्र में निवेश की हैं असीम संभावनाएं**
- **मुख्यमंत्री ने हैदराबाद में ग्रीन एनर्जी प्रोडक्शन में अग्रणी**

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने शनिवार को हरित ऊर्जा क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य कर रही ग्रीनको कंपनी के हैदराबाद स्थित मुख्यालय का दौरा किया। इस अवसर पर उन्होंने कंपनी की अत्याधुनिक तकनीकों, ऊर्जा संरक्षण प्रणालियों और नवीकरणीय ऊर्जा उत्पादन से जुड़े विभिन्न प्रोजेक्ट्स का बारीकी से अवलोकन किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि ग्रीन एनर्जी आज राष्ट्र के विकास का सबसे मजबूत स्तंभ बनती जा रही है। ग्रीन एनर्जी प्रोडक्शन और इसके एक्सप्लोरेशन की दिशा में ग्रीनको समूह का योगदान अनुकरणीय और सराहनीय है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कम्पनी के अधिकारियों के साथ हुई सौजन्य बैठक में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में देश में ग्रीन एंड रिन्युएबल एनर्जी सेक्टर में हो रही ऐतिहासिक प्रगति का उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि भारत आज हरित ऊर्जा उत्पादन में वैश्विक स्तर पर अपनी एक अलग पहचान बना चुका है। मध्यप्रदेश इस मामले में अग्रणी राज्य बनने की ओर अग्रसर है। उन्होंने कहा कि मध्यप्रदेश में हरित ऊर्जा उत्पादन में निवेश की असीम संभावनाएं उपलब्ध हैं। इस दिशा में हमारी सरकार भी बड़े से बड़े कदम उठा रही है। उन्होंने कहा कि ग्रीन एनर्जी सेक्टर के विकास और विस्तार के लिए मध्यप्रदेश में निवेश के लिए आने वाले हर समूह और हर कंपनी का हम दिल से स्वागत करते हैं।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव का हैदराबाद प्रवास इसी दिशा में एक बड़ा प्रयास है। इससे राज्य में हरित ऊर्जा उत्पादन, औद्योगिक विकास और रोजगार सृजन में अब नई तेजी आएगी। मध्यप्रदेश और ग्रीनको समूह के बीच परस्पर सहयोग की यह संभावित पहल मध्यप्रदेश को हरित ऊर्जा उत्पादन के राष्ट्रीय केंद्र के रूप में स्थापित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव को कंपनी के ग्रुप सीईओ एवं प्रबंध निदेशक श्री अनिल चैनमला शेट्टी ने कम्पनी द्वारा पूरे देश में संचालित हरित ऊर्जा परियोजनाओं और भविष्य की योजनाओं की विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने कहा कि उनकी कम्पनी मध्यप्रदेश में भी अपने बिजनेस का विस्तार और निवेश बढ़ाने की दिशा में गंभीरता से काम कर रही है। उल्लेखनीय है कि ग्रीनको समूह ने मध्यप्रदेश में बड़े पैमाने पर हरित ऊर्जा परियोजनाएं स्थापित करने की संभावना व्यक्त की हैं। इनमें 100 जीडब्ल्यूएच ऊर्जा भंडारण क्षमता, ग्रीन हाइड्रोजन क्लस्टर, बायो-रिफाइनरी प्लांट्स, 2 प्रतिशत इथेनॉल, मेथेनॉल और सस्टेनेबल एविएशन फ्यूल (एसएएफ) उत्पादन जैसे उन्नत प्रोजेक्ट भी शामिल हैं।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव के ग्रीनको कंपनी मुख्यालय भ्रमण के दौरान प्रमुख सचिव, औद्योगिक नीति एवं निवेश प्रोत्साहन श्री राघवेन्द्र कुमार सिंह, एमडी एमपीआईडीसी एवं मुख्यमंत्री के अपर सचिव श्री चंद्रमौली शुक्ला सहित ग्रीनको कम्पनी के अधिकारी भी उपस्थित थे।

सुप्रभात

सूर्यास्त हो रहा है
जैसे बुद्ध कहते हैं
卐जो प्रकट होता है,
वह विलीन होना भी
जानता है卐

सड़कें शांत हैं
लेकिन
तुम्हारे पदचिह्न कहीं नहीं
और मैं समझती हूँ
वापसी की उम्मीद,
मन की रचना है
यथार्थ नहीं

मेरी इच्छाएं
अब उलटे प्याले में नहीं
बस श्वास के बीच के
खाली स्थान में रखी हैं
जहाँ बुद्ध ने
अनित्यता सिखाई थी

दीया जल रहा है
मैं उसे बचाने की
मूर्खता नहीं करती
जो लौ अपना अंत जानती है
वह हस्तक्षेप से
और अशांत हो जाती है

तुम सागर हो या लहर
क्या फर्क
बुद्ध कहते हैं,
卐रूप, शून्य का ही रूप है卐

और मैं
अब न तुम्हारी उपस्थिति माँगती हूं
न तुम्हारी अनुपस्थिति का भार उठाती हूं
दोनों को
एक ही गहरी निस्तब्धता में
अपने से गुज़रने देती हूं

अनित्यता
हर चाह को
निर्दय करुणा से काट देती है।

– अनुजीत इकबाल

उदयपुर में रणवीर सिंह के साथ नाचे ट्रम्प के बेटे

उनकी गर्लफ्रेंड ने भी किया डांस, दोनों ने जमकर मचाई धूम, रॉयल वेडिंग में करण जौहर का दूल्हा-दुल्हन के साथ टॉक शो

उदयपुर (एजेंसी)। उदयपुर में अमेरिकी राष्ट्रपति के बेटे डोनाल्ड ट्रम्प जूनियर और उनकी गर्लफ्रेंड बेटिना एंडरसन ने बॉलीवुड गानों पर डांस किया।

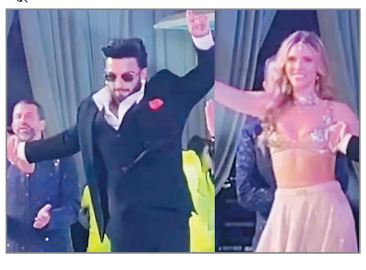

बॉलीवुड एक्टर रणवीर सिंह ने दोनों के साथ स्टेज शेयर की। ये पावर कपल अमेरिकी बिजनेसमैन रामा राजू मंटेना की बेटी की शादी में शामिल होने पहुंचा है। 23 नवंबर को होने वाली इस रॉयल वेडिंग के फंक्शंस में शुक्रवार की शाम बॉलीवुड एक्टर्स ने परफॉर्म किया। देसी गानों पर वरुण धवन, रणवीर सिंह, कृति सेनन, जैकलीन फर्नांडीस के डांस ने देश-विदेश से पहुंचे गेस्ट को झूमने पर मजबूर कर दिया। इस बॉलीवुड नाइट में प्रोड्यूसर-डायरेक्टर करण जौहर ने दूल्हे वामसी गडिराजू और दुल्हन नेत्रा मंटेना के साथ एक मजेदार टॉक शो भी किया। शनिवार को इस रॉयल वेडिंग के फंक्शंस में हॉलीवुड स्टार पहुंचे।

जमीन का झगड़ा खत्म! एक क्लिक में मिलेगी डिटेल

- **यूपी में गांव के घर और खेतों के नक्शे होंगे ऑनलाइन**

लखनऊ (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश की योगी सरकार में बड़े-बड़े फैसले लिए जा रहे हैं। कई नियमों में बदलाव कर आम जनता को राहत दी गई है। इसी क्रम में गांव की जमीनों के नक्शे को ऑनलाइन किये जाने की तैयारी चल रही है। नक्शे को सेटेलाइट के जरिये ऑनलाइन किया जाएगा। इस तरह ग्रामीणों को अपनी जमीनों की फुल डिटेल जानकारी एक क्लिक पर मिल जाया करेगी। यही नहीं, व्यापक स्तर पर डिजिटल ग्राम-मैपिंग लागू करने वाला उत्तर प्रदेश देश का पहला राज्य बन जाएगा। दरअसल प्रदेश सरकार अब गांवों की जमीनों के नक्शे को सेटेलाइट तकनीक की मदद से ऑनलाइन करने की तैयारी में है। इस नई व्यवस्था के लागू होते ही किसी भी खेत, घर या गाटा संख्या की सटीक लोकेशन मैप पर आसानी से तलाश की जा सकेगी।

भोपाल का तापमान
अधिकतम 30 °c
न्यूनतम 25°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ रविवार, 23 नवंबर 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

जौनपुर में 42 करोड़ की कोडीन सिरप मिलने से हड़कंप

- यूपी की 12 फर्मों को रांची की कंपनी कर रही थी सप्लाई

जौनपुर (एजेंसी)। यूपी में खाद्य और औषधि विभाग ने 42 करोड़ रुपये से अधिक की कोडीन युक्त कफ सिरप की भारी खेप बरामद की है। यह खेप शुभम जायसवाल की शैली इंटरप्राइजेज के माध्यम से यूपी, झारखंड, बिहार, नेपाल और बांग्लादेश तक फैले एक अवैध ड्रग नेटवर्क का हिस्सा थी। इस मामले में शुभम जायसवाल और 12 फर्मों के खिलाफ एफआईआर दर्ज की गई है।

वाराणसी, सोनभद्र और गाजियाबाद में कार्रवाई के बाद जौनपुर में भारी मात्रा में कोडीन मिश्रित कफ सिरप बरामद होने से हड़कंप मच गया है। अधिकारियों ने बताया कि जौनपुर के 12 फर्मों को झारखंड की राजधानी रांची से संचालित हो रही शैली इंटरप्राइजेज के जरिए करोड़ों रुपये की कोडीन सिरप सप्लाई की जा रही थी। शैली इंटरप्राइजेज शुभम जायसवाल के पिता भोला प्रसाद के नाम पर रजिस्टर्ड है। जांच में सामने आया है कि इसी फर्म के माध्यम से अवैध कोडीन सिरप की तस्करी का पूरा नेटवर्क जमा हुआ था।

चीन ने बचा लिया, नहीं तो होता बड़ा नुकसान

- भारत के साथ ड्रैगन, ट्रंप कर चुके हैं डुबोने का पूरा इंतजाम

नई दिल्ली (एजेंसी)। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप का टैरिफ भारत के लिए भारी पड़ रहा है। टैरिफ के चलते भारत का एक्सपोर्ट कठिन दौर से गुजर रहा है। वो तो भला हो चीन का ऐसे संकट में उसने भारत को बड़े नुकसान से बचा लिया। दरअसल, भारत का चीन को एक्सपोर्ट इस वित्त वर्ष के पहले सात महीनों में हर महीने बढ़ा है। अक्टूबर में तो यह 42 फीसदी तक बढ़ गया। इससे भारत को अमेरिका द्वारा लगाए गए भारी टैरिफ (शुल्क) के असर को कुछ हद तक कम करने में मदद मिली है। अप्रैल से अक्टूबर के बीच चीन को भारत का

निर्यात पिछले साल की तुलना में 24.7 फीसदी बढ़कर 10.03 अरब डॉलर हो गया। इसमें पेट्रोलियम उत्पाद, टेलीकॉम उपकरण और समुद्री उत्पाद सबसे आगे रहे। हालांकि, इस दौरान भारत का कुल निर्यात सिर्फ 0.63 फीसदी ही बढ़ा। इकोनॉमिक टाइम्स के अनुसार एक अधिकारी ने कहा कि यह द्विपक्षीय व्यापार के सबसे मजबूत दौरों में से एक है। खासकर ऐसे समय में जब वैश्विक मांग अनिश्चित है और कई बड़ी अर्थव्यवस्थाओं के निर्यात क्षेत्र सिकुड़ रहे हैं। चीन भारत के लिए सामान का सबसे बड़ा आयातक बना हुआ है। अप्रैल-अक्टूबर के दौरान चीन से 73.99 अरब डॉलर का सामान भारत आया।

अब दिल्ली में कांग्रेस की होगी महारैली

- एसआईआर के खिलाफ बड़े आंदोलन की तैयारी में पार्टी

पटना (एजेंसी)। बिहार विधानसभा चुनाव में शर्मनाक हार झेलने के बाद कांग्रेस अब कथित वोट चोरी के मुद्दे को लेकर आंदोलन करने की तैयारी कर रही है। वह बीजेपी के नेतृत्व वाली केंद्र की राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन सरकार और चुनाव आयोग के खिलाफ बड़े स्तर पर प्रदर्शन करने वाली है। यह विरोध प्रदर्शन दिल्ली में 14 दिसंबर को होगा। बिहार में सत्ता में आए

राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) के घटक दल भारतीय जनता पार्टी (बीजेपी) और जनता दल यूनाईटेड (जेडीयू) ने कांग्रेस की आलोचना की है। बीजेपी ने कहा है कि बिहार के चुनाव में कांग्रेस जमीन पर लड़ी नहीं। वे आपस में लड़ते रहे। अब दोष एसआईआर को दे रहे हैं। कांग्रेस के राष्ट्रीय महासचिव केसी वेणुगोपाल के अनुसार, 14 दिसंबर को दोपहर 1.30 बजे से दिल्ली के रामलीला मैदान में वोट चोर गद्दी छोड़ महा रैली आयोजित की जाएगी।

ऐतिहासिक होगा जस्टिस सूर्यकांत का शपथ समारोह

ब्राजील सहित दुनिया के 7 देशों के जज बनेंगे साक्षी

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय न्यायपालिका के इतिहास में एक अभूतपूर्व और कूटनीतिक दृष्टि से बेहद महत्वपूर्ण क्षण देखने को मिलेगा। दरअसल सोमवार, 24 नवंबर को राष्ट्रपति भवन में होने वाले मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति सूर्यकांत के शपथ ग्रहण समारोह में दुनिया के कई देशों के मुख्य न्यायाधीश और सुप्रीम कोर्ट के जज शामिल होंगे। बार एंड बेंच से बातचीत में तैयारियों से जुड़े अधिकारियों ने बताया कि यह पहली बार है जब इतने बड़े स्तर पर विदेशी न्यायिक प्रतिनिधि भारत के किसी मुख्य न्यायाधीश के शपथ ग्रहण समारोह में उपस्थित होंगे। न्यायमूर्ति सूर्यकांत अपने लंबे और महत्वपूर्ण न्यायिक करियर के बाद भारत के 53वें मुख्य न्यायाधीश के रूप में शपथ ग्रहण करेंगे। उनका कार्यकाल कई अहम संवैधानिक फैसलों, न्यायिक संस्थानों में सुधार और कानूनी सहायता व्यवस्था को मजबूत बनाने की पहलों के लिए जाना जाता है। 2019 में सुप्रीम कोर्ट जज बनने से पहले वे हिमाचल प्रदेश हाई कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश रहे। भारत सरकार ने विदेशी न्यायिक गणमान्य व्यक्तियों की पूरी सूची जारी की है। इनमें भूटान, केन्या, मलेशिया, मॉरीशस, नेपाल, श्रीलंका और ब्राजील के मुख्य न्यायाधीश, सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीश और उनके परिवारजन शामिल हैं।

तिरुपति में मिलावटी घी से बने 20 करोड़ लड्डू

- 5 साल में 68 लाख किलो घी का हुआ इस्तेमाल
- टीटीडी ने पूर्व चेयरमैन से कर ली 8 घंटे पूछताछ

चेन्नई (एजेंसी)। तिरुमाला तिरुपति देवस्थानम (टीटीडी) के लड्डू प्रसाद को लेकर नई बात सामने आई है। टीटीडी ट्रस्ट बोर्ड के चेयरमैन बीआर नायडू ने बताया कि साल 2019 से 2024 के बीच 48.76 करोड़ लड्डू बनाए गए। इनमें से करीब 20 करोड़ लड्डू मिलावटी घी से बनाए गए थे। टीटीडी के मुताबिक यह अनुमान रोजाना दर्शनार्थियों की संख्या, खरीद के रिकॉर्ड, बनाने और सप्लाई के आंकड़ों को मिलाकर निकाला गया है। टीटीडी ने इस मामले में पूर्व चेयरमैन और जगन के

सांसद वाईवी सुब्बा रेड्डी से आठ घंटे पूछताछ की। मिलावट का मामला 2024 में सामने आया था। जांच में खुलासा हुआ कि 68 लाख किलो घी मिलावटी था, जिसमें पाम ऑयल, पाम कर्नेल ऑयल और कुछ अन्य हानिकारक पदार्थ मिले थे। यह मिलावटी घी उत्तराखंड की भोले बाबा डेयरी और उसकी सेल कंपनियों ने सप्लाई किया था। इसकी कीमत लगभग 250 करोड़ आंकी गई है। जांच एजेंसियों के मुताबिक पिछले पांच सालों में करीब 11 करोड़ भक्त तिरुपति आए, लेकिन यह तय करना मुश्किल है कि किसे मिलावटी लड्डू मिले। टीटीडी ने स्वीकार किया है कि वीआईपी लड्डू भी अलग से पहचाने नहीं जा सकते थे। टीटीडी ने पूर्व चेयरमैन सुब्बा रेड्डी से यह पूछा कि लैब रिपोर्ट में मिलावट सामने आने के बाद भी घी के टैंकर क्यों मंजूर किए गए। रेड्डी का कहना है कि उन्हें रिपोर्ट नहीं दिखाई।

पंचायतों को आत्मनिर्भर और समृद्ध बनाने तीन दिन होगा मंथन

मुख्यमंत्री राज्य स्तरीय कार्यशाला और वाटर शेड महोत्सव का करेंगे शुभारंभ

भोपाल (नप्र)। प्रदेश की पंचायतों को आत्मनिर्भर व समृद्ध बनाने के लिए पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग द्वारा तीन दिन तक मंथन किया जाएगा। राज्य स्तरीय कार्यशाला होगी। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव द्वारा कुशाभाऊ ठाकरे इंटरनेशनल कन्वेंशन सेंटर, भोपाल में होने वाली राज्य स्तरीय कार्यशाला और वाटरशेड महोत्सव का शुभारंभ करेंगे। कार्यशाला में उप मुख्यमंत्री श्री राजेंद्र शुक्ल, श्री जगदीश देवड़ा, पंचायत एवं ग्रामीण विकास मंत्री श्री प्रहलाद पटेल, नगरीय विकास एवं आवास मंत्री श्री कैलाश विजयवर्गीय, लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी मंत्री श्रीमती संपतिया उइके, जनजातीय कार्य मंत्री डॉ. कुंवर विजय शाह, पंचायत एवं ग्रामीण विकास राज्यमंत्री श्रीमती राधा सिंह सहित जनप्रतिनिधि, विषय-विशेषज्ञ व प्रशासनिक अधिकारी उपस्थित रहेंगे।

संचालक सह आयुक्त पंचायत राज श्री छोटे सिंह ने बताया कि भोपाल में 24, 25 एवं 26 नवंबर को तीन दिवसीय आत्मनिर्भर पंचायत समृद्ध मध्यप्रदेश'' पर केन्द्रित कार्यशाला का आयोजन किया जा रहा है, जिसका उद्देश्य पंचायतों को आत्मनिर्भर के साथ समृद्ध बनाना है। कार्यशाला में त्रि-स्तरीय पंचायत से जुड़े जनप्रतिनिधियों को भी आमंत्रित किया जा रहा है। तीन दिनों तक चलने वाली कार्यशाला में पंचायतों के लिए स्वनिधि से समृद्धि'' अभियान की अवधारणा, शहरीकरण के साथ सामंजस्य, वाटरशेड परियोजना का क्रियान्वयन एवं शुद्ध पेयजल की उपलब्धता, स्वच्छ ग्राम, विभिन्न शासकीय योजनाओं जैसे प्रधानमंत्री आवास योजना, प्रधानमंत्री जनमन योजना, प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना, पीएम पोषण एवं पेसा ग्राम सभाओं की वर्तमान स्थिति एवं सफल क्रियान्वयन सहित प्रशासनिक रूप से सक्षम पंचायत, प्रश्न-उत्तर इत्यादि विषयों पर विस्तृत रूप से चर्चा की जायेगी।

कार्यशाला का उद्देश्य

कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य पंचायतों को प्रशासनिक, वित्तीय एवं सामुदायिक स्तर पर मजबूत बनाते हुए उन्हें आत्मनिर्भर एवं समृद्ध बनाने की दिशा में ठोस रणनीति तैयार करना है। इसके अंतर्गत स्थानीय शासन की पारदर्शिता व जवाबदेही, मनरेगा, आजीविका मिशन, सामाजिक अंकेक्षण, डिजिटल ट्रैकिंग एवं मॉनिटरिंग, वित्तीय प्रबंधन एवं पंचायत शासन, स?वनिधि से समृद्धि अभियान, वाटरशेड परियोजनाओं का क्रियान्वयन, शुद्ध पेयजल, स्वच्छ ग्राम तथा विभिन्न राष्ट्रीय योजनाओं का प्रभावी संचालन, पेसा ग्राम सभाओं की वर्तमान स्थिति एवं सफल क्रियान्वयन जैसे विषयों पर विस्तृत चर्चा और प्रशिक्षण दिया जाएगा।

2000 से अधिक जनप्रतिनिधि व अधिकारी होंगे शामिल

तीन दिन तक चलने वाली राज्य स्तरीय कार्यशाला में 2000 से अधिक लोग शामिल होंगे। इसमें जिला पंचायत अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, मुख्य कार्यापालन अधिकारी, जिला पचायत, जनपद पंचायत एवं ग्राम पंचायत के सरपंच एवं अन्य राज्य स्तरीय पदाधिकारी शामिल होंगे। राज्य स्तरीय कार्यशाला में जल गंगा संवर्धन अभियान में उत्कृष्ट कार्य वाले जिलों के साथ ही जिला एवं जनपद स्तर पर अधिकारियों-कर्मचारियों को सम्मानित किया जाएगा। जल गंगा संवर्धन अभियान में सर्वश्रेष्ठ कार्य करने वाले जिलों में खंडवा प्रथम, रायसेन द्वितीय एवं बालाघाट तीसरे नंबर रहा। खेत तालाब निर्माण में श्रेष्ठ कार्य वाले प्रथम जिले को दो श्रेणियों 'ए' और 'बी' में पुरस्कृत किया जाएगा। 'ए' श्रेणी में अनूपपुर जिला एवं 'बी' श्रेणी में बालाघाट जिला शामिल है।

बंगाल में बाबरी मस्जिद बनाने की शुरू है तैयारी

टीएमसी विधायक ने 6 दिसंबर को नींव रखने का किया ऐलान

कोलकाता (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल में बाबरी मस्जिद के निर्माण की तैयारी चल रही है। इसे लेकर तृणमूल कांग्रेस के विधायक हुमायूं कबीर के बयान पर राजनीतिक तूफान खड़ा हो गया है। टीएमसी एमएलए ने मुर्शिदाबाद में बाबरी मस्जिद की नींव 6 दिसंबर को रखने की घोषणा की। यह तारीख उत्तर प्रदेश के अयोध्या की बाबरी मस्जिद के विध्वंस की वर्षगांठ है। भरतपुर से विधायक ने पिछले साल इस मस्जिद का प्रस्ताव रखा था। हुमायूं कबीर ने एएनआई से बातचीत में शनिवार को कहा, हम 6 दिसंबर को मुर्शिदाबाद जिले के बेलडांगा में बाबरी मस्जिद की नींव रखेंगे। इसे पूरा होने में तीन साल लगेंगे। विभिन्न मुस्लिम नेता इस आयोजन में भाग लेंगे। भारतीय जनता पार्टी ने इसे लेकर तीखा हमला बोला है। इसने सत्तारूढ़ टीएमसी पर धर्म आधारित राजनीति और तुष्टिकरण करने का आरोप लगाया। बीजेपी नेता अग्निमित्रा पॉल ने कहा, कोई भी मंदिर या मस्जिद बना सकता है, लेकिन टीएमसी धर्म के नाम पर राजनीति करती है। 6 दिसंबर की तारीख चुनने के पीछे उनकी मंशा स्पष्ट है। सवाल यह है कि टीएमसी उनके साथ है।

एसआईआर के जरिए बीजेपी करेगी बड़ा 'खेला'

- अखिलेश यादव बोले-50-50 हजार वोट काटने की तैयारी में बीजेपी

लखनऊ (एजेंसी)। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने शनिवार को पार्टी कार्यालय में प्रेस कॉन्फ्रेंस कर भाजपा और चुनाव आयोग पर गंभीर आरोप लगाए। उन्होंने दावा किया कि जहां-जहां 2024 के लोकसभा चुनाव में इंडिया गठबंधन ने जीत हासिल की है, वहां भारतीय जनता पार्टी एसआईआर (विशेष मतदाता पुनरीक्षण) के माध्यम से 50-50 हजार वोट काटने की तैयारी में लगी है। अखिलेश ने इस कथित साजिश में चुनाव आयोग के कुछ अधिकारियों की मिलीभगत का भी आरोप लगाया है। अखिलेश यादव ने कहा कि पार्टी कार्यकर्ताओं और नेताओं से प्राप्त लगातार जानकारी बेहद चिंताजनक है। उन्होंने बताया कि कई क्षेत्रों में बीएलओ कार्यों में अपेक्षित सहयोग नहीं दे रहे हैं।

अब महाराष्ट्र में 13 साल की स्टूडेंट स्कूल बिल्डिंग से कूदी

- पिता का आरोप- स्कूल के टीचर उसे कर रहे थे प्रताड़ित

एमपी और दिल्ली में भी 2 बच्चों ने कर लिया है सुसाइड

जालना (एजेंसी)। महाराष्ट्र के जालना में शुक्रवार को एक 13 साल की स्कूल स्टूडेंट ने अपने ही स्कूल की बिल्डिंग की छत से कूदकर जान दे दी। घटना सुबह 7.30 से 8 बजे के बीच हुई। इसके बाद स्टूडेंट्स, स्टाफ और आस-पास मौजूद लोगों में दहशत फैल गई। मृतक छात्रा का नाम आरोही दीपक बिडलान है। वह 7वीं क्लास में पढ़ती थी। आरोही रोज की तरह सुबह स्कूल पहुंची थी लेकिन कुछ ही देर में स्कूल की तरफ से उसके पिता दीपक बिडलान को फोन पहुंचा कि उनकी बेटी ने तीसरी मंजिल से कूदकर आत्महत्या कर ली है। परिजन तुरंत स्कूल पहुंचे और घायल अवस्था में आरोही को पहले एक निजी अस्पताल में ले जाया गया। बाद में सरकारी हॉस्पिटल रेफर किया गया, जहां उसे मृत घोषित कर दिया गया। आरोही के पिता का आरोप है कि उनकी बेटी

टीचर्स की तरफ से किए जा रहे मानसिक उत्पीड़न से परेशान थी। वह ऐसा कदम उठा लेगी ऐसा कभी नहीं सोचा था।

पाकिस्तान टू इंडिया ड्रोन से हुई हथियारों की तस्करी

दिल्ली पुलिस ने किया इंटरनेशनल आर्म्स डील मॉड्यूल का भंडाफोड़

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली पुलिस की क्राइम ब्रांच के हाथ बेहद बड़ी कामयाबी लगी है। दरअसल उन्होंने पाकिस्तानी खुफिया एजेंसी आईएसआई समर्थित सोनू खत्री उर्फ राजेश कुमार गैंग से जुड़े हथियार तस्करी मॉड्यूल का भंडाफोड़ किया है। पुलिस ने गैंग के चार गुर्गों मनदीप सिंह (38), दलविंदर सिंह (34), रोहन (30) और अजय उर्फ मोनू (37) के पास से 10 उच्च श्रेणी की तुर्किये और चीन निर्मित पिस्टल और 92 कारतूस बरामद किए गए हैं। क्राइम ब्रांच के वरिष्ठ पुलिस अधिकारी ने बताया, 19 नवंबर को क्राइम ब्रांच की एंटी रॉबरी स्नैचिंग सेल टीम को दिल्ली-एनसीआर में आधुनिक हथियारों की सप्लाई करने वाले इंटरनेशनल हथियार तस्कर मॉड्यूल के बारे में सूचना मिली थी। सूचना थी

कि वह हथियार देने दिल्ली के रोहिणी में आएंगे। जिसके बाद डीसीपी क्राइम ब्रांच संजीव कुमार यादव के सुपरविजन में एसीपी संजय नागपाल, इंस्पेक्टर मान सिंह, सुंदर गौतम व अन्यों की टीम का गठन किया गया।

टीम ने रोहिणी सेक्टर-28 में ट्रैप लगाकर स्विफ्ट डिजायर कार को जांच के लिए रोका। कार की तलाशी ली गई तो उसके स्पीकर बॉक्स में एक बैग छिपा मिला। जिसमें 8 उच्च गुणवत्ता वाली विदेशी पिस्टल और 84 कारतूस थे। दोनों आरोपियों को फौरन गिरफ्तार कर लिया गया। आरोपी मनदीप और दलविंदर थे। दोनों जालंधर पंजाब के रहने वाले हैं।

कस्टमाइज्ड कमर्शियल ड्रोन का इस्तेमाल

आरोपियों से पूछताछ में यह भी खुलासा हुआ है कि पाकिस्तान बॉर्डर से देर रात के समय हथियार, गोला-बारूद और अन्य प्रतिबंधित सामान गिराने के लिए कस्टमाइज्ड कमर्शियल ड्रोन को वहां तैनात करते हैं। जिससे पकड़े न जा सकें। या ड्रोन आमतौर पर रडार से बचने के लिए कम ऊंचाई पर उड़ते हैं। यह छोटे लेकिन ज्यादा वजन वाले सामान को आसानी से एक जगह से दूसरी जगह ले जाते हैं। हथियारों की खेपों को पहले से चुने गए जीपीएस स्थानों पर गिराया जाता है, जहां से भारतीय पक्ष के रिसीवर, आमतौर पर स्थानीय अपराधी या हथियार तस्कर उन हथियारों को ले लेते हैं। संचालक एन्क्रिप्टेड संचार प्लेटफार्मों के माध्यम से ड्रॉप का समन्वय करते हैं और पैटर्न का पता लगाने से बचने के लिए अक्सर स्थान और समय बदलते रहते हैं। नेटवर्क स्थानीय सहयोगियों पर निर्भर करता है, जो पुलिस की आवाजाही पर नजर रखते हैं और जल्द से जल्द सामान उठाते हैं। गुमनामी बनाए रखने के लिए भुगतान हवाला चैनलों या प्रॉक्सी खातों के माध्यम से किया जाता है।

आतंकी डॉक्टर्स की अलग-अलग हैंडलर को थी रिपोर्टिंग

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली ब्लास्ट मामले में इंटेलीजेंस एजेंसियों ने एक बड़े अंतरराज्यीय आतंकी नेटवर्क, हैंडलर्स की चेन और कई को-ऑर्डिनेटेड हमलों की तैयारी का खुलासा किया है। न्यूज एजेंसी के मुताबिक इंटेलीजेंस सूत्रों ने बताया मॉड्यूल का हर आरोपी एक अलग हैंडलर को रिपोर्ट कर रहा था। मुजम्मिल का हैंडलर अलग था, जबकि ब्लास्ट करने वाला उमर दूसरे हैंडलर को रिपोर्ट कर रहा था। दो खास हैंडलर मंसूर और हाशिम एक सीनियर हैंडलर इब्राहिम के अंडर काम कर रहे थे, जो मॉड्यूल की पूरी एक्टिविटीज को सुपरवाइज कर रहा था। ये सभी हैंडलर लेयर्स में काम कर रहे थे। इधर, दिल्ली पुलिस स्पेशल सेल की टीम श्रीनगर में हैं। यह टीम जेके पुलिस की हिरासत में लिए गए डॉक्टरों और संदिग्धों से पूछताछ करने वाली है।

दिल्ली ब्लास्ट पर खुफिया एजेंसियों के खुलासे- आरोपी मुजम्मिल ने 6.5 लाख रुपए में एक एके-47 राइफल खरीदी थी, जो बाद में अदील के लॉकर से मिली थी।

पटवारी बोले-नाम काटने के दबाव में आत्महत्या कर रहे बीएलओ

पीसीसी चीफ ने कहा- घुसपैठिए हैं तो सरकार की असफलता, आयोग से समय बढ़ाने की मांग की

भोपाल (नप्र)। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष जीतू पटवारी ने कहा कि एमपी में एसआईआर प्रक्रिया के लिए बेहद कम समय दिया गया है, जिससे बीएलओ पर भारी दबाव बढ़ गया है। उनका आरोप है कि भाजपा नेताओं की ओर से बीएलओ पर मतदाता सूची से नाम काटने का दबाव बनाया जा रहा है। इसी तनाव के कारण कई बीएलओ की मौतें और हार्ट अटैक के मामले सामने आ रहे हैं।

बीएलओ पर नाम काटने का दबाव बढ़ा- पटवारी ने कहा कि पूरे मध्यप्रदेश में बीएलओ अत्यधिक दबाव में काम कर रहे हैं। उनसे जबरन मतदाता सूची से नाम हटाने को कहा जा रहा है। उन्होंने दावा किया कि बीएलओ खुद भी इस स्थिति से परेशान हैं क्योंकि उन्हें डर है कि अगर पात्र लोगों के नाम काटे गए तो भविष्य में उन्हीं पर कार्रवाई होगी। इस वजह से तनाव, हार्ट अटैक और मौत के मामले बढ़ रहे हैं।

एसआईआर प्रक्रिया के समय को बढ़ाने की मांग- उन्होंने कहा कि एसआईआर के लिए चुनाव आयोग ने बहुत कम समय दिया है, जबकि यह बेहद संवेदनशील और महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। कांग्रेस ने आयोग को लिखित में समय बढ़ाने की मांग की है। पटवारी ने सभी कांग्रेस नेताओं से अपने-अपने क्षेत्रों में एसआईआर प्रक्रिया पर कड़ी निगरानी रखने की अपील की। उन्होंने कहा कि वह खुद भी अलग-अलग इलाकों में जाकर स्थिति का जायजा ले रहे हैं और कांग्रेस किसी भी पात्र व्यक्ति का नाम कटने नहीं देगी।

घुसपैठिए हैं तो सरकार की असफलता

पटवारी ने कहा कि भाजपा नेताओं की ओर से मंचों से लगातार कहा जा रहा है कि घुसपैठियों के नाम काटे जाएं। इस पर उन्होंने सवाल उठाया कि जब पिछले 10 साल से केंद्र में भाजपा की सरकार है और प्रदेश में भी लंबे समय से सत्ता उन्हीं के पास रही है, तो फिर घुसपैठ कैसे हो गए? उन्होंने कहा कि यह खुद सरकार की सुरक्षा और प्रशासनिक व्यवस्था की विफलता को दिखाता है।

मंडीदीप में शर्मनाक घटना

शराबी ने सड़क पर सो रहे दिव्यांग पर यूरिन किया

रायसेन (नप्र)। मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल से लगे औद्योगिक क्षेत्र मंडीदीप में एक बेहद अमानवीय और शर्मनाक घटना सामने आई है। सोशल मीडिया पर वायरल हुए एक वीडियो में एक युवक को जमीन पर लेटे दिव्यांग व्यक्ति पर यूरिन करते हुए देखा जा सकता है। घटना कथित तौर पर एक पेट्रोल पंप परिसर में हुई।

वीडियो में साफ दिख रहा है कि आरोपी युवक शराब के नशे में धुत है और निशक्त व्यक्ति विरोध करने में असमर्थ है। वहां मौजूद किसी व्यक्ति ने इस घटना को मोबाइल में रिकॉर्ड कर सोशल मीडिया पर डाल दिया, जिसके बाद इलाके में भारी आक्रोश फैल गया।

पुलिस ने तीन संदिग्धों को हिरासत में लिया- वीडियो वायरल होते ही पुलिस हरकत में आई और तीन संदिग्धों को हिरासत में ले लिया गया। शुरुआती जांच में पता चला है कि तीनों आरोपी आपस में रिश्तेदार हैं और घटना से पहले शराब का सेवन किए हुए थे। एसडीओपी शीला सुराणा और थाना प्रभारी रंजीत सराठे ने कार्रवाई करते हुए तीनों को थाने बुलाकर पूछताछ शुरू कर दी है। पुलिस का कहना है कि वीडियो की सत्यता की पुष्टि, घटना का सटीक समय और अन्य तथ्यों की जांच की जा रही है। जांच पूरी होने के बाद आगे की कार्रवाई तय की जाएगी।

पहले भी सामने आ चुकी हैं ऐसी घटनाएं

मध्य प्रदेश में कमजोर और वंचित वर्ग के लोगों के साथ अमानवीय बर्ताव की घटनाएं पहले भी हो चुकी हैं। इससे पहले सीधी, भिंड और दमोह में भी ऐसी शर्मनाक हरकतें दर्ज की जा चुकी हैं।

महापौर, नपा अध्यक्ष चुनाव लड़ने तय होगी खर्च लिमिट

हर उम्मीदवार को बताना होगा अपने विरुद्ध दर्ज केस, प्रॉपर्टी, बिजनेस की डिटेल

भोपाल (नप्र)। महापौर, नगरपालिका अध्यक्ष के साथ पार्षद पद का चुनाव लड़ने वाले उम्मीदवारों को अब अपने खिलाफ दर्ज आपराधिक प्रकरण की पूरी जानकारी शपथ पत्र में देनी होगी। इतना ही नहीं, लोकसभा व विधानसभा चुनाव लड़ने वाले प्रत्याशियों की तरह प्रतिदिन का चुनावी खर्च का ब्यौरा राज्य निर्वाचन आयोग को देना होगा। अगर कोई उम्मीदवार शपथ पत्र में यह जानकारी नहीं देगा तो रिटर्निंग अधिकारी उसकी उम्मीदवारी निरस्त कर देंगे। राज्य निर्वाचन आयोग ने चुनाव लड़ने में होने वाले खर्च की लिमिट भी तय करने का फैसला किया है।

राज्य निर्वाचन आयोग ने सभी बदलाव का नोटिफिकेशन जारी कर दिया है। उम्मीदवारों के चुनाव खर्च की लिमिट नगरीय विकास एवं आवास विभाग के परामर्श से तय की जाएगी। प्रदेश के नगर निकायों में महापौर, नगर पालिका एवं नगर परिषद अध्यक्ष और पार्षद पद के चुनाव पांच साल में होते हैं। कुछ नगरपालिका और नगर परिषदों को छोड़ 90 फीसदी निकायों में यह चुनाव वर्ष 2027 में होंगे। इसके पहले 2022 में सुप्रीम कोर्ट के आदेश पर निकायों में चुनाव कराए गए थे। राज्य निर्वाचन आयोग के सचिव दीपक सिंह ने आदेश जारी किया है। जिसके तहत पार्षद पद के उपचुनाव भी नई व्यवस्था से होंगे।

कितने केस दर्ज, चल-अचल संपत्ति कितना बताना होगा- राज्य निर्वाचन आयोग द्वारा जारी निर्देश में कहा गया है कि चुनाव लड़ने वाले महापौर, नगरपालिका अध्यक्ष, पार्षद पद के उम्मीदवार को अपनी खुद, पत्नी या पति और तीन बच्चों की आमदनी और चुकाए जाने वाले टैक्स की जानकारी भी देना होगी। यह भी बताना होगा कि उसकी आय का साधन क्या है?

लोकसभा और विधानसभा चुनाव लड़ने वाले उम्मीदवार जिस तरह से सोशल मीडिया अकाउंट, ई-मेल आईडी, मोबाइल नंबर की डिटेल देते हैं, उसी तरह इन्हें भी जानकारी देना होगा। राज्य निर्वाचन आयोग को बताना होगा कि दो साल या अधिक समय की सजा वाले कितने आपराधिक मामले उन पर दर्ज हैं। इसकी थाने में दर्ज एफआईआर, थाना और जिला का ब्यौरा बताने के साथ न्यायालय में चल रहे केस और अन्य ब्यौरे देने होंगे।

इसके साथ ही संयुक्त स्वामित्व वाली चल और अचल संपत्ति की जानकारी भी शपथ पत्र में देना तय किया गया है। साथ ही उम्मीदवार द्वारा शेयर और कंपनियों में किए गए निवेश का ब्यौरा भी देना होगा। साथ ही कितना कर्ज लिया और दिया गया है तथा किन सरकारी एजेंसियों का कितना बकायादार उम्मीदवार है, इसकी जानकारी देने का प्रावधान भी इसमें किया गया है। राज्य निर्वाचन आयोग ने यह भी साफ किया है कि उम्मीदवार अपने घर पर लगे फ्लश शौचालय और जलवाहित शौचालय की भी लिखित जानकारी देंगे।

चुनाव में कितना खर्च होगा, इसकी लिमिट होगी तय

आयोग ने कहा है कि चुनाव में किस तरह से धन बल का उपयोग किया जाता है, राज्य निर्वाचन आयोग इससे वाकिफ है। इसलिए नगरीय विकास और आवास विभाग द्वारा राज्य निर्वाचन आयोग के साथ चर्चा कर चुनाव में होने वाले खर्च की अधिकतम सीमा भी तय की जाएगी।

आयोग के उम्मीदवारों द्वारा जो खर्च किया जाएगा और उसका भुगतान किया जाएगा उसकी पूरी डिटेल दी जाएगी। इसके साथ ही चुनाव खर्च का एक अलग रजिस्टर बनाया जाएगा। चुनाव खर्च की जानकारी तीस दिन के भीतर देना भी अनिवार्य किया गया है। इसमें यह व्यवस्था भी की गई है कि प्रत्याशी के चुनावी खर्च की जानकारी कोई भी व्यक्ति दस रुपए की फीस जमा करके ले सकेगा।

वीडियो वायरल करने की धमकी देकर नाबालिग से रेप

● भोपाल में रिश्ते के भाई ने किया दुष्कर्म, होटल रूम में पहली बार की थी ज्यादती

भोपाल (नप्र)। भोपाल के शाहपुरा इलाके में वीडियो वायरल करने की धमकी देकर एक किशोरी के साथ रेप करने का मामला सामने आया है। वारदात को पीड़िता के रिश्ते के भाई ने अंजाम दिया है। पूरा घटनाक्रम बीते तीन सालों से चल रहा था। पुलिस ने इस मामले में आरोपी युवक के खिलाफ केस दर्ज कर उसकी तलाश शुरू कर दी है।पुलिस के मुताबिक, 2022 में पीड़िता 17 वर्ष थी, लेकिन अब बालिग हो गई है और वह कॉलेज में सेकेंड ईयर की छात्रा है।

छात्रा ने पुलिस को बताया कि उस समय उसके रिश्ते का भाई उसे वीडियो वायरल करने की धमकी देकर होटल स्काई पैलेस में ले गया था।जहां उसने पहली बार उसके साथ रेप किया। इसके बाद से अलग-अलग स्थानों पर ले जाकर करीब तीन साल से उसकी अस्मत लूट रहा था। इस दौरान उसने शादी करने का झांसा भी दिया था, लेकिन बाद में वह मुकर गया।

हवलदार ने 250 के लिए युवक को पीटा

स्कूटर वर्कशॉप के कर्मचारी को सड़क पर गिराकर लातें मारीं, साथ में चार और पुलिसकर्मी थे

भोपाल (नप्र)। भोपाल में प्रधान आरक्षक (हवलदार) ने एक स्कूटर के सर्विस सेंटर के बाहर कर्मचारी के साथ जमकर मारपीट की। उसे जमीन पर गिराकर लातें मारीं। उसके साथ पांच और पुलिसकर्मी मौजूद थे। किसी ने भी युवक को बचाने का प्रयास नहीं किया। घटना शनिवार शाम की है। इस पूरे घटनाक्रम का वीडियो भी सामने आया है।

हवलदार स्कूटर में तत्काल काम कराने की बात पर अड़ा था। महज ढाई सौ रुपए का गाड़ी में काम होना था, लेकिन वह पैसा नहीं देना चाहता था। उसने कर्मचारियों से स्कूटर में इंश्योरेंस से काम कराने की बात कही थी।

ब्रेक लिवर का पैसा नहीं देना चाहते थे- नारायण नगर में सर्विस सेंटर में सचिन कुमार कुशवाह बतौर सर्विस एडवाइजर काम करते हैं। इसमें आज शाम को करीब सवा चार बजे वर्दी में एक पुलिसकर्मी पहुंचा, जिसने अपना परिचय बताया और स्वयं को बैरागढ़ थाने में पदस्थ होना बताया। साथ ही स्कूटर का ब्रेक लिवर तत्काल बदलकर देने की बात कही। सचिन ने उन्हें लिवर के पैसे चुकाने की बात कही, जिसकी कीमत ढाई सौ रुपए थी।

पुलिसकर्मी इस बात पर नाराज हो गया, उसने पैसा देने से मना कर दिया। इंश्योरेंस से काम कराने की बात कही। इस पर सचिन ने उसे इंश्योरेंस से काम कराने के लिए हामी भरी, लेकिन गाड़ी छोड़कर जाने और पूरी प्रक्रिया के बाद क्लेम सेटल होने में करीब एक सप्ताह लग जाने की जानकारी दी।

गुस्से में गालियां दीं, बाहर लाकर पीटा- प्रक्रिया सुनने के बाद पुलिसकर्मी भड़क गया। उसने गालियां देना शुरू कर दिया। जिसका सचिन ने विरोध किया, इस पर पुलिसकर्मी ने उसके साथ मारपीट की। बचाव करने आए साथी जीवन को भी पीटा। कॉल कर अन्य पुलिसकर्मियों को बुला लिया। जब कर्मचारियों ने विरोध किया तो सचिन को शोरूम के बाहर पुलिसकर्मी ने जमीन पर गिराकर पीटा।

युवक को जान से मारने की धमकी दी- पूरे घटनाक्रम के बाद पुलिसकर्मी ने सचिन को शिकायत न करने की धमकी दी, ऐसा करने की हालत में जान से मारने की भी धमकी दी है। शोरूम के कर्मचारियों ने मदद के लिए 112 नंबर पर काल भी किया था, लेकिन मौके पर पहुंची ।

बाइक-आयसर की आमने-सामने भिड़ंत

एक युवक की मौत, दो घायल, साइट देख कर लौट रहे थे बाइक सवार तीनों दोस्त

भोपाल (नप्र)। भोपाल के छोला मंदिर इलाके में शुक्रवार रात आयसर ने बाइक को सामने से जोरदार टक्कर मार दी। हादसे के समय बाइक पर तीन युवक सवार थे। घटना शुक्रवार रात करीब आठ बजे की है। इलाज के दौरान आज तड़के गंभीर घायल एक युवक की मौत हो गई। जबकि दो अन्य की हालत नाजुक है। पुलिस ने मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है। पुलिस के मुताबिक अमन लोधी पुत्र खनाराम लोधी (26) रायसेन जिले का रहने वाला था। शुक्रवार की रात करीब आठ बजे वह अपने चचेरे भाई पवन चंद्रशेखर और पवन के साथ बाइक पर सवार होकर भोपाल से रायसेन जा रहा था।

लालकोठी रोड चौपड़ा पर हुआ हादसा- रास्ते में लालकोठी रोड पर उनकी बाइक को सामने से आयसर ने टक्कर मार दी। घटना के बाद आरोपी चालक मौके से फरार हो गया। हादसे में अमन लोधी के सिर में गंभीर चोट आई थी। इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई। शनिवार की दोपहर को बॉडी का पीएम कराया गया। पोस्टमॉर्टम के बाद शव परिजनों को सौंप दिया गया है।

डेढ़ साल की बेटी का पिता था अमन- अमन की शादी तीन साल पहले हुई थी। उसकी डेढ़ साल की एक बेटी है। शुक्रवार की सुबह गांव से भोपाल में एक साइट को देखने के लिए आया था। वह किसानी के साथ ही सैंटरिंग ठेकेदारी का काम भी करता था। पुलिस आरोपी चालक की पहचान के लिए घटना स्थल के आस पास लगे सीसीटीवी कैमरों के फुटेज खंगाल रही है।

वैद्य बोले- देशभक्ति के नाम से गलत नैरेटिव चल रहा

सारे जहां से अच्छा गीत में गुलिस्तां पर कहा- बगीचे को आग लगेगी तो बुलबुल पहले उड़ जाएगी

भोपाल (नप्र)। कैसी गलत बातें होती हैं आश्चर्य होता है कुछ बातें हम मान लेते हैं कि यही सही है। एक बड़ा देशभक्ति गीत है खासकर 15 अगस्त को गाया जाता है। हमारे सिपाही उस पर नाचते हैं। सारे जहां से अच्छा, हिंदोस्तां हमारा, हम बुलबुले हैं इसके ये गुलिस्तां हमारा।

मैं कई लोगों से पूछता हूं कि इसमें दूसरे वाक्य का अर्थ क्या है? सारे जहां से अच्छा हिंदोस्तां समझ में आता है लेकिन गुलिस्तां मतलब बगीचा है ये भी समझ गया। कि हम बुलबुल हैं जो पक्षी हैं वे वहां पर गुल खाने पराग खाने आते हैं, अगर यहां पराग नहीं मिला तो जहां गुल मिलेगा वहां जाएंगे। हमारा संबंध क्या है तो हमारा पढ़ा लिखा वर्ग ज्यादा बाहर क्यों जा रहा है? वहां गुल ज्यादा मिल रहा है? वहां देशभक्ति नहीं क्या? जब मैं पूछता हूं कि बुलबुल नहीं तो हम कौन हैं? तो कई लोग कहते हैं हम माली, कई कहते हैं हम रक्षक हैं। बाद में कहते हैं हम मालिक हैं। एक उत्तर आता है हम इसके पौधे हैं हमसे बगीचा बना है। जिस किस्म का प्लांट है तो उत्तम फूल लगे, उत्तम फल लगे। बगीचे को आग लगेगी तो सबसे पहले बुलबुल उड़ जाएगी, लेकिन पौधे यहीं रहने

वाले हैं। कितना गलत नैरेटिव हमारी देश भक्ति के नाम से चल रहा है।

प्रसिद्ध देशभक्ति गीत को लेकर ये बातें राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पूर्व सह सरकार्यवाह मनमोहन वैद्य ने कही। उधर, कांग्रेस प्रवक्ता अभिनव बरोलिया ने कहा ये बीजेपी एवं आरएसएस के लोग हर जगह नफरत ढूंढते हैं।

संविदाकर्मियों ने दिया धरना, किया प्रदर्शन

नियमितिकरण सहित 9 मांगों को लेकर प्रदेशभर से जुटे, बोले-परमानेंट करो

भोपाल (नप्र)। भोपाल में शनिवार को संविदा कर्मचारियों का बड़ा प्रदर्शन हुआ। नियमितिकरण समेत 9 मांगों को लेकर वे सड़क पर उतरे। लिंक रोड नंबर-2 स्थित अंबेडकर पार्क में धरना दिया। उन्होंने कहा कि धरने के बावजूद यदि सरकार मांगें नहीं मानती है तो आने वाले दिनों में राजधानी में आर-पार की लड़ाई लड़ेंगे। मप्र संविदा संयुक्त संघर्ष मंच के बैनर तले प्रदर्शन हुआ। 9 सूत्रीय मांगों में नियमितिकरण, वेतन विसंगति दूर करने, समान काम-समान वेतन, पेंशन सुविधा और सेवा सुरक्षा जैसे मुद्दे भी शामिल हैं। मंच के प्रदेश संयोजक दिनेश सिंह तोमर ने कहा, लंबे समय से मांगें उठा रहे हैं, लेकिन सरकार ने अब तक कोई ठोस निर्णय नहीं लिया। इस वजह से मजबूरन कर्मचारियों को आंदोलन का रास्ता अपनाना पड़ रहा है।

प्रदेश में ढाई लाख संविदा कर्मचारी- मंच पर प्रदेश संयोजक तोमर, महामंत्री डीके उपाध्याय समेत सजल भार्गव, भारतीय मजदूर संघ के प्रदेश महामंत्री कुलदीप सिंह, गुलाब सिंह अहिरवार, अमर सिंह जाटव, अभय वाजपेयी, वीरेंद्र सिंह धाकड़ आदि भी मौजूद थे। अतिथियों ने मांगों को लेकर सरकार को आड़े हाथों लिया। कहा कि प्रदेश में

करीब ढाई लाख संविदाकर्मी हैं, जो नियमित होने की मांग कर रहे हैं। सरकार को जल्दी ही मांगें पूरी करना चाहिए।

महंगाई भत्ता भी नहीं मिल रहा- प्रदेश अध्यक्ष तोमर ने कहा कि वर्ष 2023 की संविदा नीति का अक्षरशः पालन नहीं हुआ है। इसके विरोध में संविदा कर्मचारी लामबंद है। संविदा कर्मचारियों को सरकार महंगाई भत्ता भी नहीं दे रही है। मंहगाई के नाम पर उपभोक्ता सूचकांक ही दिया जा रहा है। प्रदेश सह संयोजक भार्गव ने कहा कि यह लड़ाई हमारे हक, सम्मान व सुरक्षा की है। जिसे हम हर स्तर पर शासन के समक्ष रख रहे हैं।

इन मांगों को लेकर प्रदर्शन- उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (सीपीआई इंडेक्स के स्थान पर नियमित कर्मचारियों की तरह घोषणा दिनांक से महंगाई भत्ता) डीए प्रदान किया जाए। नियमित कर्मचारी के समान अर्जित अवकाश एवं मेडिकल अवकाश का प्रावधान हो। अवकाश वर्ष के अंत में व्यापगत न हों।

संविदा नीति 2023 की सभी कंडिकाओं का अक्षरशः पालन हो

सीधी भर्ती में आरक्षित 50 प्रतिशत पदों में अनुभव के आधार संविलियन/नियमित किया जाए। किसी कारणवश कोई योजना समाप्त की जाती है तो उसके अंतर्गत कार्यरत समस्त संविदा कर्मचारियों को अन्य योजना में समकक्ष पर नियुक्ति देने का प्रावधान किया जाए।

विसंगति पूर्ण समकक्षता निर्धारण के विरुद्ध प्राप्त अभ्यावेदनों का एक माह के अंदर निराकरण किया किया जाए।

कृषि विभाग की सबमिशन ऑन एग्रीकल्चर एक्सटेंशन (जात्मा योजना) के संविदा कर्मचारियों की नियमित पद पर समकक्षता, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग अंतर्गत जिला ई-गवर्नेंस सोसाइटी में पदस्थ, मनरेगा में पदस्थ सीनियर डेटा मैनेजर छटवीं स्थिति में एवं सामाजिक न्याय विभाग अंतर्गत जिला दिव्यांग पुनर्वास केंद्रों में पदस्थ कर्मचारियों के लिए अब तक संविदा नीति लागू नहीं हुई है। इसे तत्काल लागू किया जाए।

डिप्टी सीएम बोले- रीवा में लगेगा बालीवुड सितारों का मेला

राज कपूर जयंती पर 'रेवा फिल्म्स फेस्टो' से खुलेगा बॉलीवुड शूटिंग का रास्ता

रीवा (नप्र)। रीवा और विंध्य की धरती जल्द ही बॉलीवुड की नई पसंदीदा शूटिंग लोकेशन बन सकती है। द ग्रेट शोमैन राज कपूर की 101वीं जयंती पर 12 से 14 दिसंबर तक आयोजित होने वाला 'रेवा फिल्म्स फेस्टो' इसी दिशा में बड़ा और निर्णायक कदम माना जा रहा है। इस फेस्टो को आकार देने और रीवा को फिल्म इंडस्ट्री के लिए आकर्षण केंद्र बनाने में डिप्टी सीएम राजेंद्र शुक्ल के प्रयास महत्वपूर्ण रहे हैं। जिसका बीड़ा अब डेज सोसाइटी ने उठाया है। राजेंद्र शुक्ल लंबे समय से रीवा में पर्यटन, फिल्म शूटिंग और सांस्कृतिक गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए काम कर रहे हैं। उनकी पहल पर रीवा में कई लोकेशंस को विकसित किया गया है और दिल्ली-रीवा हवाई सेवा शुरू होकर फिल्ममेकर्स के लिए आसान पहुंच संभव हुई है। डिप्टी सीएम मानते हैं कि रीवा के वॉटरफॉल, पहाड़, किले, प्राकृतिक घाटियां और जंगल फिल्म शूटिंग के लिए किसी भी बड़े शहर से कम नहीं हैं। इसी संभावनाओं को राष्ट्रीय मंच देने के लिए रेवा फिल्म्स फेस्टो को विशेष रूप से डिज़ाइन किया गया है। फेस्टो में बॉलीवुड और टीवी जगत के कई बड़े चेहरे–सोनू सूद, पूजा चोपड़ा, विंध्या तिवारी, एलिना टुटेजा, अर्जुन द्विवेदी, मान्या सिंह, और सार्थक चौधरी–रीवा पहुंच रहे हैं।आयोजकों का कहना है कि बड़े कलाकार यहां आएंगे तो वे प्राकृतिक शूटिंग लोकेशंस का निरीक्षण भी करेंगे, जिससे भविष्य में फिल्मों की शूटिंग के लिए रीवा को गंभीरता से देखा जाएगा। फेस्टो की थीम 'द ग्रेट शोमैन राज कपूर एंड द गोल्डन एज ऑफ इंडियन सिनेमा' रखी गई है।

कहानी

पंकज त्रिवेदी

फोड़ा

आँगन की चारों और दीवार। लोखंड का दरवाजा। हांक दरवाजा खुलने की आवाज़ सुनाई दी। मनोज बिस्तर पर पड़ा जाग रहा था। जाड़े की रात बहुत घनी थी। मनोज ने घड़ी में देखा। अभी तो रात के दस बजे थे। इस वक्त कौन होगा? ऐसा सोचकर मनोज बिस्तर से उठा गया। ठीक उसी वक्त बरामदे के दरवाजे पर धीरे से किसीने दस्तक दी। मनोज ने बत्ती जलाई। दरवाजा खोला। सामने खड़ी स्त्री का चेहरा ठीक से पहचान न पाया। घर के सामने रहा खुला मैदान अंधकार ओढ़कर सोया हुआ था। दूर-दूर खेत ही थे। वातावरण में नमीं के साथ जाड़े की फसल की सुगंध फ़ैली हुई थी। झींगुर की आवाज़ के अलावा सबकुछ शांत था। मनोज को गाँव के बाहर ग्राम पंचायत के पास एक सरकारी आवास मिला था।

उस स्त्रीने दो कदम आगे बढकर बरामदे में पाँव रखा।

अरे जीवली तुम...? मनोज ने पूछा।

उसकी आँखों में आँसूं थे। वह दरवाजे के पास ही बैठ गई।

जीवी, तुम इस वक्त क्यूँ आई? क्या हुआ? प्रत्युत्तर देने के बदले जीवली को रोती हुई देख मनोज असमंजस में पड़ गया। कुछ बोलो तो सही। क्यूँ रो रही हो? उनकी आवाज़ में थोड़ी सख्ती आ गई।

जीवीने कुछ बोले बिना ही दरवाजे को बंद कर दिया। मनोज को आश्चर्य हुआ और मन में कहीं डर भी था। उसे कडाके के की ठण्ड में भी पसीना आने लगा। वह पिछले दो वर्षों से इस गाँव में था। पूरा गाँव उसे सम्मान की नज़रों से देखता था। पढ़े-लिखे और संस्कारी इंसान की पहचान थी। ग्रामसेवक के पद पर उज्ज्वल छवि रही है। ऐसे समय जीवली उसके घर में आकर दरवाजा बंद कर दे तो पसीना निकल आएगा न! जीवी अब भी रो रही थी।

मनोज ने हिम्मत करके धीरे से पूछा; जीवी, तुम क्यूँ रो रही हो? कुछ बात करोगी तो समझ आएगा न? और यह दरवाजा तो खोल! इतना कहकर वह दरवाजे की ओर मुडा।

उस वक्त जीवी ने उनके पाँव को पकड़ लिया। मनोज रुक गया। और फिर वहीं घुटनों के बल बैठ गया और बोला; जीवी, अभी कितने बजे है उसका भान है तुम्हें? बाहर अँधेरा और यहाँ मैं अकेला हूँ। अगर किसीको पता चला न तो... जो भी काम हो जल्दी से बोल दो।

जीवी ने धीरे से चुनरी उतार दी और मनोज दो कदम पीछे चला गया। उसे लगा कि यह जीवली क्या करने लगी है? उसे धक्का मारकर बाहर निकालने की इच्छा हो गई। मगर वो ऐसा न कर पाया। जीवी ने अंगिया (कंचुकी) की डोरी छोड़ दी। मनोज ने आँखें बंद कर दी।

शाब, आपके पास मरहम वरहम है? मैं यहाँ जल गई हूँ!

मनोज ने धीरे से आँखें खोली। जीवी के बाईं करवट पर बड़ा सा फोड़ा हो गया था। वो सच में जल गई थी। मनोज की आँखों के सामने अँधेरा छा गया।

उस दिन पहली ही बार जीवी पानी भरने आई थी। मनोज को यह सरकारी आवास मिले एक सप्ताह भी नहीं हुआ था। गाँव में ज्यादा पहचान नहीं थी। दोपहर का समय था। खाना खाकर थोडा आराम करके लोकसंपर्क के लिए निकलने को मनोज ने सोचा था। उसके आँगन में ही रहे कूएँ में से जीवी ने पानी सींचा। घड़े से पाणी बड़ी मटकी में डालने नीचे झुकी उसी वक्त मनोज का ध्यान उस तरफ गया। एक पल तो वो स्थिर हो गया। इतनी उम्र में उसने कई स्त्रीयाँ देखी थीं। मगर आज पहली बार उसे लगा कि चिंथडों में लिपटा हुआ रतन (रत्न) भी होता है।

जीवी ने दूसरा घडा सींचा तब मनोज ने फिर से उस दिशा में जानबूझकर देखा। उसमें उसका पौरुषत्व का कारण था। जीवी ने तिरछी नज़र से मनोज की ओर देख लिया था। उसने जल्दी से चुनरी ठीक से ओढ़ ली और मनोज की ओर मादक स्मित फेंक दिया। फिर धीरे से बोली; शा'ब, लगन कब करना है?

और फिर मनोज के प्रत्युत्तर का इंतज़ार किए बिना जल्दी से चली गई।

शा'ब, कौन सी सोच में पड़ गए? मरहम हो तो जल्दी से लगा दो न! कुछ देर में वो आएँगे तो फिर से डख्खो...

मनोज ने जल्दी से अंदर के रूम में जाकर बर्नोल लाकर फोड़े पर हलके हाथों से मरहम लगाना शुरू किया।

शा'ब, जल्दी लगा दो न, बहुत जलन हो रही है... जीवी कराहने लगी। मनोज का हाथ काँपने लगा। जलन के कारण बड़ा सा फोड़ा हो गया था। उसकी नज़रों के सामने कुँए पर पानी भरती जीवी का ही दृश्य था। जिसके लिए वह बारबार तरसता था। उसे लगा वो ठीक से मरहम लगा नहीं पाएगा। उस वक्त जीवी ने खुद कलेजे को मजबूत करके मनोज का हाथ पकड़कर उँगली पर लगा मरहम फोड़े पर लगा दिया। मनोज तो भोंचक्का सा देखता ही रह गया। जीवी की आँखों में आँसूं थे फिर भी मनोज के सामने स्मित करके देखा। वैसे भी जो पीड़ा सह शके वोही मुस्कुरा सकते हैं! मनोज कुछ समझ न पाया।

तुम यहाँ कैसे जल गई?

इन्होने दाग दिया। अंगिया की डोरी बांधते जीवी ने कहा।

क्यूँ? ऐसा भी क्या हो गया था...

वो दारू पीकर आया और बोले मुझे जल्दी खाना दे। खाते-खाते मुझे बोले; कल तुम्हें अर्जुन के खेत खाना देने जाना है, तैयार होकर रहना।

मैंने पूछा; क्यूँ?

तो मेरे मुए ने कहा कि वो मुझे हमेशा शराब पिलाता है इसलिए तुम्हें उसे राजी करना होगा, समझ गई?

इतना घटिया आदमी है? मनोज ने पूछा।

आप सुनो तो सही। मैंने उसे कहा कि कोइ कामधंधा करो तो गुलामी करनी न पड़े। अर्जुनिया

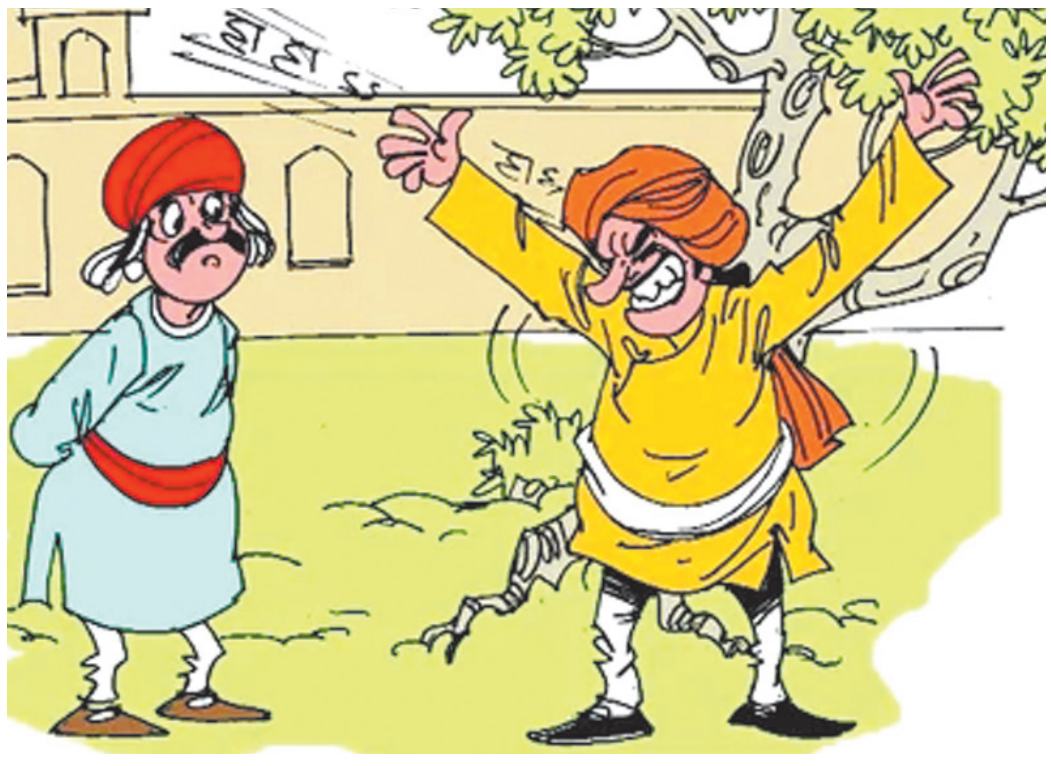

जान गया है कि तुझे दारू के बगैर चलेगा नहीं। इसलिए मुझ पर नज़र डाली। तुम भी कितना हलकट हो कि हाँ कहकर आया।÷ इतना बोलते जीवी ने आँसूं पोंछे।

तो इसमें तुमने क्या गलत कहा? मनोज ने कहा।

बस उनका तौर ही ऐसा है! मैंने झट से कह दिया तो उसने चूल्हे में से जलता हुआ लकड़ा उठा लिया। मैं अपना हाथ आगे बढाऊं उससे पहले तो बाईं ओर करवट पे दे मारा... फिर कहता कि तेरे रूप का बहुत घमंड है न तुझे?

मगर इसे इसे इंसान कहें या...? मनोज बोला; बिलकुल ज़ाहिल आदमी है!

ऐसा नहीं कहते, कोई बात नहीं। वो तो जब भी दारू ढींचकर आता है तब मारता है। मगर आज सुलगती लकड़ी हाथ आ गई।

जीवी बाहर निकली। उसने आसपास देखा। घना अँधेरा था। मनोज ने धीरे से कहा; तुम अकेली जा पाओगी कि छोड़ने आऊँ?

नहीं नहीं, मैं चली जाऊँगी।

वो ज़ाहिल तुम्हें देख लेगा तो...? मनोज को चिंता होने लगी।

वो तो खर्राटे मारता होगा। दारू पीकर आने के बाद कुछ देर हँगामा कर दे। एकबार खटिया पकड़ ले फिर खेल खल्लास। जीवी ने कहा।

कुछ दिन और मरहम लगाना होगा, जीवली समझ रही हो न! मनोज ने कहा।

शा'ब, मूए ने ऐसी जगह दाग लगाया है कि दाक्तर को दिखाने में लाज आती है! जीवी ने कहा।

मेरे पास आते शर्म न आई? मनोज के चेहरे पर शरारती स्मित उभर आया।

शरम लगे मगर क्या करूँ मैं? उस दिन मैं पानी भर रही थी न, तब आप मेरे सामने कैसे टकटकी लगाकर देखते थे? जीवी के शब्द सुनते ही मनोज झेंप गया।

जीवी...?

कल आऊँगी... कहते हुए वह बाहर निकल गई।

अब तो जीवा का इंतजार करना मनोज को अच्छा लगता था। आज वह देर से आई। मनोज के लिए इंतजार की एकएक पल एक युग जितनी लम्बी लगने लगी थी। जीवी आ गई। मनोज का हाथ जीवी के फोड़े पर फिरता रहा।

शा'ब, एक बात कहूँ?

हाँ, बोल... मनोज ने कहा।

आप मुझे मरहम लगाते हैं तो कुछ होता नहीं है?

जीवी, तुम तो शादीशुदा हो। ये तो महरम लगाकर दर्द मिटाने का काम है। तेरा घरवाला, वो ज़ाहिल है न? मनोज बोल रहा था उससे विपरीत उसके मन में उथलपुथल हो रही थी।

शा'ब, उस मुए को तो दारू ढींचकर मारना ही आता है। घर की औरत पर हाथ उठाए उनमें क्या होगा? जीवी की बात से मनोज को आश्चर्य हुआ।

क्यूँ?

उसने दाग देकर मुझे फोड़ा दे दिया। छोडो न उस उच्छेदिया का नाम! फिर धीरे से बोली; मगर आप कहें तो मैं रोज आती रहूँगी... और फिर आँखें नचाई।

ऐसा भी क्या है कि तुम उनसे इतनी नाराज हो? मनोज ने पूछा।

शा'ब, उसकी बात ही जाने दो न! उस दिन मुझे कहता था न कि अर्जुनिया के साथ रात बिताने जा। खरुं कहूँ तो वो मरद में ही नहीं है। इतना बोलते ही जीवी लाल लाल हो गई।

क्या बात करती हो? मनोज बोला।

शा'ब, आपको कुछ नहीं होता?

जीवी, तुम्हारा रूप ही ऐसा है कि कोई भी आदमी भान भूले। जल्दी से अपने घर जा। मनोज को मानो अपनेआप अब भरोसा नहीं रहा था।

आपने तो कभी ऐसा दिखने ही नहीं दिया...कहते हुए जीवी ने मनोज के गले में हाथ डाल दिए। जीवी के आक्रमण के सामने मनोज पानी पानी हो गया। वो जमीन पर ही चारों खाने चित हो गया और कुछ देर तक जीवी मस्ती करती रही।

और फिर मनोज ने कहा; तुम्हारा घरवाला मेरे पास आया था।

क्या...? जीवी के पेट में डर की बिजली फ़ैल गई।

हाँ, कल मेरे पास आकर पैसे माँगे और कहकर गया कि शा'ब जीवली आपके पास आती है, वो मैं जानता हूँ। मुझे कोई फरक नहीं पड़ता मगर रोज कुछ चिल्लर का जोग करना पड़ेगा। हमदोनों की गाडी चलेगी। मनोज ने बात कही तो जीवी के मन पर कोई असर न हुआ।

उसने पूछा; जीवी, तुम कुछ बोली नहीं?

मुझे पता है। मैंने ही उसे कहा था, उस अर्जुन के पास जाने से तो... इतना बोलते जीवी के मुँह पर मनोज ने हाथ रख दिया और बाहों में जकड ली।

ठीक उसी दिन फोड़े में से लवाद बाहर निकलने लगा था और जीवी का दर्द भी कम होने लगा था। आज वो बड़ी प्रसन्न थी।

कविता

कल रहे हैं लोग

कमलेश कुमार दीवान

धीरे धीरे ही जल रहे हैं लोग
मोम से यूं ही गल रहे हैं लोग!

हौसलें हैं तो जुस्तजू भी बहुत
आरजू में ही चल रहें है लोग!

याद से दिल में हलचल है बहुत
क्यों अपने आप छल रहे हैं लोग!

जिंदगी से सभी मुखातिब हैं
मुश्किलों से ही ढल रहे हैं लोग!

नया युग है नया ही जीवन है
सवालों के ही हल रहे हैं लोग!

आज में कौन है 'दीवान' यहां
अपना ही एक कल रहे हैं लोग

डिन चेक बैंड का खूबसूरत पड़ाव, 'हसीन ख्वाब' रिलीज

नई दिल्ली। डिन चेक बैंड ने 19 नवम्बर 2025 को अपना नया गीत हसीन ख़्वाब प्रस्तुत किया। एक ऐसा गीत जिसमें आत्मीय संगीत, जैज़ की महक, गहरी काव्यात्मकता और रंगों से भरी दृश्य कला एक-दूसरे में घुल-मिल जाती हैं। यह गीत बैंड की रचनात्मक यात्रा में एक और खूबसूरत पड़ाव है ढ्ढ जिन चेक बैंड अमेरिका में रह कर वर्षों से भारतीय संगीत की परचम फैला रहे हैं।

इस गीत की रचयिता, पॉपी चरनालिया लखनऊ से हैं ढ्ढ वह दृश्य कलाकार, कवयित्री और गीतकार हैं।वह अमेरिका में रहते हुए भी हिंदी भाषा, कविता और कला की साधना को निरंतर आगे बढ़ा रही हैं। इस गीत में केवल उनके शब्दों की ही अभिव्यक्ति नहीं है –बल्कि संगीत वीडियो में उनकी वाइब्रेंट पेंटिंग्स को परिधानों के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जिन्हें सभी संगीतकार पहने हैं। यह अनोखा विचार वीडियो को एक जीवंत गैलरी में बदल देता है। मीनाक्षी कुलश्रेष्ठ द्वारा रचित यह गीत दो गायिकाओं की सुमधुर आवाज़ों से सजता है–मीनाक्षी की अनुभवी और अभिव्यक्तिपूर्ण स्वर रचना एवं गायकी के साथ उभरती कलाकार प्रियांशी की आधुनिकता , बोल्ड आवाज़ हसीन ख़्वाब को एक नया आयाम देती है। केवल अपने स्वर ही नहीं–प्रियांशी गीत की सह-गीतकार भी हैं, और उनके शब्दों में भावनाओं की कोमलता तथा युवापन की सहज सच्चाई झलकती है।

पुस्तक समीक्षा

नृपेन्द्र अभिषेक नृप

समीक्षक

समय के आईने में: जीवन-यात्रा का सजीव प्रतिबिंब

इसी क्रम में मानसिक दबाव में मासूम पढ़ते हुए पाठक के सामने शिक्षा की प्रतिस्पर्धा में घुटती हुई बच्चों की दुनिया खुल जाती है। कोटा जैसे शिक्षा नगरों में आत्महत्या की भयावह घटनाएँ आज किसी एक परिवार की नहीं, बल्कि पूरे समाज की त्रासदी बन चुकी हैं। संध्या अग्रवाल इस पीड़ा को शब्द देती हैं, और साथ ही यह भी बताती हैं कि दौड़ में आगे निकलने की होड़ कभी-कभी जीवन को ही पीछे धकेल देती है। चक्कर कोचिंग का और मत छीनो बचपन जैसे आलेख शिक्षा-प्रणाली के उन पहलुओं को उजागर करते हैं जिन्हें हम अक्सर अनदेखा कर देते हैं। कोचिंग संस्थानों की चमक-दमक, माता-पिता की अत्यधिक अपेक्षाएँ, और समाज द्वारा बच्चों पर थोपा गया नंबर वन बनने का दबाव किस तरह मासूम पढ़ते हुए पाठक के सामने शिक्षा की प्रतिस्पर्धा में घुटती हुई बच्चों की दुनिया खुल जाती है। कोटा जैसे शिक्षा नगरों में आत्महत्या की भयावह घटनाएँ आज किसी एक परिवार की नहीं, बल्कि पूरे समाज की त्रासदी बन चुकी हैं। संध्या अग्रवाल इस पीड़ा को शब्द देती हैं, और साथ ही यह भी बताती हैं कि दौड़ में आगे निकलने की होड़ कभी-कभी जीवन को ही पीछे धकेल देती है। चक्कर कोचिंग का और मत छीनो बचपन जैसे आलेख शिक्षा-प्रणाली के उन पहलुओं को उजागर करते हैं जिन्हें हम अक्सर अनदेखा कर देते हैं। कोचिंग संस्थानों की चमक-दमक, माता-पिता की अत्यधिक अपेक्षाएँ, और समाज द्वारा बच्चों पर थोपा गया नंबर वन बनने का दबाव किस तरह मासूम मन को चूर-चूर कर देता है, लेखिका इसे अत्यंत सजीव रूप से प्रस्तुत करती हैं। वे यह स्वीकार करती हैं कि हर बच्चा अद्वितीय है और उसकी सफलता किसी रिकॉर्ड या पुरस्कार से नहीं, उसकी सहजता और आनंद-भरी मुस्कान से आँकी जानी चाहिए।

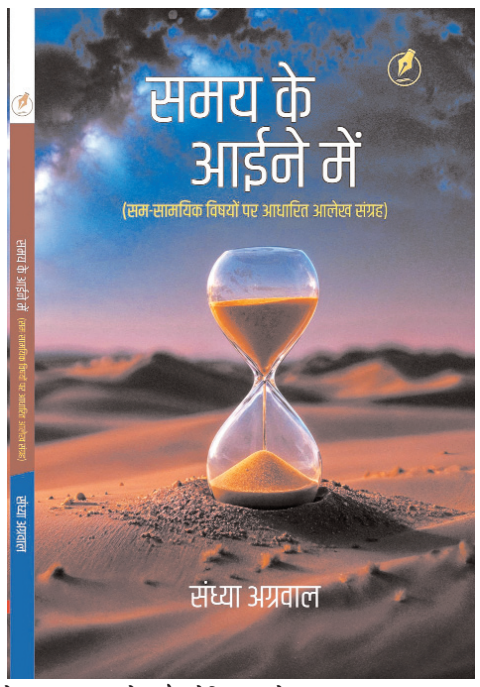

साहित्य तभी सार्थक माना जाता है जब वह मनुष्य के भीतर छिपी संवेदनाओं को झकझोरकर उसे अपने समाज, अपने परिवेश, अपने दायित्व और अपने अस्तित्व की ओर नए सिरे से देखने की प्रेरणा दे। संध्या अग्रवाल का आलेख-संग्रह 'समय के आईने में' इसी कसौटी पर खरा उतरने वाली अद्भुत कृति है। यह पुस्तक न केवल हमारे बदलते समय का जीवंत दर्पण है, बल्कि वह संवेदनशील आवाज़ है जो अक्सर तेज़ रफ़्तार जीवन के शोर में दब जाती है। संध्या अग्रवाल अपने सहज, सरल और पारदर्शी शब्दों के माध्यम से समाज के विविध पहलुओं को इस तरह प्रस्तुत करती हैं कि पाठक को महसूस होता है जैसे वह अपने ही घर-आँगन में घटित घटनाओं को पढ़ रहा हो।

पुस्तक की शुरुआत बच्चों से जुड़े आलेखों से होती है। आज का डिजिटल युग बच्चों के भोले-भाले जीवन पर जिस प्रकार प्रभाव डाल रहा है, उसे 'बच्चों में मोबाइल की बढ़ती लत' जैसा लेख बड़ा ही मार्मिक ढंग से उजागर करता है। लेखिका यहाँ तकनीक को दोषी ठहराने की बजाय अभिभावकों की अदूरदर्शिता और मार्गदर्शन की कमी को रेखांकित करती हैं। यह संदेश अत्यंत महत्वपूर्ण है कि समस्या उपकरणों में नहीं, हमारे उपयोग के तरीके में होती है।

इसी क्रम में 'मानसिक दबाव में मासूम' पढ़ते हुए पाठक के सामने शिक्षा की प्रतिस्पर्धा में घुटती हुई बच्चों की दुनिया खुल जाती है। कोटा जैसे शिक्षा नगरों में आत्महत्या की भयावह घटनाएँ आज किसी एक परिवार की नहीं, बल्कि पूरे समाज की त्रासदी बन चुकी हैं। संध्या अग्रवाल इस पीड़ा को शब्द देती हैं, और साथ ही यह भी बताती हैं कि दौड़ में आगे निकलने की होड़ कभी-कभी जीवन को ही पीछे धकेल देती है। 'चक्कर कोचिंग का' और 'मत छीनो बचपन' जैसे आलेख शिक्षा-प्रणाली के उन पहलुओं को उजागर करते हैं जिन्हें हम अक्सर अनदेखा कर देते हैं। कोचिंग संस्थानों की चमक-दमक, माता-पिता की अत्यधिक अपेक्षाएँ, और समाज द्वारा बच्चों पर थोपा गया 'नंबर वन' बनने का दबाव किस तरह सफलता किसी रिकॉर्ड या पुरस्कार से नहीं, उसकी सहजता और आनंद-भरी मुस्कान से आँकी जानी चाहिए।

भाषा की दृष्टि से यह पुस्तक अत्यंत सरल, प्रवाहमयी और पारदर्शी है। संध्या अग्रवाल की लेखनी में जटिल शब्दों का भारीपन नहीं, बल्कि सहजता और आत्मीयता की मिठास है। वे कठिनतम प्रश्नों को भी ऐसे सरल शब्दों में कहती हैं कि पाठक बिना किसी मानसिक बोझ के उनके विचारों की गहराई को महसूस कर सके। उनकी भाषा में एक माँ की ममता, एक शिक्षिका की सजगता और एक संवेदनशील नागरिक की विवेकशीलता- तीनों का अद्भुत मेल है। संग्रह के हर आलेख में एक बात स्पष्ट रूप से महसूस होती है, लेखिका केवल समस्याएँ नहीं परोसतीं, बल्कि समाधान की राह भी सुझाती हैं। वे आलोचना में भी संवेदना का स्पर्श जोड़ती हैं और दिशा-निर्देशन में भी स्वतंत्रता को महत्व देती हैं। यही संतुलन उनकी रचनाओं को केवल साहित्यिक कृतियाँ नहीं रहने देता, बल्कि उन्हें जीवन-उपयोगी मार्गदर्शन बना देता है।

यह कहा जा सकता है कि ÷समय के आईने में÷ मात्र आलेख-संग्रह नहीं, बल्कि बदलते समय और समाज का सजीव दस्तावेज़ है। इसमें आज की पीढ़ी की उलझनें, अभिभावकों की व्यथा, समाज के संकट, युवाओं की चुनौतियाँ और मनुष्य की भावनात्मक जटिलता- सब एक साथ धड़कते हुए दिखाई देते हैं। यह पुस्तक पाठक को आत्ममंथन के लिए प्रेरित करती है और यह एहसास कराती है कि यदि हम अपने भीतर संवेदनशीलता, जिम्मेदारी और मानवीयता को जगा लें, तो समाज की दिशा सहज ही सही मार्ग पर चल पड़ती है। संध्या अग्रवाल की यह कृति निश्चित रूप से उन सभी पाठकों के लिए आवश्यक और महत्वपूर्ण पठन सामग्री है जो समय के सच को समझना चाहते हैं और अपने जीवन तथा समाज को एक बेहतर दिशा देने का संकल्प रखते हैं।

पुस्तक: समय के आईने में
लेखिका : संध्या अग्रवाल
प्रकाशन: समृद्ध पब्लिकेशन, दिल्ली
मूल्य: 245 रुपये

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्प्लेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

दर्शन के विशेष धरातल के कलाकार हरि दर्शन

कला

पंकज तिवारी

कला समीक्षक

बचपन में गुरु जी से कला की शिक्षा लेते हुए और बाकी बच्चों को चित्र बनाते, देखते हुए अंदर से दहल जाने वाले हरि दर्शन के गुरू जी एक चित्र को आधा बनाकर कल बनाएंगे कहते हुए घर चले गए तब उसी चित्र में रंग भरने के विचार से एक बच्चा लगातार काम किया। चित्र में कुछ तो था जो खटकने लगा था जिसके तुरंत बाद वही बच्चा दूसरे पन्ने पर हूबहू वैसा ही दूसरा चित्र बना दिया और वहीं रख दिया। विशेषता देखिए कि अगले दिन गुरू जी आए और उसी चित्र पर आगे काम करने लगे मतलब साफ है कि उनके पकड़ से बाहर हो गया मामला कि इसे मैंने बनाया था या किसी नन्हे से बच्चे ने बनाया है। बच्चा ही हरि दर्शन सांख्य है जो अब हज़ारों की संख्या में कृतियों को सृजित कर रहा है। बनारस अपने आप में ही एक जीवन है।

संघर्ष, कठिन से कठिन संघर्ष किसी भी इंसान को उसे और मजबूत एवं परिपक्व बनाता है। मुसीबतें उसे और तपा कर, निखार कर फिर से फलक पर अपनी प्रस्तुति देने हेतु तैयार करती हैं। चित्रकार हरि दर्शन सांख्य की कहानी उतनी शांत है नहीं जितने शांत, संपन्न एवं गहरे आध्यात्म से परिपूर्ण उनकी कलाकृतियाँ हैं या जितने धीर-गंभीर वो दिखते हैं। मिर्जापुर के हरे-भरे, सुनहरे गाँव में बचपन के तमाम झंझावातों से लड़ते-भिड़ते फिर निकलते, स्वर्ण आभूषणों में कारीगरी करने से लेकर चौथी कक्षा से ही चित्रकला के तरफ मुड़ने और इन सभी के बीच ही तमाम और उलझनों से निपटने के साथ ही कला को निरंतर जीते हुए हरि दर्शन, सांख्य के अध्ययन और उसके प्रभाव से इतने प्रभावित हुए कि अपने नाम के साथ ही सांख्य शब्द जोड़ लिए। बचपन में गुरु जी से कला की शिक्षा लेते हुए और बाकी बच्चों को चित्र बनाते, देखते हुए अंदर से दहल जाने वाले हरि दर्शन के गुरू जी एक चित्र को आधा बनाकर कल बनाएंगे कहते हुए घर चले गए तब उसी चित्र में रंग भरने के विचार से एक बच्चा लगातार काम किया। चित्र में कुछ तो था जो खटकने लगा था जिसके तुरंत बाद वही बच्चा दूसरे पन्ने पर हूबहू वैसा ही दूसरा चित्र बना दिया और वहीं रख दिया। विशेषता देखिए कि अगले दिन गुरू जी आए और उसी चित्र पर आगे काम करने लगे मतलब साफ है कि उनके पकड़ से बाहर हो गया मामला कि इसे मैंने बनाया था या किसी नन्हे से बच्चे ने बनाया है। बच्चा ही हरि दर्शन सांख्य है जो अब हज़ारों की संख्या में कृतियों को सृजित कर रहा है। बनारस अपने आप में ही एक जीवन है। यहाँ रहते हुए आप जीवन नहीं जी रहे होते हैं बल्कि जीवन आपको जी रहा होता है, यहाँ रहते हुए आप सिर्फ अपने कार्य नहीं कर रहे होते हैं बल्कि आप रोज नये-नये रूपों में अपने आप को ही देख रहे होते हैं, आप खुद में ही संसार को ढूंढ रहे होते हैं या कह सकते हैं कि आप खुद में ही ईश्वर से साक्षात कर रहे होते हैं। बनारस पर इतना कहा और लिखा जा चुका है बावजूद इसके अभी भी कहा और लिखा जा सकता है कि लोग चुक जाएंगे, चुप हो जाएंगे पर बनारस बोलता रहेगा। बनारस का कण-कण खुद को हर बार नये-नये रूपों एवं प्रतिमानों में गढ़े जाने को उत्सुक रहेगा, लोग वहाँ तक कभी भी नहीं पहुँच पायेंगे बनारस जहाँ तक खुद को विस्तारित करता है। जीवन में जितने भी आभास एवं विरोधाभास की गुंजाइश हो सकती है सब कुछ बनारस में होता है। बनारस आम को भी खास बना देता है फिर कलाकार तो खास होता है, वो किस सीमा तक अपने आप को बनारस में ढूंढ सकता है पहेली थी, है और हमेशा रहेगी। बनारस थाती है। विरासत को, विचारों को, संस्कार एवं संस्कृतियों को खुद में युगों-युगों से संभाले हुए है। हम, आप या लोग आते हैं अपने हिस्से का अभिनय करते हैं और समय के साथ समा जाते हैं बनारस के इस थाती में। कलाकार हरि दर्शन ऐसे ही थातियों पर लगातार कार्य करते हुए, रचनाएं सृजित करते हुए निरंतर घूम रहे हैं जिसकी शुरुआत बनारस से ही हुई। उनके अब तक के कलायात्रा में भरतपुर, कोच्चि, ऋषिकेश, कूर्ग, आदि जगहें शामिल है। हरि दर्शन के कला का अध्ययन काशी हिंदू विश्वविद्यालय से ही संपन्न हुई है। ये जिस भी जगह को अपना कार्य क्षेत्र बनाते हैं, उसके संबंध में पहले खूब अध्ययन करते हैं, आध्यात्मिक महत्व पर काम की बारीकियों को परखते हैं उसके बाद महीनों वहीं रुक रमता जोगी, बहता पानी की भांति बहते हुए मस्त मगन हो बिल्कुल जोगियों की भांति सृजन करते हैं, मोह-माया, संसार से बिलग।

अपने कृति 'काशी में माघ पूर्णिमा' में उन्होंने बनारस में माघ पूर्णिमा के पवित्र स्नान को दिखाया है। भोर के एकांत में गंगा घाट के किनारे एक प्राचीन मन्दिर के साथ भगवा रंग में एक साधु को दिखाया गया है जो गंगा स्नान के लिये सीढ़ी से नीचे उतर रहे हैं। छाया-प्रकाश का बेहद ही संजीदा प्रयोग देखने को मिला है यहाँ पर। आकाश में हल्के नीले रंग के प्रभाव से माघ के हल्के सर्द वातावरण को भी बड़े ही खूबसूरती के साथ व्यक्त किया गया है।

संपूर्ण वातावरण में आध्यात्मिक अनुभूति को व्यक्त करना ही इस कृति का सार तत्व है। शांत वातावरण के बीच पीलेपन का गजब ही मोहक उद्भव हुआ है इस कृति में जबकि एक दूसरे कृति 'महाराज दशरथ जी का दरबार' में जो महर्षि बाल्मीकि रामायण के एक प्रसंग से लिया गया है, जहाँ महाराज दशरथ जी अपने दरबारियों के साथ भावी महाराज के विषय में विमर्श कर रहे है, जहाँ सभी दरबारी प्रभु श्री राम को ही महाराज बनाने पर सहमत हैं और स्वीकृति में अपने हाथों को उठाए हुए हैं। अपने-अपने विचार रख रहें है। पूरे कृति में प्रभु श्री राम के ही गुण, प्रतिभा, करुणा, वीरता, महानता और दैवीय गुणों की चर्चा ही इस विमर्श का प्रमुख केंद्र है। विमर्श हेतु सभा में बैठे गणमान्यों में एक दो गणमान्य तो वर्तमान के रहन-सहन से भी लिए हुए लग रहे हैं। अतीत को वर्तमान के साथ जोड़ने का हरि दर्शन का यह प्रयास भी कला परिदृश्य के लिए विशेष ही साबित होगा। सभा चित्र के वाद-संवाद के बीच पूरे कृति में जो प्रमुखता से झलकता है वो है प्रभु श्री राम का दिव्य स्वरूप। प्रभु श्रीराम के लगभग सभी गुणों को यहाँ दर्शाया गया है। वर्तमान में यह चित्र राजा राम संग्रहालय, ओरछा में संग्रहित एवं दर्शकों हेतु प्रदर्शित है। इनके कृतियों में यथार्थता का भव्यता के साथ प्रदर्शन है। कृति 'प्राचीन गणेश मन्दिर, विराजपेट' में अवचेतन के धरातल पर यथार्थ और कल्पना के मिले-जुले रूप में, कुर्ग के विराजपेट में बहुत पुराने मंदिर को दिखाया गया है जो सुबह की हल्की, सुनहरी रोशनी में नहाया हुआ है। हवा भक्ति से भरी हुई है, क्योंकि भक्त, पारंपरिक दक्षिण भारतीय वेश भूषा में सजे-धजे, भगवान गणेश को श्रद्धांजलि देने के लिए इकट्ठा होते हैं।

मंदिर के पुराने पत्थर, जिन पर बारीक नक्काशी की गई है, पुराने ज़माने की कहानियाँ फुसफुसाते हुए से लगते हैं, जैसे गर्म धूप इसके सामने के हिस्से पर नाच रही हो। प्रस्तुत कृति में बस इस पवित्र पल के सार तत्व को पकड़ने, व्यक्त करने का प्रयास है जहाँ समय रुक जाता है, और भक्तों के श्रद्धा से भरे चेहरे, विश्वास से चमकते हुए, दिव्य उपस्थिति के साथ एक हो जाते हैं। सूरज की रोशनी की किरण, एक दिव्य ब्रस, मंदिर की शान को छूती है, उसमें जीवन और ऊर्जा भर देती है। उनका कहना है कि इस पल में, इस पवित्र जगह में फैली शांति, सुकून और गहरी आध्यात्मिकता को दिखाने का प्रयास है । प्रार्थना में खोए हुए भक्त, उनकी आवाज़ें भजन गाती हुई, मंदिर के प्राचीन रूप का एक ज़रूरी हिस्सा बन जाती हैं।

आत्मा के ऐसे भाव को तूलिका द्वारा व्यक्त करके इस पल को दृश्य रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास है जहाँ इंसान और भगवान एक हो जाते हैं, और आत्मा हमेशा रहने वाली सुंदरता की दुनिया में पहुँच जाती है।÷ उनके कृतियों को प्रत्यक्ष देख कर प्रभावित हुए बिना नहीं रहा जा सकता। कृतियों को देखने हेतु आध्यात्मिक स्नान की भी आवश्यकता जान पड़ती है। एक कृति 'नृत्य करती पारंपरिक कोडगु महिलायें' में कर्नाटक के कोडगु की महिलाओं को पारंपरिक वेश भूषा में नृत्य करते दिखाया गया है। कोडगु अथवा कूर्ग में फसल उत्सव के अवसर पर महिलाएँ अपने विशेष पारंपरिक परिधान और आभूषण के साथ तैयार होती हैं तथा पारंपरिक नृत्य भी करतीं हैं. इस चित्र में एक प्राचीन मन्दिर के प्रांगण में दो ऐसे ही महिलाओं को नृत्य में मगन दिखाने का प्रयास है, जिसमे ऐसे क्षण को व्यक्त करने का प्रयास है जब लोक संगीत के प्रभाव में नृत्य करतीं ये महिलाएँ अपने अंतर में ही कही लीन सी हो गई होती हैं। कृति काफी पहले की है इसलिए कुछ खामियाँ भी देखने को मिलती है इस कृति में। चेहरे पर कुछ और बारीकी से कार्य किया जा सकता है, गुंजाइश तो हरहमेश ही रहता है यहाँ भी उसी गुंजाइश की ही बात है।

कृति 'हाथी के साथ स्नान' कूर्ग में स्थित दुबारे नामक स्थान की है. जहाँ घने जंगल से पवित्र कावेरी नदी गुजरती है, जहाँ हाथियों का झुंड अक्सर प्रकृति में, प्रकृति के साथ आनंद लेते दिखाई पडती हैं। वर्तमान में यह स्थान पर्यटकों के लिए हाथियों के साथ स्नान का आनंद लेने का एक प्रमुख केंद्र बन गया है। इस चित्र में एक महिला को हाथी के साथ स्नान करते दिखाया गया है। हाथी भी मस्ती में इसका पूरा लुत्फ़ लेती दिखाई पड़ी है।

पुरुष एवं प्रकृति के संयोग से विशद रुप ग्रहण करने वाले सांख्य दर्शन के अध्ययन ने इनके सोचने समझने के स्तर को बहुत ही प्रभावित किया है ये आजकल आध्यात्मिक भारतीय संस्कृति पर आधारित चित्रों के निर्माण हेतु हिमालय के यात्रा पर हैं। इनके कृतियों में दर्शक को आध्यात्मिक के साथ-साथ पर्यावरणीय एवं लौकिक ज्ञान भी प्राप्त हो जाता है। इनके कलायात्रा पर अभी बहुत कुछ लिखा जाना शेष है फिलहाल इतना ही।

विषपायी जहर पीकर भी अमृत लिख गए

आयोजन

मंदसौर। विरासत विचारों की भी होती है। प्रेमचंद की कहानी पंच परमेश्वर का उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा कि विषपायी ईमान के पक्के थे और निर्भीक होकर लिखते थे। वर्तमान समय में यह गुण कम होता जा रहा है। विषपायी जहर पीकर भी अमृत लिख गए। वे सादगी और सच्चाई की मिसाल थे और पत्र लेखन में उनकी पहचान अमिट रहेगी।

छायाकार बंशीलाल परमार ने यह बात लेखक और समाजवादी चिंतक बाबूलाल माली 'विषपायी' की स्मृति में आयोजित साहित्य संवाद में कार्यक्रम में कही। प्रगतिशील लेखक संघ व विषपायी फाउंडेशन द्वारा आयोजित कार्यक्रम में हरनाम सिंह ने कहा कि विषपायी वंचित वर्ग के अधिकारों की रक्षा के लिए हमेशा संघर्ष करते थे। 70-80 के दशक में शहर में

गोष्ठियों के माध्यम से गंभीर बहस होती थी और असहमति को भी धैर्यपूर्वक सुना जाता था। यह आयोजन विषपायी की स्मृति में होने वाले आयोजनों की पांचवीं कड़ी हैं। प्रोफेसर रविंद्र कुमार सोहानी ने कहा कि साहित्य समाज का दर्पण होने के साथ समाज की दिशा भी तय करता है। वाद-संवाद के बिना समाज की कल्पना संभव नहीं। विषपायी सच के लिए किसी से भी टकराने में संकोच नहीं करते थे और समाजवादी विचारधारा को जीवित रखने वाली आवाज थे।

वरिष्ठ अभिभाषक रातड़िया ने कहा विषपायी निश्छल व्यक्ति थे। उनकी अभिव्यक्ति प्रभावी थी और वे उन्मुक्त चिंतन वाले अध्येता थे। उन्होंने कहा कि संवाद ही बौद्धिकता का आधार है। स्वागत उद्बोधन मुकेश माली ने दिया। अतिथियों का स्वागत चित्रा माली, प्रकाश गुप्ता सहित अनेक लोगों ने किया। अंत में परमार ने विषपायी का चित्र और पुस्तक शब्द शिल्प भेंट की। नरेंद्र नाहटा, ब्रजेश जोशी, रफत पयामी सहित अनेक लोग उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन असअद अंसारी ने किया। कार्यक्रम की शुरुआत इप्टा की सचिव हूरबानो द्वारा दुष्यंत कुमार की गजल से हुई।

धुरंधरः भारत-पाक संघर्ष इस बार बरास्ते फिल्म

फिल्म समीक्षा

आदित्य दुबे,

लेखक वेबसाइट ई- अंतर्भव के प्रबंध संचालक हैं।

हाँ डी में चांवल पके या नहीं , इसका अंदाज़ एक दाने को दबाकर भी किया जा सकता है । इसी युक्ति को थामकर कुछ समीक्षक इन दिनों आदित्य धर की फिल्म - 'धुरंधर ' पर जमकर लिख रहें हैं । अभी फिल्म का ट्रेलर ही रिलीज़ हुआ है मगर उसमें निहित संकेतों ने फिल्म के बारे में बहुत कुछ व्यक्त कर दिया है । किसी ट्रेलर ने रिलीज होने के साथ ही जिस तरह से सुर्खियां बटोरी हैं, वह चौंकाने वाली हैं। ट्रेलर ने दहशत भी पैदा कर दी है, दहशत हिंसा फैलने की।आदित्य धर पहली बार फिल्म के डायरेक्टर होने के साथ-साथ राइटर और प्रोड्यूसर भी हैं । चार मिनट के इस ट्रेलर के बारे में सोशल मीडिया पर बेधड़क टीका-टिप्पणियां देखने को मिल रही है । कोई तारीफ कर रहा है, कोई आलोचना भी कर रहा है.।

धुरंधर का हर चेहरा खौफनाक है । उसके मंसूबे खतरनाक है । ट्रेलर में जितने चेहरे हैं- वे सब के सब धुरंधर है। हर धुरंधर मानो खुद को सिकन्दर मानता है । वह अपने मिशन में जीतना चाहता है ।

एक धुरंधर चौधरी असलम के किरदार में संजय दत्त हैं । उसे शैतान और जिन्न की पैदाइश कहा जाता है ।वह अपने दुश्मनों को खस्सी की तरह काटने के लिए कुख्यात है । दूसरा धुरंधर मेजर इकबाल के तौर पर अर्जुन रामपाल है जो भारत को लहूलुहान करना चाहता है ।अपने कैद में रखे भारतीय जांबाज की छाती को छलनी कर देना चाहता है। उसके सीने में सन् 1971 की भारत-पाक जंग और बांग्लादेश विभाजन का गहरा जख्म है । तीसरे धुरंधर हैं भारतीय खुफिया अधिकारी अजय सान्याल बने आर. माधवन , जो कि पाकिस्तान की हर साजिश का मुंहतोड़ जवाब देने के लिए तैयार है।

फिल्म का पाँचवा धुरंधर यकीनन भगवान सिंह की केन्द्रीय भूमिका निभाने वाले रणवीर सिंह है ,जो फिल्म के हीरो भी है हालांकि ट्रेलर में रणवीर सिंह के नाम का खुलासा नहीं किया गया है ।।वह जांबाज लुक में दिखते हैं । उसके साथ फिल्म की हीरोइन सारा अर्जुन भी नजर आती हैं. बेशक यहां रोमांस के लिए ज्यादा स्पेस नहीं लेकिन एक्शन के साथ रोमांस का महज तड़का ही हो सकता है। पाँचवे धुरंधर के विकराल रूप को फिल्म में भगवान का क्रोध बताया गया है । यानी भारत की भूमि पर नापाक नजर डालने वालों का अंजाम बहुत खतरनाक हो सकता है क्योंकि भारत तो देवताओं की भूमि है. इस वाक्य का यही आशय समझ आता है। इन चरित्रों से साफ जाहिर हो जाता है कि धुरंधर की कहानी क्या है। सभी चरित्रों के परिचय को इकट्ठा कर दें तो इस फिल्म की कहानी बन जाती है. । यानी कहानी के केंद्र में एक बार फिर भारत-पाक के बीच युद्ध और आतंकवाद है ?। ऐसा लगता है पाकिस्तान 1971 और कश्मीर का बदला लेने के लिए भारत को लहूलुहान करने के खूनी मिशन पर काम कर रहा है.।

चेतन आनन्द, मनोज कुमार, जे पी दत्ता जैसे दिग्गज फिल्मकारों की दिखाई गई देशभक्ति अब कालातीत हो चुकी है। आतंकवाद ने चेहरा बदला है । उरी के बाद की फिल्में गदर और बॉर्डर के लेवल से भी आगे निकल चुकी हैं. अब दहशत का डेंजर लेवल दिखाए बिना देशभक्ति का भाव पैदा ही नहीं होता है और दर्शक इसे देखना चाहते हैं । छावा ने इसे फिर से साबित किया । यानी इस टेंपरामेंट में धुरंधर एक बार ट्रेंड सेटर फिल्म साबित हो सकती है. इन्तजार रहेगा पांच दिसम्बर का जब यह फिल्म थिएटर में रिलीज होगी ।

एक कयास यह भी लगाया जा रहा है कि आदित्य धर अपनी फिल्म धुरंधर में उससे भी नेक्स्ट लेवल का वायलेंस लेकर आने वाले हैं । सोशल मीडिया के टिप्पणीकारों का कहना है अगर ट्रेलर ही ऐसा है तो पिक्चर न जाने कैसी होगी? वास्तव में धुरंधर के कलाकार संजय दत्त, रणवीर सिंह, अक्षय खन्ना, आर. माधवन और अर्जुन रामपाल के जो आक्रामक अंदाज दिखे हैं उसने दर्शकों के बीच एक खौफ पैदा कर कर दिया गया है । खौफ, जी हाँ खौफ। धुरंधर का मिशन भी यही लगता है- खौफ फैलाना। हिंसा जितनी ज्यादा होगी, लोग उतनी चर्चा करेंगे. लोग जितनी चर्चा करेंगे, फिल्म का प्रमोशन भी अपने आप उतना ही होगा ।

कनाडा में हिंदू विरासत माह-संस्कृति, ज्ञान और परंपरा के स्वर

परंपरा

रागिनी श्रीवास्तव

लेखक कनाडा निवासी साहित्यकार हैं।

हिंदू सभ्यता से विकसित आध्यात्मिक, सांस्कृतिक, दार्शनिक और कलात्मक परम्पराएँ, जो हजारों वर्षों से मानवता का मार्गदर्शन करती आई है। यही हिंदू हेरिटेज है यह केवल धर्म नहीं, बल्कि एक जीवन-दर्शन है।

कनाडा एक बहुसांस्कृतिक देश है, जहाँ विविध धर्मों और परंपराओं का सम्मान किया जाता है। इसी भावना के अंतर्गत, ओंटारियो प्रांत ने 2016 में 'हिंदू हेरिटेज मंथ एक्ट' पारित किया, जिसके अनुसार हर वर्ष नवंबर माह को हिंदू विरासत माह के रूप में मनाया जाता है। इस पहल का उद्देश्य कनाडाई समाज में हिंदू संस्कृति, परंपरा, योग, आयुर्वेद और दर्शन के योगदान को सम्मान देना और इनके महत्व को बढ़ावा देना है। इस प्रस्ताव को सांसद चंद्र आर्य ने प्रस्तुत किया था, जिसे सभी दलों ने समर्थन दिया। बाद में इसे राष्ट्रीय स्तर (फेडरल) पर अपनाया गया और ब्रिटिश कोलंबिया, एल्बर्टा, मैनिटोबा और नोवा स्कॉशिया जैसे अन्य प्रांतों ने भी हिंदू विरासत माह को मान्यता दी।

हिंदू विरासत माह के दौरान टोरंटो, वैंकूवर, ब्रैम्पटन और मॉन्ट्रियल सहित पूरे कनाडा में हिंदू कला, संगीत, योग, दर्शन, वेदांत और समाजसेवा से जुड़े विविध कार्यक्रम सम्मानपूर्वक आयोजित किए जाते हैं। इस महीने का उद्देश्य भारतीय संस्कृति, परंपरा, योग, आयुर्वेद तथा हिंदू दर्शन के योगदान को व्यापक समाज में परिचित कराना है।

वैंकूवर में सांस्कृतिक संध्या, पारंपरिक नृत्य, संगीत और ÷भक्ति महा उत्सव÷ जैसे कार्यक्रम होते हैं। टोरंटो और स्कारबरो में सामुदायिक मिलन, भारतीय भोजन, कला प्रदर्शन और संगीत कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। कई स्थानीय नेता और भारतीय मूल के सांसद इन आयोजनों में शामिल होते हैं।

स्कूलों और कॉलेजों में भी इस महीने को विशेष रूप से मनाया जाता है। टोरंटो डिस्ट्रिक्ट स्कूल बोर्ड पोस्टर प्रतियोगिता, भारतीय इतिहास पर कार्यशालाएँ और 'लोकाः समस्ताः सुखिनो भवन्तु' जैसे संदेशों पर आधारित गतिविधियाँ आयोजित करता है। इससे छात्रों को भारतीय परंपरा और मूल्यों को समझने का अवसर मिलता है। मंदिरों में पूजा, योग सत्र, आध्यात्मिक प्रवचन और सामुदायिक सेवा जैसे कार्यक्रम पूरे महीने चलते हैं। ये गतिविधियाँ समुदाय को जोड़ती हैं और भारतीय विरासत को जीवित रखती हैं, और लोकप्रिय बनती है।

कनाडा में हिंदू समुदाय का इतिहास बीसवीं शताब्दी के आरंभ से शुरू होता है। सबसे पहले कुछ भारतीय प्रवासी 1900 के दशक में ब्रिटिश उपनिवेशों से काम और व्यापार के लिए यहाँ आए।1960-70 के दशक में इमिग्रेशन नीतियों के उदार होने के बाद बड़ी संख्या में हिंदू भारत, श्रीलंका, फ़िजी, नेपाल और अन्य देशों से कनाडा आए। आज कनाडा में लगभग 9-10 लाख हिंदू रहते हैं (कुल जनसंख्या का लगभग 2त्न)।धीरे-धीरे उन्होंने अपनी धार्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक पहचान को सहेजते हुए कनाडाई समाज में सक्रिय भूमिका निभानी शुरू की।हिंदू-कनाडाई लोग अब राजनीति, शिक्षा, चिकित्सा, आईटी, और व्यापार में प्रमुख भूमिका निभा रहे हैं।हिंदू धर्म की 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना को कनाडाई बहुसंस्कृतिवाद से जोड़कर देखा जाता है। हिंदू समुदाय कनाडा में अपने सभी प्रमुख त्योहार बड़े उत्साह से मनाता है दीपावली, होली, नवरात्रि, गणेशोत्सव और जन्माष्टमी जैसे पर्वों पर पूरे देश में मेले, सांस्कृतिक कार्यक्रम देखने को मिलती है।

कनाडा पोस्ट ने अत्यंत सम्मान और गर्व के साथ दीवाली के अवसर पर भारतीय कला और संस्कृति के प्रतीक रंगोली पर आधारित एक विशेष डाक टिकट जारी किया, जो विविधता में एकता और सौंदर्य का संदेश देता है।

इसी क्रम में, कनाडा पोस्ट ने 11नवम्बर 2025 को रिमेम्ब्रेंस डे के अवसर पर पहले भारतीय सिख सैनिकों में से एक प्राइवेट बुकम सिंह की वीरता और सेवा को सम्मानित करते हुए एक स्मारक डाक टिकट भी जारी किया है। प्राइवेट सिंह ने प्रथम विश्व युद्ध में बहादुरी से हिस्सा लिया था और उनके योगदान को यह डाक टिकट श्रद्धांजलि स्वरूप स्मरण करता है।

कनाडा में सैकड़ों हिंदू मंदिर हैं कुछ तो स्थापत्य और सांस्कृतिक दृष्टि से बहुत प्रसिद्ध हैं जैसे BAPS श्री स्वामीनारायण मंदिर टोरंटो यह विश्वस्तरीय शिल्प का उदाहरण है और कनाडा का सबसे बड़ा हिंदू मंदिर है। हिंदू सभा मंदिर (ब्राम्पटन) जीटीए क्षेत्र का प्रमुख धार्मिक केन्द्र है। टोरंटो, मोंट्रियल और वैंकुवर आदि में इस्कॉन मंदिर के दर्शन किये जा सकते है। टोरंटो का शृंगेरी शारदाम्बा मंदिर, कनाडा में भारतीय संस्कृति और अध्यात्म का एक अद्भुत प्रतीक है। यह मंदिर देवी शारदाम्बा (माँ सरस्वती) को समर्पित है, जो ज्ञान, संगीत, कला और विद्या की देवी मानी जाती हैं।इसका निर्माण दक्षिण भारत के प्रसिद्ध शृंगेरी मठ (कर्नाटक) के आदर्श पर हुआ है, जिसकी स्थापना आदि शंकराचार्य जी ने की थी। मंदिरों में बच्चों के लिए संस्कृत, वेद, और संगीत की कक्षाएँ भी चलाई जाती हैं, जिससे नई पीढ़ी को भारतीय परंपरा से जोड़ने में सहायता मिलती है। कनाडा के मंदिर न केवल एक धार्मिक स्थान है, बल्कि यह भारतीय प्रवासी समुदाय के मिलन-स्थल के रूप में भी कार्य करता है। यहाँ त्योहारों पर हजारों लोग एकत्र होकर, नवरात्रि, दशहरा, दीपावली और सरस्वती पूजन आदि मनाते हैं। कनाडा में नवंबर का हिंदू विरासत माह केवल एक औपचारिक उत्सव नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति और दर्शन के वैश्विक महत्व का प्रतीक है। यह कनाडाई समाज में हिंदू समुदाय की भूमिका और उसकी सांस्कृतिक पहचान को सम्मानित करने का अवसर है।

यह माह विविधता और एकता के उस आदर्श को जीवंत करता है जो दोनों देशों भारत और कनाडा के संबंधों का मूल है। हिंदू हेरिटेज महीना कनाडा की बहुसांस्कृतिक भावना को मजबूत करता है और भारतीय संस्कृति की समृद्ध विरासत को सम्मानित करने का एक प्रभावशाली माध्यम है।

यूनिटी मार्च 24 से नागपुर से शुरू

धार। राष्ट्रीय एकता और अखंडता के प्रतीक लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल की 150वीं जयंती के उपलक्ष्य में देशभर में आयोजित की जा रही तत्व यात्राओं की श्रृंखला के अंतर्गत मध्यप्रदेश से निकल रही 'सरदार @150 पदयात्रा / यूनिटी मार्च' का शुभारंभ 24 नवम्बर को नागपुर (महाराष्ट्र) से होगा। यह यात्रा विभिन्न जिलों से होती हुई मध्यप्रदेश में प्रवेश कर जनभागीदारी और राष्ट्रीय एकता के संदेश को आगे बढ़ाएगी।

गत दिवस आयोजित वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की अध्यक्षता में पदयात्रा की समीक्षा की गई। निर्देशानुसार यह यात्रा इन्दौर से प्रस्थान करने के बाद 26 नवम्बर को दोपहर 2 बजे धार पहुँचेगी। यात्रा के स्वागत कार्यक्रम में भारत सरकार की महिला एवं बाल विकास मंत्रालय की राज्यमंत्री एवं धार-महू संसदीय क्षेत्र की सांसद सावित्री ठाकुर धार फाटा, जैतपुरा (सीएनजी पम्प के सामने) उपस्थित रहेंगी।

कार्यक्रम की सुचारु व्यवस्था और समन्वय के लिए कलेक्टर प्रियंक मिश्रा ने जिला युवा अधिकारी माय भारत दीर्घा राजावत को नोडल अधिकारी नियुक्त किया है। साथ ही उनकी सहायता के लिए संबंधित विभागों के अधिकारियों को दायित्व सौंपे गए हैं, ताकि यात्रा का आयोजन ससम्मान और सफलतापूर्वक संपन्न हो सके।

श्री छोटा महावीरजी कागदीपुरा में परमपूज्य उपाध्याय विभंजनसागर जी मुनिराज का मंगल प्रवेश हुआ

धार। श्री छोटा महावीरजी कागदीपुरा में सुबह 9 बजे परमपूज्य उपाध्याय विभंजनसागर जी मुनिराज का मंगल प्रवेश हुआ। गुरुदेव के दर्शन करने जैन समाज के साथ ही ग्रामीण क्षेत्रों से भी श्रद्धालु दर्शन करने पहुंचे । गुरुदेव के सानिध्य में भगवान महावीर स्वामी जी के अभिषेक शांतिधारा करने का सौभाग्य रूपेश बड़जात्या, पारस गंगवाल, अजय बडजात्या, सत्येंद्र जैन और इंजी. आशीष जैन को मिला ।

गुरुदेव ने इस अतिशय क्षेत्र पर आकर दर्शन अभिषेक अधिक से अधिक संख्या मे आकर करने का संकल्प दिलवाया । तीर्थ प्रमुख विनय छाबड़ा ने बताया शीघ्र ही पंच कल्याणक महोत्सव के बारे में बताया । इंजी. आशीष जैन ने निर्माण कार्यो की जानकारी दी। अजीत जैन ने गुरुदेव की आहार क्रिया की जानकारी दी ।

धार से समाज सचिव संजय छाबड़ा ,मौसम झाँझरी, संजय दिलावरा, विजय रावका, अजय छाबड़ा, यश , पवन छाबड़ा, सुरेश गंगवाल, मुकेश गंगवाल, चेतना छाबड़ा ममता गंगवाल, कल्पना, रूपा ,नेहा छाबड़ा, निशा गंगवाल रानी और सरला गंगवाल शिवानी रावका एवं अन्य महिला मंडल सदस्य उपस्थित थे।

महाबोधि महाविहार बोधगया के लिए रवाना हुआ बैतूल का दल

बैतूल। अंतर्राष्ट्रीय त्रिपिटक चांटिंग समारोह में सेवा देने के लिए बैतूल जिले से सेवाभावी दल दीक्षाभूमि ट्रेन से महाबोधि महाविहार बोधगया के लिए रवाना हुआ। मान्यता है कि इस महामंगलमय चेंटिंग कार्यक्रम में सेवा देने या इसका प्रत्यक्ष साक्षी बनने भर से जीवन पुण्यफल से परिपूर्ण हो जाता है। बोधगया जाने वाले सौभाग्यशाली सदस्यों में रेखा धनराव चन्देलकर, सलिता कैलाश चन्देलकर, संगीता अशोक कापसे, अमीता सुरजु भुमरकर, राधिका अशोक पाटिल, रामा अतुलकर, लक्ष्मी भाऊराव भालेकर, अर्चना चौकीकर, मालती चौकीकर, मधुकर पाटील, सुनील नागले, कौतिका मासोदकर, देवकी

राजुरकर, कौशि मालवीय, जयवंती अतुलकर शामिल है। दल को शुभकामनाओं के साथ गुलदस्ता देकर विदा करने बैतूल जिले के सैकड़ों बौद्ध अनुयायी उपस्थित रहे, जिनमें महेंद्र खोबरागड़े, नरेश भूममरकर, तुकाराम लोखंडे, डॉ. प्रमोद भालेकर, शेषराव हुरमाडे, अशोक पाटिल, मन्नूलाल पाटिल, भाऊराव भालेकर, धनराज चंदेलकर, रामदास पाटील, डॉ. मनोज वरवड़े, धर्मदास दवंडे, दीपक मालवी, रमेश उबनारे, प्रकाश उबनारे, उर्मिला उबनारे, ममता अतुलकर, दिनेश रमेश उबनारे मालवीय सहित अनेक अनुयायी शामिल रहे।

दिवाड़ी गोठान सांस्कृतिक महोत्सव में आदिवासी नृत्य दल देंगे प्रस्तुति

बैतूल। आदिवासी गायकी/ठाठिया गोंड समाज संगठन एवं समस्त आदिवासी समाज संगठन के तत्वावधान में दिवाड़ी गोठान एवं भव्य सांस्कृतिक महोत्सव का आयोजन आज 23 नवंबर रविवार को किया जा रहा है। कार्यक्रम की शुरुआत सुबह 11 बजे पड़ापेन ठाना, रेन बसेरा, सदर से एक विशाल रैली के साथ होगी। रैली अंबेडकर चौक, कोठी बाजार बस स्टैंड, कलेक्टर कार्यालय रोड, शिवाजी चौक से होती हुई सीधे शिवाजी महाराज ऑडिटोरियम पहुंचेगी, जहां मुख्य सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। आयोजन समिति की दुर्गा उइके एवं आरती परते ने बताया कि इस महोत्सव में जिलेभर के ठाठिया/गायकी नृत्य दल, गोंडी डंडार दल सहित सभी आदिवासी नृत्य दलों को आमंत्रित किया गया है। आयोजकों ने बताया कि यह कार्यक्रम आदिवासी संस्कृति, परंपराओं और सामुदायिक एकता को प्रदर्शित करने का एक महत्वपूर्ण अवसर होगा। संगठन ने आदिवासी समाज के सभी सगाजनों से अधिक से अधिक संख्या में उपस्थित होकर अपनी संस्कृति और पहचान को गौरवान्वित करने की अपील की है।

आज मनाया जाएगा श्री सत्य साईं बाबा का 100 वां जन्म महोत्सव

बैतूल। श्री सत्य साई सेवा समिति के तत्वावधान में आज रविवार जेएच कॉलेज महाविद्यालय सभागृह में शाम 6 बजे से 8.30 बजे तक श्री सत्य साई बाबा का 100 वां जन्मोत्सव समारोह धूमधाम से मनाया जाएगा। जिला सेवा प्रभारी संजीव शर्मा ने बताया कि श्री सत्य साई बाबा ने अध्यात्म के अलावा भी अनेक सामाजिक कल्याण कार्यों के माध्यम से आदर्शों को वास्तविकता में बदलने का एक उदाहरण प्रस्तुत किया है। श्री सत्य साई सेंट्रल ट्रस्ट छात्रों को उच्च-गुणवत्ता वाली निःशुल्क शिक्षा, निःशुल्क गुणवत्तापूर्ण चिकित्सा सेवा और इस क्षेत्र के हज़ारों सूखा प्रभावित गांवों में पेयजल उपलब्ध कराना भी उनकी दूरदर्शिता का परिणाम है।

झाड़ियों में छुपाकर रखी गई अवैध सागौन चरपट जप्त

बैतूल। वनमण्डल दक्षिण बैतूल अंतर्गत आठनेर वन परिक्षेत्र में सागौन के अवैध परिवहन की मुखबिर से सूचना प्राप्त होने पर वनमण्डलाधिकारी दक्षिण बैतूल एलके वासनिक तथा उपवनमंडलाधिकारी मुलताई संजय साल्वे के निर्देश में वन परिक्षेत्र अधिकारी आठनेर अतुल भोयर द्वारा गश्ती दल का गठन किया गया। गश्ती दल द्वारा बेलकुंड से सोनेरा डेम के पास नाले में झाड़ियों में छिपाकर रखी गई सागौन चरपट 08 नग 0.201 घन मीटर जप्त किया गया एवं मध्यप्रदेश वनोपज व्यापार (विनियमन) अधिनियम 1969 की धारा 5(1) , 15 अंतर्गत पीओआर प्रकरण पंजीबद्ध किया गया। प्रकरण में जप्त वनोंपज की कीमत लगभग 12462 रुपए है।

समन्वित प्रयासों और सहयोग से बैतूल बनेगा मॉडल नगर: हेमंत खंडेलवाल

केंद्रीय मंत्री और विधायक ने टिकारी- गाड़ाघाट मार्ग का किया भूमिपूजन

बैतूल। 7 करोड़ 90 लाख की लागत से बनने वाले 2.70 किलोमीटर लंबे सडक़ टिकारी-गाड़ाघाट मार्ग (बैतूल स्टेशन मार्ग) का केंद्रीय राज्यमंत्री दुर्गादास उईके और भाजपा प्रदेश अध्यक्ष एवं विधायक बैतूल हेमंत खंडेलवाल ने शनिवार को भूमिपूजन किया। इस अवसर पर नगर पालिका अध्यक्ष श्रीमती पार्वती बाई बारस्कर, नगर पालिका उपाध्यक्ष महेश राठौर, उपाध्यक्ष जिला पंचायत हंसराज धुर्वे, भाजपा जिला अध्यक्ष सुधाकर पवार, के वार्डवासियों को बधाई देता हूं। विकास की गंगा जिले में इसी प्रकार प्रवाहित होती रहेगी। विधायक श्री खंडेलवाल ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि क्षेत्र की इस सडक़ की मांग लंबे समय से की जा रही थी। सडक़ अत्यंत क्षतिग्रस्त हो चुकी थी। लगभग एक वर्ष पूर्व इस सडक़ की स्वीकृति मिल चुकी थी, परंतु पहले इसकी स्वीकृति गाड़ाघाट से हनुमान मंदिर तक ही थी। लेकिन नगर कारगिल चौक से यह पूरा मार्ग सबसे व्यवस्त मार्ग हैं। जिसके

आनंद प्रजापति, महेंद्र सिंह चौहान, श्रीमती रजनी राजेश वर्मा, सतीश मालवीय, विक्रम वैध, विकास मिश्रा सहित अन्य जनप्रतिनिधि तथा कार्यपालन यंत्री पीडब्ल्यूडी श्रीमती प्रीति पटेल सहित अन्य गणमान्य नागरिक उपस्थित रहें। केंद्रीय मंत्री श्री उइके ने कहा कि विधायक श्री खंडेलवाल के प्रयासों से बहुप्रतीक्षित मांग आज पूरी हो रही हैं। जिस मार्ग का बजट पहले लगभग 2 करोड़ था, उसे विधायक जी ने अपने प्रयासों से बढ़ाकर लगभग 8 करोड़ किया है। लगातार बैतूल विकास की दृष्टि से सर्वाधिक विकसित जिला बढ़ने की और आगे बढ़ रहा हैं। आज भारत वर्ष 2047 तक सर्वाधिक विकसित, संपन्न राष्ट्र बनने की ओर गतिशील है। इस उपलब्धि लिए अब मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव और लोक निर्माण विभाग मंत्री द्वारा कारगिल चौक से गाड़ाघाट तक इस सडक़ निर्माण के लिए 7.90 करोड़ की बजट स्वीकृत किया गया है। स्थायी सडक़ निर्माण के लिए बड़ी राशि स्वीकृत की गई है। उन्होंने कहा कि विगत कुछ महीनों में इस मार्ग पर से अतिक्रमण भी चिन्हित कर हटाए गए हैं। मैं सभी नागरिकों से अपील करता हूँ कि यदि स्वेच्छा से अपने अतिक्रमण हटा लें, तो सबसे अधिक सुविधा स्वयं उन्हें ही मिलेगी। आने वाले समय में वार्डों की सडक़ों पर भी इसी तरह स्वेच्छा से अतिक्रमण हटाने का सहयोग मिले, ताकि नालियों को भी पर्याप्त जगह मिल सके। ताकि सडक़ व्यवस्थित और पर्याप्त चौड़ी हो।

बैतूल मॉडल शहर के रूप में होगा विकसित

चौपाटी निर्माण के लिए भी एक करोड़ रुपये की राशि स्वीकृत की गई है। सभी के सहयोग से बैतूल को एक मॉडल शहर के रूप में विकसित होगा। श्री खंडेलवाल ने कहा कि किसी भी स्थिति में निर्माण कार्यों की गुणवत्ता से समझौता स्वीकार नहीं किया जाएगा। कालापाठा से चक्कर रोड की गुणवत्ता की प्रशंसा सभी ने की है और इसी प्रकार सदर व बडोरा रोड के निर्माण की भी प्लानिंग जारी है। बैतूल को चारों दिशाओं से जोड़ने के प्रयास किए जा रहे हैं। बैतूल-भोपाल मार्ग पर बरेठा मार्ग से फॉरेस्ट के हिस्से संबंधित समस्याओं का भी स्थाई निराकरण किया जा रहा है। दो बड़े रोड बैतूल-अमरावती और बैतूल-आशापुर रोड की स्वीकृति भी प्राप्त हुई है। जिसके निर्माण से जो बड़े उद्योग बैतूल में निवेश के लिए उत्सुक हैं, उन्हें भी सुविधा मिलेगी। पथ विक्रेताओं के लिए भी रोजी रोटी का संकट निर्मित न हो इसके लिए अस्थायी और स्थायी दोनों व्यवस्थाएँ इस प्रकार बनाई जा रही हैं कि किसी की जीवन-व्यवस्था प्रभावित न हो। शहर सुव्यवस्थित दिखे और किसी का रोजी रोटी भी प्रभावित न हो इसके लिए सभी के समन्वित प्रयास और सहयोग की आवश्यकता हैं।

बैतूल बनेगा पानी की दृष्टि से समृद्ध जिला

आने वाले दो-तीन सालों में बैतूल पानी की दृष्टि से भी सबसे समृद्ध और विकसित जिला होगा। सबसे ज्यादा डैम बैतूल जिले में बन रहें है। उत्तम पेयजल व जल सुविधाओं को सुनिश्चित किया जा रहा है, जिससे बड़े उद्योगों को भी यहाँ स्थापित होने में सुविधा मिलेगी। सडक़, बिजली, पानी और उद्योग–हर क्षेत्र में हम सबके संयुक्त प्रयासों से बैतूल जिला निरंतर प्रगति की ओर बढ़ रहा है, जिससे बैतूल एक उभरते हुए महानगर के रूप में विकसित होगा। मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव के नेतृत्व में औद्योगिक निवेश और व्यवसाय को प्रोत्साहन देने का प्रदेश व्यापी अभियान जारी हैं। श्री खंडेलवाल ने कहा कि सभी प्रकार चौक चौराहे विशेष रूप से टिकारी के चौक के चौड़ीकरण के लिए 50-50 लाख रुपये स्वीकृत किए गए हैं। प्रत्येक वार्ड की मांग अनुसार खेल मैदान एवं पार्क विकसित किए जाएंगे। अंत में, उन्होंने सभी मतदाताओं से आग्रह करता हूँ कि विशेष गहन पुनरीक्षण अभियान के तहत गणना पत्रक अवश्य भरें। यह हम सभी नागरिकों की जिम्मेदारी है कि कोई भी पात्र मतदाता सूची से बाहर न रह जाए और कोई भी अपात्र व्यक्ति मतदाता सूची में शामिल न हो।

7 करोड़ 90 लाख में पुल व रिटेनिंग वॉल भी शामिल

कारगिल चौक से पुराने बच्चा जेल होते हुए गाडाघाट से ओल्ड एनएच तक 2.70 किलोमीटर लंबे मार्ग के निर्माण कार्य को राज्य शासन द्वारा 789.35 लाख रुपये प्रशासकीय स्वीकृति प्रदान की गई है। इस महत्वपूर्ण मार्ग पर कारगिल चौक से बच्चा जेल तथा बालाजी विहार से ओल्ड एनएच तक 1920 मीटर लंबाई में 10 मीटर चौड़ाई वाली सीसी सडक़ का निर्माण किया जाएगा। वहीं अखाड़ा चौक से बालाजी विहार तक 220 मीटर लंबाई में 7 मीटर चौड़ी सीसी सडक़ का निर्माण होगा। बच्चा जेल से अखाड़ा चौक तक 560 मीटर लंबाई में 5.50 मीटर डामरीकृत सडक़ बनाई जाएगी। मार्ग पर स्थित गाडाघाट की क्षतिग्रस्त पुलिया पर एक नए पुल का निर्माण प्रस्तावित है। सडक़ सुरक्षा और मजबूती को ध्यान में रखते हुए 40 मीटर लंबी रिटेनिंग वॉल बनाई जाएगी। मार्ग पर रोड मार्किंग, संकेतक बोर्ड और शोल्डर निर्माण भी किया जाएगा। निर्माण क्षेत्र के विद्युत अवरोधों को दूर करने हेतु विद्युत पोल स्थानांतरण का प्रावधान रखा गया है। इस परियोजना का कार्य एजेंसी मेसर्स कपिल शर्मा, भोपाल को सौंपा गया है। यह सडक़ बैतूल शहर के उत्तर-पश्चिमी हिस्से में आवागमन को सुगम बनाएगी और कारगिल चौक से ओल्ड एनएच तक तेज एवं सुरक्षित और सुगम यातायात का मार्ग प्रदान करेगी।

नागालैंड की यात्रा के लिए रवाना हुए छात्र-छात्राएं

शिक्षकों ने शुभकामनाएं देकर किया रवाना

बैतूल। एक भारत श्रेष्ठ भारत के अंतर्गत जिले से छात्र-छात्रा को लेकर शिक्षिका शनिवार नागालैंड की यात्रा पर रवाना हुई। उल्लेखनीय है कि विभिन्न प्रांतो एवं क्षेत्रों की विविधता भरी सभ्यता, संस्कृतियों से बच्चों को परिचित कराए जाने एवं अनेकता में एकता की समृद्ध अपनी संस्कृतियों पर गर्व करने के उद्देश्य से अन्य राज्यों एवं क्षेत्रों के रहन-सहन, खान-पान, वेशभूषा, सांस्कृतिक, साहित्यिक गतिविधियों से परिचित होने के उद्देश्य से देश के विभिन्न राज्यों को अन्य राज्यों से जोड़ा गया है। मध्यप्रदेश को नागालैंड एवं मिजोरम से जोड़ा गया है। इन राज्यों के बच्चों द्वारा एक-दूसरे की संस्कृतियों को समझने और आदान-प्रदान

करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जा रही है। सांदीपनि विद्यालय घोड़ाडोंगरी के प्राचार्य विवेक तिवारी के कुशल मार्गदर्शन में विभिन्न विद्यालयों के बच्चों द्वारा इस गतिविधि के तहत किए गए प्रदर्शन के फल स्वरुप सांदीपनि शाला घोड़ाडोंगरी की कला संकाय कक्षा 11 वीं की छात्रा कुमारी प्रतिज्ञा पुत्री श्रवण उईके एवं उच्च माध्यमिक शिक्षक उमेश शर्मा के मार्गदर्शन में शासकीय उमावि भदूस के कक्षा 11वीं विज्ञान संकाय के छात्र गोपाल पुत्र पुष्प कुमार डिगरसे का चयन नागालैंड राज्य के भ्रमण के लिए किया गया है। इसके अंतर्गत इन छात्र-छात्राओं को लेकर सांदीपनी शाला घोड़ाडोंगरी से मार्गदर्शी शिक्षिका श्रीमती ललिता चंदेल के साथ 6 दिवसीय दौरे पर नागालैंड के लिए रवाना किया गया। कार्यक्रम के तहत यह छात्र-छात्राएं भोपाल से दिल्ली तक वंदे भारत ट्रेन एवं दिल्ली से नागालैंड की यात्रा वायुयान से तय करेंगे। 28 नवंबर को इन बच्चों की वापसी होगी। रेलवे स्टेशन पर विभागीय योजना अधिकारी सुबोध शर्मा, जिला आईटी समन्वयक विनोद पडलक, शिक्षक उमेश शर्मा, पालक पुष्प कुमार डिगरसे, वीरेंद्र पाटिल इत्यादि द्वारा यात्रा की शुभकामनाएं प्रेषित करते हुए रवाना किया गया।

जल संरक्षण को बढ़ावा देने ग्राम बाचा में ग्रामीणों ने किया बोरी बंधान

बैतूल। मध्य प्रदेश जन अभियान परिषद घोड़ाडोंगरी ने शनिवार को ग्राम बाचा में जल संरक्षण को बढ़ावा देने के लिए 125 बोरियों का बोरी बंधान निर्माण कार्य संपादित किया गया। इस गतिविधि का उद्देश्य जल स्त्रोतों के संरक्षण, भू-जल स्तर के संवर्धन एवं जनसहभागिता से स्थानीय जल प्रबंधन को सुदृढ़ करना रहा। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में मध्य प्रदेश जन अभियान परिषद उपाध्यक्ष व राज्यमंत्री दर्जा मोहन नागर ने शिरकत की। इस अवसर पर श्री नागर ने जल संरक्षण के महत्व पर प्रकाश डालते हुए बताया कि जल संचय अभियान संपूर्ण मध्य प्रदेश में जन अभियान परिषद द्वारा व्यापक स्तर पर संचालित किया जा रहा है, जिसमें जनभागीदारी निरंतर बढ़ रही है। उपाध्यक्ष श्री नागर ने कहा कि जिले में यह अभियान 30 दिसंबर 2025 तक निरंतर रूप से जारी रहेगा, जिसके अंतर्गत विभिन्न ग्रामों में छोटे-छोटे बोरी बंधान एवं स्टॉप-डैम का निर्माण किया जाएगा, जिससे जल संरक्षण की दिशा में महत्वपूर्ण सकारात्मक परिणाम प्राप्त होंगे। कार्यक्रम के अंत में अनिल द्वारा सभी अतिथियों, नवांकुर संस्थाओं एवं ग्रामीणजनों के प्रति आभार व्यक्त किया गया। इस अवसर पर जिला पंचायत सदस्य राजेंद्र कवडे, प्रमुख, ग्राम पर्यटन समिति अनिल उइके, नवांकुर संस्था एकता ग्रामीण जन सहयोग श्याम बेलवंशी, बज्जरवाड़ा से पवन परते, संजय यादव, खदारा से संजय धुर्वे, जन अभियान परिषद से विकासखंड समन्वयक घोड़ाडोंगरी संतोष सिंह राजपूत तथा बड़ी संख्या में ग्रामीणजन शामिल रहे और उन्होंने बोरी बंधान निर्माण में सक्रिय सहयोग प्रदान किया।

भरण-पोषण आदेश न मानने पर पति को जेल

आमला कोर्ट ने 7 साल से राशि न देने पर एक साल कैद की सजा सुनाई

बैतूल। जिले के आमला में भरण-पोषण आदेश का पालन न करने पर अदालत ने एक व्यक्ति को एक साल साधारण कारावास और 10 हजार रुपये जुर्माने की सजा सुनाई है। यह कार्रवाई घरेलू हिंसा एवं महिला संरक्षण अधिनियम 2005 की धारा 31 के तहत की गई। बताया जा रहा है कि जिले में इस आदेश का पालन न करने पर यह पहली सजा है। मामला वर्ष 2010 का है, जब पत्नी ने स्वयं और बच्चों के लिए शिकायत दर्ज कराई थी। आरोप था कि पति ने बिना तलाक लिए दूसरी शादी कर ली और किसी भी तरह का भरण-पोषण देने से इंकार कर रहा था। न्यायिक मजिस्ट्रेट प्रथम श्रेणी कुशाग्र अग्रवाल की अदालत ने मामले की सुनवाई की। अदालत ने पत्नी और दो बच्चों के लिए कुल 10,000 रुपये मासिक भरण-पोषण का आदेश दिया था, जिसमें सीआरपीसी की धारा 125 के तहत 5,000 और घरेलू हिंसा अधिनियम के तहत 5,000 रुपये शामिल थे। यह आदेश वर्ष 2010 से प्रभावी था। पति ने 2018 में आदेश के खिलाफ अपील भी की, लेकिन अपील खारिज हो गई। इसके बावजूद उसने सात वर्षों तक एक भी किस्त जमा नहीं की। लगातार अवहेलना को अदालत ने संरक्षण आदेश का गंभीर उल्लंघन माना। अदालत ने जुर्माने की पूरी राशि पीड़िता को देने के निर्देश दिए। पीड़ित पक्ष के अधिवक्ता राजेंद्र उपाध्याय ने बताया कि आमला न्यायालय में यह पहला मामला है, जिसमें भरण-पोषण और संरक्षण आदेश न मानने पर आरोपी को सजा दी गई है।

जिला विकास सलाहकार समिति का गठन

बैतूल। प्रदेश के प्रत्येक जिले में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की अध्यक्षता में जिला विकास सलाहकार समिति का गठन किया गया है, जिसमें जिला बैतूल अंतर्गत उपाध्यक्ष प्रभारी मंत्री नरेंद्र शिवाजी पटेल, सदस्य के रूप में सांसद (बैतूल-हरदा हरसूद), समस्त विधायकगण, जिला मुख्यालय के नगरपालिका अध्यक्ष, जिला पंचायत अध्यक्ष, समस्त जनपद अध्यक्ष एवं सदस्य सचिव कलेक्टर जिला बैतूल शामिल हैं। मध्यप्रदेश शासन के लोक स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा राज्यमंत्री तथा जिले के प्रभारी मंत्री नरेन्द्र शिवाजी पटेल द्वारा जिला विकास सलाहकार समिति में विभिन्न क्षेत्रों से 20 प्रतिनिधियों को समिति में नामांकित किया गया है। इसमें उद्योग, व्यापार, प्रगतिशील किसान, सामाजिक सेवा, चिकित्सा एवं विधि क्षेत्र से सक्रिय कार्य करने वाले प्रतिष्ठित जनों को शामिल किया गया है। प्रभारी कलेक्टर बैतूल अक्षत जैन द्वारा जारी आदेश के अनुसार जिला विकास सलाहकार समिति में समाजसेवी क्षेत्र के पं. कांत दीक्षित, लोहिया वार्ड बैतूल गंज, ओमकार टिटारे दुनवा वि.ख. मुलताई, पी.जे. शर्मा मराठदेव वार्ड क्र.1 सारनी, अनिल सिंह कुशवाह, बाजार चौक चिचोली, अशोक सिंह गौतम, आदर्श धनोरा को शामिल किया है। इसी प्रकार प्रगतिशील किसान क्षेत्र के नरेंद्र शुक्ला, तिलक वार्ड बैतूल बाजार, घनश्याम धाकड़ ताईखेडा रायआमला, सुधाकर कोसे मगरडोह शाहपुर, संतोष चौहान दामजीपुरा भीमपुर, चिरौंजी पटेल आमला को शामिल किया है। चिकित्सा क्षेत्र के डॉ. अशोक बारंगा, मोती वार्ड थाना रोड बैतूल, डॉ. जी.ए. बारस्कर मुलताई, डॉ. विजय कुमार शर्मा घोड़ाडोंगरी, डॉ. अरुण जयसिंगपुरे सीटी हॉस्पिटल टिकारी बैतूल को शामिल किया है। विधि क्षेत्र के सुधाकर पवार एड. तिलक वार्ड बैतूलबाजार, जयदीप सिंह रुनवाल एड. कोठीबाजार सीमेंट रोड बैतूल तथा संजय तिवारी एड. वार्ड क्र.13 भैंसदेही को शामिल किया गया। उद्योग एवं व्यापार क्षेत्र के दीपक कपूर विकास वार्ड कालापाठा, मंजीत सिंह साहनी टैगोर वार्ड बैतूल तथा नंदन साहू बोरदेही आमला, को समिति सदस्य के रूप में शामिल किया है।

जिला विकास सलाहकार समिति की जिम्मेदारियां- जिले की जनता, जनप्रतिनिधियों व अन्य हितधारकों की जरूरतों और सुझावों के अनुसार जिले के दीर्घकालीन विकास की योजनाएं बनाना। जिले के परंपरागत कौशल को चिन्हित कर, प्रधानमंत्री के वोकल फॉर लोकल के सिद्धांत के दृष्टिगत उन्हें राष्ट्रीय अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बढ़ावा देते हुए जिले की समृद्धि का रोडमैप तैयार करना। जिले की स्थानीय परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए शासकीय योजनाओं को बेहतर तरीके से लागू करने के सुझावों पर विचार करना। जिले में स्थानीय प्रयासों से प्रचलित नवाचारों को योजना के रूप में मूर्त रूप देना। जिले में रोजगार सृजन एवं विकसित मध्यप्रदेश के लक्ष्यों के संबंध में सुझाव देना। उद्योग, व्यापार, जल संरचनाओं के संरक्षण, निर्यात, कृषि, खनिज, पर्यावरण आदि क्षेत्रों में जिले की कार्य योजना के लिए सुझाव देना है।

सरदार वल्लभ भाई पटेल की 150वीं जयंती पर मांडवी से आठनेर तक भव्य यूनिटी मार्च का आयोजन

देशभक्ति पर केंद्रित सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति, यूनिटी मार्च का समारोहपूर्वक समापन

केंद्रीय मंत्री और प्रदेश अध्यक्ष यूनिटी मार्च में हुए शामिल

बैतूल। मेरा युवा भारत बैतूल युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय भारत सरकार द्वारा सरदार वल्लभ भाई पटेल जी की 150वीं जन्म जयंती के अवसर पर देशभर में आयोजित किए जा रहे यूनिटी मार्च श्रृंखला के तहत शनिवार को जनपद आठनेर के ग्राम मांडवी स्थित गणेश कॉलेज से भव्य एकता पदयात्रा निकाली गई। लगभग 8 किलोमीटर लंबी यह यूनिटी मार्च पुलिस ग्राउंड, आठनेर में समारोह पूर्वक संपन्न हुई। कार्यक्रम में केंद्रीय जनजातीय कार्य मंत्री दुर्गादास उईके तथा प्रदेश अध्यक्ष एवं विधायक हेमन्त खंडेलवाल मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। सरदार पटेल अमर रहें, भारत माता की जय, वंदे मातरम जैसे जोशीले नारों के साथ स्कूली विद्यार्थियों, सामाजिक संगठनों और बड़ी संख्या में नागरिकों ने उत्साहपूर्वक मार्च में भाग लिया। समारोह को संबोधित करते हुए विधायक हेमंत खंडेलवाल ने कहा कि सरदार वल्लभ भाई पटेल जी की 150वीं जयंती पर प्रदेशभर में एकता के संदेश को जनजन तक पहुंचाने के उद्देश्य से यूनिटी मार्च का आयोजन किया जा रहा है। उन्होंने कहा

कि आजादी के बाद 500 से अधिक रियासतों का एकीकरण सरदार पटेल की अद्भुत सूझबूझ और राष्ट्रनिष्ठा का अप्रतिम उदाहरण है। महात्मा गांधी के एक भारत के स्वप्न को साकार करने का श्रेय सरदार पटेल को ही जाता है। उन्होंने युवा पीढ़ी से आह्वान किया कि वे लौह पुरुष के जीवन मूल्यों और राष्ट्रनिष्ठ आदर्शों का अनुसरण कर भारत को सशक्त और समृद्धि के पथ पर आगे बढ़ाएं। उन्होंने बताया कि नागपुर से आरंभ हुई भव्य यूनिटी यात्रा सोमवार को बैतूल पहुंचने वाली है, जिसका जिले में ऐतिहासिक स्वागत किया जाएगा। साथ ही उन्होंने कहा कि बैतूल रोजगार, शिक्षा, चिकित्सा और अधोसंरचना के क्षेत्र में लगातार नई ऊँचाइयों की ओर अग्रसर है।

केंद्रीय मंत्री दुर्गादास उईके ने सरदार पटेल की जयंती पर सभी नागरिकों को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि लौह पुरुष के असाधारण व्यक्तित्व और राष्ट्र निर्माण के प्रति उनके समर्पण से प्रेरणा लेकर युवा पीढ़ी देश के संरक्षक के रूप में आगे आए। उन्होंने बताया कि किस प्रकार अत्यंत चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में सरदार पटेल ने विखंडित भारत को एक सूत्र में पिरोने का ऐतिहासिक और असंभव-सा लगने वाला कार्य पूरा किया। कार्यक्रम में सुधाकर पवार, कृष्णा गायकी, गोवर्धन राणे, श्रीमती सुषमा जगताप और जनपद अध्यक्ष श्रीमती रोशनी इवने सहित विभिन्न जनप्रतिनिधि उपस्थित रहे। सीनियर उत्कृष्ट छात्रावास और कन्या छात्रावास आठनेर के विद्यार्थियों द्वारा देशभक्ति पर केंद्रित आकर्षक सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दी गईं। जिला युवा अधिकारी सुषमा गवली द्वारा अतिथियों को स्मृति चिन्ह भेंट किए गए। कार्यक्रम के अंत में सुधाकर पवार ने सभी को आत्मनिर्भर भारत के संकल्प के साथ स्वदेशी अपनाने की शपथ दिलाई। कार्यक्रम में राष्ट्रगीत वंदे मातरम का भी लयबद्ध गायन हुआ।

हिंदी सिनेमा में ऐसे कई एक्टर्स हैं, जो एक ही नाम शेयर करते हैं. जैसे अक्षय कुमार और अक्षय खन्ना। यूं तो इंग्लिश में दोनों अलग-अलग तरह से इसे लिखते हैं, पर हैं तो अक्षय ही। वैसे एक और अक्षय है, जिसकी तीन बड़ी फिल्में अगले साल रिलीज होने जा रही है। आज 2026 में 7 बार धमाल मचाने आ रहे तीन अलग-अलग अक्षय के प्रोजेक्ट्स की बात करेंगे।

2026 में 7 बार आएंगे 3 'अक्षय'

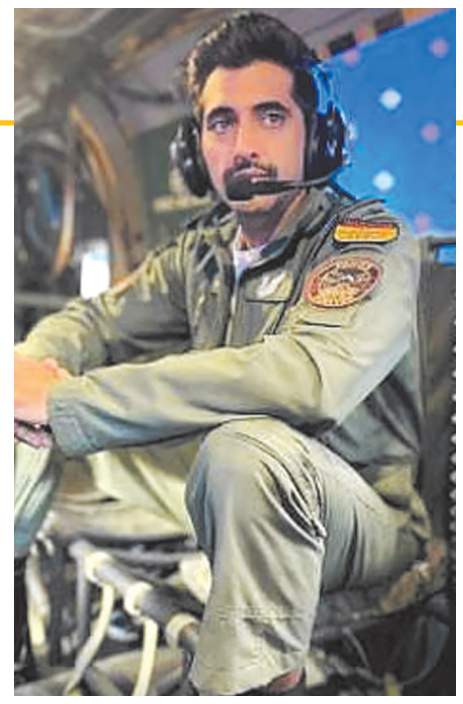

इस दुनिया में एक ही नाम के न जाने कितने ही लोग होंगे। एक मिनट पहले आप शायद किसी 'मनोज' से मिले और फिर चौथा व्यक्ति भी 'मनोज' ही निकले। ठीक उसी तरह हिंदी सिनेमा में भी आपको एक ही नाम के कई एक्टर्स देखने को मिले। जहां कुछ ने इंडस्ट्री में आने से पहले नाम ही बदल लिया। कुछ ऐसे भी हैं, जिनका असली नाम कुछ और है, जबकि वो दूसरे नाम से धूम मचा रहे हैं। बस फर्क इतना है कि किसी ने बॉक्स ऑफिस पर खूब राज किया। अब बॉलीवुड के तीन अक्षय की बात। बेशक तीनों की पहचान अलग है और तीनों का करियर भी अलग-अलग पड़ाव पर है। लेकिन, एक ही नाम के चलते लोग कभी न कभी कन्फ्यूज जरूर हुए होंगे।

जैसे ही 'अक्षय' का नाम आता है, तो हर किसी को खिलाड़ी कुमार ही याद आ जाते हैं. और ऐसा होना भी आम बात है। क्योंकि, उनका करियर जबरदस्त रहा। सिर्फ अक्षय से एक्टर और फिर सुपरस्टार बन गए। अक्षय लगातार इंडस्ट्री में

एक्टिव हैं। साथ ही कई बड़ी फिल्मों पर काम कर रहे हैं। पर, जिस एक्टर को लेकर इस वक्त माहौल तगड़ा है, वो अक्षय खन्ना है, जिनकी दिसंबर में फिल्म 'धुरंधर' आ रही है। जबकि, अगले साल आने वाली पिक्चर का फर्स्ट लुक सामने आ गया। रही सही कसर अक्षय ओबेरॉय पूरी करने के लिए आ रहे हैं।

अक्षय खन्ना इस साल अपने अंदाज से भौकाल काटने वाले एक्टर हैं। जिसे औरंगजेब कहेंगे या धुरंधर, पर अब वो एक बड़ी वापसी की तैयारी में हैं। इस साल विकी कौशल की 'छावा' रिलीज हुई थी, जिसमें वो ही औरंगजेब बने थे। फिल्म ने 700 करोड़ से ज्यादा का कारोबार किया। साथ ही बॉक्स ऑफिस पर ब्लॉकबस्टर रही थी। वहीं 5 दिसंबर को उनकी 'धुरंधर' भी रिलीज होने जा रही है। जिस फिल्म में वो खूंखार विलेन वाले अंदाज में दिखने वाले हैं।

फिलहाल उनकी नई फिल्म की हर जगह बात हो रही है। जल्द ही वो एक सुपरहीरो फिल्म का हिस्सा बने दिखाई देंगे। पिक्चर 'महाकाली' में वे शुक्राचार्य का रोल कर रहे हैं। यह फिल्म देवी काली पर बेस्ड है। यह पिक्चर अगले साल रिलीज की जाएगी। दरअसल, अक्षय खन्ना ने रोमांटिक ड्रामा 'हिमालय पुत्र' से अपने करियर की शुरुआत की थी। इसके बाद कई फ्लॉप फिल्में दी और कई हिट। पर, उन्होंने फिल्म मॉम, इत्तेफाक, सेक्शन 375, दृश्यम-2 समेत 'छावा' के लिए खूब तारीफें बटोरी। अब एक बार भी उन्हें लेकर माहौल बना हुआ है।

अक्षय कुमार का पलड़ा यूं तो बाकी दोनों एक्टर्स में भारी है। पर, साल 2025 में वो कोई ब्लॉकबस्टर फिल्म नहीं दे पाए। उन्होंने 'स्काई फोर्स' से शुरुआत की, इसके बाद 'केसरी चैप्टर 2' आई और फिर 'हाउसफुल 5' में काम किया। पर. पिछली फिल्म 'जॉली एलएलबी 3' से काफी इंप्रेस किया। एक पिक्चर सेमी-हिट रही, तो एक हिट लिस्ट में जगह बनाने में कामयाब रही थी। अब उनकी अगली फिल्मों की बारी है, जिनपर काम किया जा रहा है।

अक्षय कुमार अगले साल 'हैवान' लेकर आ रहे हैं, जिसे प्रियदर्शन के साथ बनाया है और उनके अपोजिट सैफ अली खान नजर आने वाले हैं। यह मोहनलाल की फिल्म 'ओप्पम' का हिंदी रीमेक है, जिसे उस वक्त भी काफी शानदार रिस्पॉन्स मिला था। कहा जा रहा है कि अक्षय कुमार के साथ भी मोहनलाल दिखाई देंगे। जिस दूसरी फिल्म के लिए अक्षय कुमार और प्रियदर्शन साथ आएंगे, वो है 'भूत बंगला।' हॉरर कॉमेडी जॉनर में अक्षय कुमार का बड़ा कमबैक हो रहा है। यह फिल्म भी अप्रैल, 2026 में रिलीज होने जा रही है।

जिस तीसरी फिल्म का सबको इंतजार है, वो अक्षय कुमार की 'वेलकम टू द जंगल' है। इस साल फिल्म को रिलीज किया जाना था. पर काम कंप्लीट न होने के चलते अटक गई। अपडेट मिला था कि जल्द ही फिल्म का काम शुरू कर दिया जाएगा। 'वेलकम' के पहले पार्ट्स को भी काफी प्यार मिला था, जो 2007 में रिलीज हुई, जिसने दुनियाभर से 100 करोड़ से ज्यादा का कारोबार किया था। वहीं, 'वेलकम बैक' को साल 2015 में रिलीज किया गया था, जिसने 168 करोड़ का कलेक्शन किया था। ये वो फिल्में हैं, जिनका अनाउंसमेंट किया जा चुका है। बीच में और भी फिल्में आ सकती हैं।

अक्षय ओबेरॉय की बारी आखिरी में आती है। इंडियन-अमेरिकन एक्टर ने हिंदी सिनेमा में कई फिल्मों और वेब सीरीज में काम किया है। 2002 की फिल्म 'अमेरिकन चाय' से बतौर चाइल्ड आर्टिस्ट फिल्मी करियर की शुरुआत की। साथ ही कालाकांडी, जंगली, लव हॉस्टल, थार, गैस लाइट और 'फाइटर' जैसी फिल्मों का हिस्सा है। साल 2026 में एक्टर सबसे पहले यश की 'टॉक्सिक' में नजर आने वाले हैं, जो मार्च में रिलीज की जाएगी। यह रॉकिंग स्टार यश की फिल्म है, जिसमें उन्होंने अपना रोल बताया था। दूसरी 'रेजिडेंट' है, उनका इस पिक्चर में इंटेंस रोल होगा। इस फिल्म को साल 2026 में ही रिलीज करने की प्लानिंग की जा रही है। हालांकि, उनके करियर की सबसे बड़ी फिल्म 'किंग' होने वाली है। शाहरुख खान की फिल्म अगले साल यानी 2026 में आएगी। पर, पिक्चर की डेट पर अभी मुहर नहीं लगी।

रियल बॉक्स

सिनेमा के परदे पर कला और नग्नता के सवाल

हेमंत पाल
लेखक 'सुबह सवेरे' इंदौर के स्थानीय संपादक है।

फिल्मों में कला और नग्नता के सवाल पर समय-समय पर बड़ा बवाल और बहस छिड़ता रहता है। भारतीय सिनेमा में यह विषय विशेष रूप से संवेदनशील है, जहाँ कलात्मक अभिव्यक्ति, सेंसरशिप और सामाजिक मूल्य आपस में टकराते हैं। भारतीय फिल्मों में नग्नता का चित्रण पश्चिमी सिनेमा की तुलना में बहुत सीमित और रूढ़िवादी है, मुख्यतः भारत की सांस्कृतिक और पारंपरिक विरासत, और सख्त सेंसरशिप के कारण। केंद्रीय फिल्म प्रमाणन बोर्ड फिल्मों में नग्न और बोल्ड दृश्यों को नियंत्रित करता है। स्पष्ट नग्नता की अनुमति नहीं है और अक्सर फिल्मों को प्रमाणन देने से पहले उनसे ऐसे दृश्य हटाने को कहा जाता है। फिर भी नग्नता, बोल्ड सीन्स या फोटोशूट को लेकर कई बार बड़े सितारे और फिल्में विवादों में आ जाते हैं जैसे आमिर खान की 'पीके' या रणवीर सिंह का फोटोशूट। श्वेता मेनन जैसे कलाकारों पर अश्लीलता फैलाने के आरोप में कानूनी कार्रवाई तक हो चुकी है। कुछ लोग मानते हैं कि नग्नता भी कला का अभिन्न हिस्सा हो सकती है, क्योंकि मानव शरीर का चित्रण सदियों से चित्रकला, मूर्तिकला और साहित्य में रहा है। दूसरी ओर कई लोगों का मानना है कि फिल्मों में नग्नता महिलाओं के वस्त्र पहनने की आदत, सामाजिक मूल्यों की गिरावट और अपराध को बढ़ावा देती है, और यह 'अश्लीलता' की श्रेणी में आती है।

जब कोई दृश्य कब 'कला' है और कब वह अश्लीलता, सामाजिक मानदंडों, संदर्भ और प्रस्तुति की शैली के हिसाब से बदलती रहता है इसका कोई मापदंड नहीं है। भारतीय सेंसर बोर्ड के नियम अस्पष्ट है और कभी-कभी मनमाने से लगते हैं। लेकिन, एक प्रकार के दृश्य किसी फिल्म में पास और कभी भी बैन हो सकते हैं। डिजिटल युग में खुले तौर पर उपलब्ध अंतरराष्ट्रीय कंटेंट के कारण 'सेंसरशिप' को लेकर नई बहस भी छिड़ी है कि क्या संस्कृति की रक्षा के नाम पर कलाकारों की स्वतंत्रता बाधित की जा सकती है। फिल्मों में नग्नता का सवाल केवल कलात्मक दृष्टि, अभिव्यक्ति की आज़ादी या सेंसरशिप भर नहीं है, बल्कि यह समाज के नैतिक मूल्यों, सामाजिक प्रगति, सांस्कृतिक बोध और महिलाओं की स्थिति जैसे गहरे सवालों से भी जुड़ा है। हर बार जब कोई फिल्म या दृश्य विवाद में आता है, यह पुराने सवालों को फिर से जीवित कर देता है कि क्या कला के नाम पर सब कुछ जायज है! आखिर कलात्मक नग्नता और अश्लीलता की सीमाएं कौन तय करेगा। इस विषय पर समाज में लगातार मंथन, तर्क-वितर्क और विमर्श की आवश्यकता है, ताकि कला और संवेदनशीलता के बीच संतुलन बना रहे।

आजादी के कुछ सालों बाद जब देश प्रेम वाली फिल्मों की संख्या घटी, तो फिल्मकारों ने नए विषयों की खोज की! इसके बाद ही नायिका के अंग-प्रत्यंग से दर्शकों को लुभाने के प्रयास शुरू हुए! इस आंधी से राज कपूर व मनोज कुमार जैसे सार्थक फिल्म बनाने वाले निर्माता भी नहीं बच सके। राज कपूर ने 'सत्यम शिवम सुंदरम' व 'राम तेरी गंगा मैली' में तथा मनोज कुमार ने अपनी लगभग सभी फिल्मों में ग्लैमर, सेक्स व अंग प्रदर्शन को बखूबी से भुनाया। लेकिन, इन दोनों ही फिल्मकारों ने ग्लैमर को बहुत ही कलात्मक ढंग और ऐसे

दृश्यों को फिल्माया कि उन पर जिस्म प्रदर्शन का आरोप नहीं लगा! जबकि, दूसरी तरफ हृषिकेश मुखर्जी, गुलजार, श्याम बेनेगल तथा प्रकाश झा जैसे फिल्मकारों की ऐसी जमात थी, जो इस आंधी के बीच भी मकसद पूर्ण फिल्में बनाने में लगे रहे! एक ऐसा दौर भी आया जब ऐसी फ़िल्में खूब बनी। 90 और 2000 के दशक को इसी रूप में जाना जाता है, जब सेक्स और व एक्शन फिल्में बहुत बनी! कहा यह गया ये सब डूबते फिल्म उद्योग व ग्लैमर व्यवसाय को बचाने के नाम पर किया गया। 2000 के बाद का दशक जरूरत से ज्यादा बोल्ड निकला। सेक्स व अंग प्रदर्शन के इस फार्मूले को इस दौर में ज्यादा विकृत तरीके से फिल्माया गया। सशक्त एवं सार्थक फिल्म बनाने वाले महेश भट्ट व उनकी अभिनेत्री बेटी पूजा भट्ट ने जिस्म, पाप, मर्डर जैसी फिल्में बनाकर इसे नया चेहरा दे दिया।

शोहरत और पैसा कमाने के लालच में कई अभिनेत्रियों ने भी हर तरह के समझौते किए। देखा जाए तो कला का इससे अधिक पतन दूसरी किसी विधा में नहीं हुआ। आदिकाल से ये सवाल जिंदा रहा है कि कला वास्तव में कला के लिए है या जीवन के लिए? कंदराओं में बैठकर कोई कलाकार क्या लिखता, चित्रित करता अथवा गाता है उसका तो समाज पर कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ता! पर, जब जनता के लिए कोई रचना गढ़ी जाती है तो उसका असर मानव मन पर ही नहीं, अंतर्मन पर भी गहरा पड़ता है। यह सर्वमान्य है कि दृश्य काव्य बहुत शीघ्र तथा अधिक काल तक अपना प्रभाव रखता है। देश में महिलाओं को अशिष्ट रूप में प्रस्तुत करने पर दंड देने के लिए कानून है। सीधा सा अर्थ है कि अश्लीलता का मतलब है नग्नता! जबकि, फिल्मों में कई बार कला और कथित स्टोरी की डिमांड के नाम पर महिला शरीरों को निर्लज्जता पूर्वक लगभग बिना कपड़ों के ही दर्शाया जाता है, इसे कौन स्वीकारेगा?

हॉलीवुड की फिल्मों में नग्नता और हिंसा के चरम सीमा पर पहुँच जाने, फिल्म-निर्माताओं की असीम आकांक्षा, लालसा और ललक ने भी फिल्म के कलापक्ष का ताबूत खड़ा करने का प्रयास किया! लेकिन, बॉलीवुड के निर्माता यह तथ्य भूल गए कि तीन दशक पहले इसी सेक्स और हिंसा की बैसाखी पर खड़ी जापानी, फ्रेंच, स्वीडन एवं ब्राजील की फिल्मों ने भले ही विश्व बाजार में खड़े होने के पायदान ढूंढ लिए थे। लेकिन, अंततः उनकी यही लालसा उनके पतन का कारण भी बनी! अंत में सशक्त एवं संवेदनशील फिल्मों की ओर लौटकर उन्हें अपनी अस्मिता बचानी पड़ी थी। अन्यथा उस दौर में उन्मुक्त सेक्स व नग्नता का जितना खुला प्रदर्शन जापान, फ्रांस, स्वीडन, बाजील व पोलैंड की फिल्मों में हुआ था, उतना अन्यत्र कहीं नहीं! यहाँ तक कि हॉलीवुड भी इसमें पीछे रह गया था। अब इस दौराहे पर भारतीय फ़िल्मकार क्या करें? सवाल लाख टके का है, पर जवाब तो दर्शक ही देंगे कि वे क्या देखना पसंद करेंगे। लेकिन, भारतीय फिल्मों को अगले स्तर पर ले जाने के लिए दोहरी मानसिकता से निजात पाना जरूरी है। हम खजुराहो जाते हैं और वहां नग्न मूर्तियों को देखकर उसे कला कहते हैं। जबकि, फिल्मों में अगर नग्नता दिखाई जाए तो हम हाय-तौबा मचाते हैं! इस दोहरी मानसिकता से और इस पाखंड से बाहर निकलना होगा। इसलिए जरूरी है कि सरकार और सेंसर बोर्ड को अपनी मानसिकता बदलना होगी।

- hemantpal60@gmail.com/ 9755499919

नसीरुद्दीन कहेंगे सागर के अशोक मिज़ाज़ के शेर

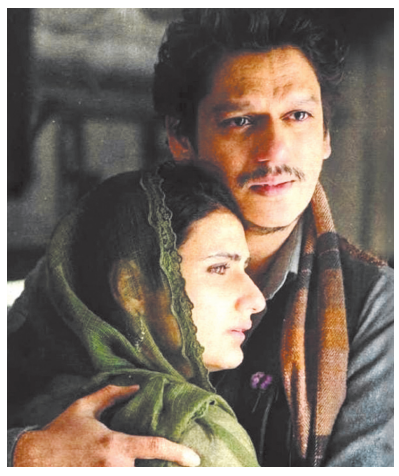

मुंबई फ़िल्म जगत की बहुप्रतीक्षित प्रेम कहानी 'गुस्ताख़ इश्क़' में इस बार बुंदेलखंड के साहित्यिक हस्ताक्षर, प्रसिद्ध गज़लकार अशोक मिज़ाज़ की शायरी का जादू दर्शकों पर चलेगा। मिज़ाज़ साहब के लिखे कई शेर फ़िल्म के डायलॉग्स के बीच पिरोए गए हैं, जिन्हें अभिनेता नसीरुद्दीन शाह अपनी आवाज़ देंगे। यह बुंदेलखंड के साहित्यिक जगत के लिए एक बड़ी उपलब्धि है। प्रसिद्ध फैशन डिज़ाइनर मनीष मल्होत्रा द्वारा निर्मित और फिल्म हवाईज़ादा फेम विभु पुरी द्वारा निर्देशित यह फिल्म 28 नवंबर को सिनेमाघरों में रिलीज़ हो रही है। फिल्म में विजय वर्मा, फातिमा सना शेख, नसीरुद्दीन शाह और शारिब हाशमी मुख्य भूमिकाओं में हैं।

फिल्म में नसीरुद्दीन शाह एक उस्ताद शायर की भूमिका निभा रहे हैं। हाल ही में रिलीज हुए ट्रेलर में मिज़ाज़ साहब के दो शेर सुनाई दे रहें, जिसमें नसीरुद्दीन शाह की आवाज़ में 'गम कोई देना है तो दे दे मुझे, दिल में रख लूंगा निशानी की तरह .... तो विजय वर्मा की आवाज में 'मेरा लहजा कैक्टस सा खुरदुरा, तेरी बातें रात रानी की तरह ....'सुनाई दे रहा है। इस फ़िल्म में मिज़ाज़, मशहूर संगीतकार विशाल भारद्वाज और गीतकार गुलजार के साथ हैं। उन्होंने बताया कि विशाल भारद्वाज के साथ यह उनका दूसरा प्रोजेक्ट है। इससे पहले, उन्होंने 2020-21 में रिलीज़ हुई फिल्म 'सोन चिरैया' के लिए गीत नैना ने मार गोरी भर के चाहे दुनाली मार दे' रीक्रिएट किया था। मिज़ाज़ ने बताया कि विशाल भारद्वाज से परिचय लगभग 20-25 साल पुराना है। एक ज़माने में मैं और विशाल भारद्वाज दोनों मशहूर शायर बशीर बद्र साहब की शागिर्दी में थे। इस नाते विशाल भारद्वाज मेरे गुरु भाई हैं। पिछले कुछ सालों से बशीर बद्र की तबीयत नासाज़ होने के बाद वो मुझसे इस्लाह लेते हैं। मिज़ाज़, जो हिंदी-उर्दू गज़लकारों के एक बड़े हस्ताक्षर माने जाते हैं। उनकी 12 ग़ज़ल संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। उनको हिंदी और उर्दू ग़ज़ल पर अब तक विभिन्न राज्यों से कई बड़े पुरुस्कार मिल चुके हैं। इनकी ग़ज़लों पर पांच विश्वविद्यालयों में पीएचडी हुई है। चार इंडो-पाक मुशायरों के अलावा देशभर में अखिल भारतीय मुशायरों और कवि सम्मेलनों में यह फ़िल्मी उपलब्धि उनकी रचनात्मक यात्रा में एक नया आयाम जोड़ती है।

लम्बी पारी खेलकर बॉलीवुड के बिदा कामिनी कौशल

अशोक जोशी

बॉलीवुड के बारे में अक्सर कहा जाता है कि यहां नायिकाओं की पारी ज्यादा लम्बी नहीं होती है। लेकिन, इस मिथक को गुजरे जमाने से लेकर आज के जमाने तक रूपहले पर्दे को जगमग कर सबसे लम्बी पार खेल कर रुखसत होने वाली कामिनी कौशल ने झूठा

साबित किया। उन्होंने अपनी फिल्मी पारी 1946 आरम्भ की जो हाल तक जारी रही। 98 साल की उम्र में उन्होंने दुनिया से बिदा लेकर सबसे लम्बी पारी खेलने वाली हीरोइन होने का जो कीर्तिमान बनाया है उसे आज के हालात में तोडना नामुमकिन ही लगता है।

कामिनी कौशल देश की सबसे उम्रदराज एक्ट्रेस रही हैं। वे उन अभिनेत्रियों में रही हैं, जिन्होंने अपने करियर में तो शानदार अभिनय किया ही, साथ ही वो बॉलीवुड की वो एक्ट्रेस भी रहीं, जो सबसे ज्यादा उम्र जीकर गईं। उम्र के अंतिम पड़ाव तक भी वो काम करती रहीं और यही वजह है कि उन्हें दर्शकों ने खूब प्यार दिया। देखा जाए तो सिनेमा के अन्दर और बाहर कामिनी कौशल ने कई कीर्तिमान बनाए। वह आधुनिकता को साकार करने वाली उन गिनी-चुनी अभिनेत्रियों में थी जिन्होंने दिलीप कुमार जैसे दिग्गज के साथ रोमांटिक जोडी बनाई और मनोज कुमार ने 'उपकार' में प्राण के साथ उनकी छबि बदल कर रख दी। 'उपकार' में कामिनी कौशल ने कौशल्या माता के समान ममतामयी मां के किरदार को जीवित कर दिया। इसके बाद तो वह उसी तरह से मनोज कुमार की स्थायी मां बन गई जैसे निरूपा राय अमिताभ की मां के रूप में चर्चित हुई।

साल 1927 में 16 फरवरी को लाहौर में जन्मी कामिनी कौशल का असली नाम उमा कश्यप था। कामिनी के पिता प्रो शिवराम कश्यप पंजाब यूनिवर्सिटी, लाहौर में बॉटनी के प्रोफेसर हुआ करते थे। उन्होंने पौधों की छह नई प्रजातियों की खोज की थी। कामिनी दो भाइयों और तीन बहनों में सबसे छोटी थीं। महज 7 साल की उम्र में ही कामिनी के सर से पिता का साया हट गया था। अपने करियर के आरम्भ में वह नाटकों में काम करने लगीं। कामिनी कौशल महज नौ साल की उम्र से ही अभिनय की दुनिया में आ गई थीं। उनके बड़े भाई ने एक छोटी फिल्म बनाई थी 'द ट्रैजेडी।' इसमें उन्होंने अभिनय किया था। कामिनी कौशल ने लाहौर से ही अंग्रेजी में में बीए किया था। चेतन आनंद भी लाहौर से थे तथा वह कामिनी के भाई के दोस्त भी थे। उन्होंने ही

कामिनी कौशल आवाज सुनकर ही उन्हें 1946 में फिल्म 'नीचा नगर' का ऑफर दिया और यहीं से कामिनी के फिल्म सफर की शुरुआत हुई। कामिनी की फिल्म 'नीचा नगर' कान फिल्म फेस्टिवल में गई और तो और उन्हें पाल्मे डोर पुरस्कार भी मिला। उसके बाद उन्होने देव आनंद के साथ 'जिद्दी' भी की थी।

'नीचा नगर' के बाद कामिनी कौशल ने कई बड़ी फिल्मों में काम किया। आजादी के दौरान वो देश की सबसे लोकप्रिय अभिनेत्री बनकर उभरी। इस दौरान उन्होंने शहीद, नदिया के पार, आग, जिद्दी, शबनम, आरजू और बिराज बहू समेत कई फिल्मों में काम किया। एक जमाने के बाद उनका फिल्मी सफर थम सा गया था। लेकिन, मनोज कुमार की फिल्म 'शहीद' में उन्होंने मनोज कुमार की मां की भूमिका निभाई। इस भूमिका में वह इतनी जमी कि अपने निर्देशन में बनने वाली पहली फिल्म 'उपकार' में मनोज कुमार ने उन्हें ममतामयी माँ की भूमिका दी जो अपने सगे और सौतेले बेटे में कोई फर्क नहीं करती। इसके बाद तो मनोज कुमार की सभी फिल्मों का वह स्थायी चेहरा बन गई।

फिल्मों में जहां कामिनी कौशल का करियर हिट रहा, तो वहीं निजी जीवन में भी वो खूब चर्चा में रहीं। दिलीप कुमार के साथ उनकी जोडी ही नहीं, बल्कि उनका नाम भी इस हद तक जुड़ा कि उन्हें दिलीप कुमार की पहली गर्लफ्रेंड के रूप में जाना जाने लगा। साल 1948 में आई फिल्म 'शहीद' में दोनों साथ नजर आए थे। इस फिल्म में दोनों ने काम किया और यहीं से दोनों की नजदीकियां बढ़ीं। उन दिनों यह अफवाह भी जोरों पर थी कि दोनों शादी तक करने वाले है। लेकिन, कामिनी के भाईयों को ये रिश्ता मंजूर नहीं था, क्योंकि कामिनी पहले से ही शादीशुदा थीं।

जहां तक उनकी शादी की बात है तो वे भी किसी फिल्मी कहानी की तरह ही चौंकाने वाली थी। उनकी बहन की एक दुर्घटना में मृत्यु हो गई थी। उस समय उनके बच्चे छोटे छोटे थे। उन बच्चों की देखभाल करने

के लिए उन्होंने अपने ही जीजा से शादी कर ली और यह जिम्मेदारी उन्होंने मरते दम तक निभाई। शायद यही कारण है कि पर्दे पर उन्होंने ममतामयी माँ की भूमिका भी उतनी ही शिद्दत के साथ निभाई। वे हिंदी फिल्मों की एकमात्र ऐसी अभिनेत्री थीं, जिन्होंने शादी के बाद भी सबसे लंबे समय तक सिल्वर स्क्रीन पर अभिनय किया। उनकी सबसे हाल की फिल्म थी आमिर खान की 'लालसिंह चड्ढा' जो 2022 में आई थी। उस समय कामिनी कौशल की उम्र 95 साल.थी।

अभिनय के साथ कामिनी कौशल समाज सेवा से भी जुड़ी रहीं। कम ही लोगों को पता है कि वह एक सेलिब्रिटी डॉल मेकर थी। उनकी बनाई गुड़ियाएं देश-विदेश तक लोकप्रिय हुई तथा वह महंगे दामों पर बिकती थी। यह उस दौर की बात है जब बार्बी का जन्म तक नहीं हुआ था। कामिनी कौशल एक प्रतिभाशाली अभिनेत्री थीं, जो अपनी उत्कृष्ट अभिनय के साथ-साथ एक कुशल कठपुतली कलाकार भी थीं। उन्होंने बच्चों के लिए कठपुतली शो बनाए, जो मनोरंजन के साथ-साथ नैतिक शिक्षा भी देते थे। उन्होंने बच्चों की कहानियां भी लिखी और कठपुतली कला को पेशेवर रूप दिया, जिससे यह उनकी बहुमुखी प्रतिभा का प्रमाण बना। कामिनी कौशल को कठपुतली कला का बहुत शौक था और उन्होंने इसे बच्चों के मनोरंजन के लिए एक माध्यम बनाया। उन्होंने अपनी अभिनय प्रतिभा और कठपुतली कला का संयोजन किया, जिससे उनके शो न केवल मनोरंजक बल्कि ज्ञानवर्धक भी होते थे।

उन्होंने बच्चों के लिए 'पराग' पत्रिका में कहानियां लिखी और दूरदर्शन पर बच्चों के लिए कार्यक्रम भी बनाए। उन्होंने कठपुतली के लिए लंदन में एक कार्यशाला में प्रशिक्षण भी लिया और कला के प्रति अपने समर्पण को प्रदर्शित किया। कामिनी कौशल ने राज कपूर, दिलीप कुमार, देव आनंद राज कुमार और दिलीप कुमार से लेकर धर्मेंद्र जैसे कई दिग्गजों के साथ बड़े पर्दे पर काम किया। लंबे वक्त तक वो बॉलीवुड की बड़ी हीरोइन रहीं। उम्र के आखिरी पड़ाव में भी उन्होंने काम किया। आमिर खान की 'लालसिंह चड्ढा' और शाहिद कपूर की 'कबीर सिंह' में भी वो नजर आईं। इन्हीं यादों को देकर कामिनी कौशल अब सबसे दूर जा चुकी हैं और उनके द्वारा सिनेमा में दिया योगदान हमेशा याद रखा जाएगा

रील्स से रोजगार और बेड रॉटिंग की समस्या

डिजिटल वर्ल्ड
मनीष जैसल
लेखक मीडिया शिक्षक हैं।

डिजिटल शॉर्ट-वीडियो यानी रील्स आज भारत के युवाओं के लिए सिर्फ मनोरंजन का साधन नहीं रहे। रील अब धीरे-धीरे एक नया आर्थिक ढाँचा यानि क्रिएटर इकोनॉमी बनते जा रहे हैं। हालिया राष्ट्रीय आंकड़ों और उद्योग-रिपोर्टों के आधार पर भारत में करीब 2.5 लाख सक्रिय डिजिटल क्रिएटर हैं जिनके पास 1,000 से अधिक फॉलोअर्स हैं। हालाँकि इनमें से मात्र 8से10त्न ही अपने प्रभावी रूप से अपने कंटेंट से पैसा कमा पा रहे हैं। पूरे क्रिएटर-इकोनॉमी की आज की अनुमानित वैल्यू अरबों डॉलर में है और इसमें दशकीय वृद्धि की संभावनाएँ भी उज्जवल दिखाई दे रही हैं।

इसी वर्ष वेव्स 2025 के उद्घाटन समारोह में देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा था कि आज जब दुनिया की कल्पना बढ़ रही है, तब भारत अपनी कहानियों को विश्व के समक्ष प्रस्तुत करने के लिए तैयार है। मैं देश के युवाओं से आग्रह करता हूँ अपनी एक अरब अनकही कहानियाँ दुनिया को सुनाइए ।

इसी क्रम में अगर हम देखे तो बिहार चुनाव प्रचार के दौरान हाल ही में उनका यह भाषण इसे विस्तार देने का काम करता है। समस्तीपुर बिहार चुनावी सभा में उन्होंने कहा कि अब हमने ऐसा तंत्र तैयार किया है कि 1 जीबी डेटा की कीमत अब एक कप चाय से भी कम हो गई है। बिहार के युवाओं को इस डिजिटल अवसर से सबसे अधिक लाभ मिल रहा है। जिनके लिए रील्स-वाले माध्यम से कमाई का अवसर खुला है।

शोध और उद्योग विश्लेषण यह स्पष्ट करते हैं कि शॉर्ट-फॉर्म वीडियो प्लेटफॉर्म मुख्यतः विज्ञापनों और ब्रांड-इंटीग्रेशन पर निर्भर हैं, जिसके कारण कंटेंट क्रिएटरों की आमदनी में भारी असमानता देखी जाती है। कुछ शीर्ष स्तर के क्रिएटर ब्रांड डील, प्रायोजित पोस्ट और इवेंट या मर्चेंडाइजिंग के माध्यम से प्रतिमाह लाखों रुपये तक कमा लेते हैं, जबकि अधिकांश क्रिएटर अभी भी आंशिक या पार्ट-टाइम आय पर निर्भर हैं। इसलिए यह कहना गलत नहीं होगा कि रील्स से 'रोजगार' सबके लिए स्थायी जीवन-निर्वाह का साधन नहीं है । असली चुनौती है स्थिर आय, सामाजिक सुरक्षा और कर-मान्यता जैसी नीतिगत व्यवस्थाओं का अभाव होना। उद्योग रिपोर्ट यह भी इंगित करती हैं कि शॉर्ट-फॉर्म वीडियो से मिलने वाला विज्ञापन राजस्व अभी कुल डिजिटल विज्ञापन बाजार का छोटा, लेकिन तेजी से बढ़ता हुआ हिस्सा है। यदि इसके लिए सुविचारित नीतियाँ और बाजार नवाचार नहीं किए गए, तो यह क्षेत्र अस्थिरता और असमानता के जोखिम में भी फँस सकता है।

रील-निर्माण की प्रक्रिया युवाओं के लिए रचनात्मकता, आत्म-ब्रांडिंग और माइक्रो-आंत्रेप्रेन्योरशिप के अवसर देती है। कई युवा फ्रीलांस-बेस्ड ब्रांड-डील, अफिलिएट-मार्केटिंग, लाइव-टिपिंग और अपनी सेवाओं (जैसे शॉर्ट-फिल्म, मॉन्टाज, क्लाइंट-कंटेंट) के माध्यम से आय उत्पन्न कर रहे हैं। हालाँकि इस 'नए रोजगार' की स्थिरता पर दीर्घकालिक अध्ययन सीमित है , यही वजह है कि नीति-निर्माताओं को ठोस आंकड़ों पर आधारित योजना बनानी होगी।

रील-संस्कृति से जुड़े जोखिम भी अब बड़ी संख्या में बढ़ रहे हैं। कुछयुवा 'वायरल-होने' की चाह में जोखिमपूर्ण स्टंट करते हैं, सार्वजनिक स्थानों पर असुरक्षित शूट करते हैं या असली-झूठी आत्महत्या/आक्रोश दिखाने जैसे नाटकीय कदम उठाते हैं, जिनके परिणामस्वरूप गंभीर चोटें या मृत्यु तक हो चुकी हुई है। अखबारों में दर्ज घटनाओं के उदाहरण जैसे सागर-नदी में तीन किशोरों की डूबने की घटना, अलग-अलग स्थानों पर शूटिंग के दौरान हुई दुर्घटनाएँ यह दर्शाते हैं कि यह एक वास्तविक सामाजिक और स्वास्थ्य समस्या बन रही है। इन घटनाओं का एकीकृत, राष्ट्रीय-स्तरीय डेटाबेस फिलहाल उपलब्ध नहीं है, पर मीडिया-रिपोर्टिंग और स्थानीय पुलिस द्वारा जो जा रही जानकारी यह संकेत देती हैं कि जाने-अनजाने हुई मौतें और गंभीर क्षति बढ़ रही हैं। इसलिए दुर्दनाक घटनाओं के पैटर्न को पहचानने हेतु संगठित डेटा-कलेक्शन आवश्यक है।

रील्स का प्रभाव अब भारतीय समाज के विविध आयामों जैसे शासन-प्रशासन, शिक्षा या मानवीय संवेदना में देखा जा सकता है । गुजरात के चिखलदा गाँव के सरपंच रिंपिन गमित ने इंस्टाग्राम रील्स का उपयोग सरकारी योजनाओं को सरल भाषा में समझाने के लिए किया। उन्होंने केवल 70 दिनों में 20 छोटे वीडियो बनाए, जिन्हें 11.5 लाख से अधिक लोगों ने देखा, और इन रील्स की मदद से 125 से अधिक ग्रामीणों को पेंशन, आवास और छात्रवृत्ति जैसी योजनाओं का वास्तविक लाभ मिला। वहीं, मुंबई की युवा डिजिटल क्रिएटर अपूर्वा मुखीजा, जिन्हें ◦द रेबेल किड◦ के नाम से जाना जाता है, ने अपने रील्स के जरिये लाखों दर्शकों को आकर्षित किया और अब वह एक सफल ब्रांड इन्फ्लुएंसर बन चुकी हैं। उनकी कहानी यह दिखाती है कि रील्स ने युवाओं के लिए रोजगार और आत्मनिर्भरता के नए द्वार खोले हैं। असम के जोरहाट जिले की मात्र दस वर्षीय वरन्या बोरबोरा ने भी इसी मंच के माध्यम से 20 लाख से अधिक फॉलोअर्स जुटाकर शिक्षा और मानसिक स्वास्थ्य जैसे संवेदनशील विषयों पर राष्ट्रीय स्तर पर चर्चा शुरू की। वहीं, उत्तर प्रदेश से एक अप्रत्याशित किंतु मानवीय घटना सामने आई है, एक महिला ने आठ वर्ष से लापता अपने पति को एक इंस्टाग्राम रील में पहचान लिया और पुलिस को सूचना देकर उसे वापस घर लाने में सफल रही। ये सभी मामले यह दर्शाते हैं कि रील्स केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं रहीं, बल्कि सामाजिक जागरूकता, जनहित, शिक्षा, रोज़गार और मानवीय संवेदना के प्रसार का एक नया डिजिटल सेतु बन चुकी हैं।

मनोवैज्ञानिक व व्यावहारिक वैज्ञानिक शोध यह दिखाते हैं कि शॉर्ट-फॉर्म स्क्रोलिंग और लगातार कण्टेण्टिव उपभोग युवाओं की नींद, ध्यान केंद्र और मानसिक सुकून पर विपरीत प्रभाव डालते हैं । इसे 'डूम-स्क्रोलिंग', 'बेड-रॉटिंग' या 'स्क्रीन-पंडिक्शन' के रूप में पहचाना जा रहा है। क्रॉस-सेक्शनल अध्ययनों ने खासकर किशोर और युवा वयस्क समूहों में ज्यादा स्क्रीन-समय के साथ अवसाद और चिंता के लक्षणों के सहसम्बन्ध दिखाए हैं । इसलिए रील-आधारित रोजगार के फायदे तभी टिकाऊ होंगे जब रील बनाने वाले लोगों को मानसिक-स्वास्थ्य व डिजिटल-लिटरेसी संसाधन भी उपलब्ध हों।

सरकार को तीन महत्वपूर्ण कदमों पर ध्यान देने की जरूरत है। पहला, क्रिएटर इकोनॉमी के लिए एक संस्थागत ढांचा तैयार किया जाए, जिसमें टैक्स में कुछ राहत, छोटे आर्थिक सहयोग (ग्रांट) और सामाजिक सुरक्षा की सुविधाएँ शामिल हों। दूसरा, डिजिटल सुरक्षा और जोखिम प्रबंधन से जुड़ी शिक्षा को स्कूलों और कॉलेजों में अनिवार्य किया जाए, ताकि युवा क्रिएटर सुरक्षित शूटिंग, अनुमति के नियम और आपातकालीन स्थितियों से निपटने के तरीके सीख सकें। तीसरा, प्लेटफॉर्म रेगुलेशन को मजबूत किया जाए, ताकि खतरनाक या जोखिम भरे कंटेंट की निगरानी हो सके और मीडिया कंपनियों की जिम्मेदारी तय की जा सके। साथ ही, एक राष्ट्रीय घटना रजिस्टर बनाया जाए, जिसमें रील या कंटेंट निर्माण से जुड़ी दुर्घटनाओं का रिकॉर्ड रखा जाए, जिससे भविष्य की नीतियाँ ठोस और तथ्य-आधारित बन सकें।

रील के बढ़ते चलन के बीच युवाओं के बीच 'बेड रोटिंग' जैसी प्रवृत्ति तेजी से बढ़ रही है। यानि लंबे समय तक बिना किसी उद्देश्य के बिस्तर पर पड़े रहना, मोबाइल चलाना या कुछ भी न करना । यह देखने में आराम या ◦सेल्फ-केयर◦ जैसा लगता है, लेकिन वास्तव में यह मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य दोनों के लिए हानिकारक है। हाल की रिपोर्टों के अनुसार, सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर bedrotting से जुड़ी पोस्ट्स की संख्या 32.9 मिलियन से अधिक हो चुकी है, जो इस प्रवृत्ति की व्यापकता को दर्शाती है। विशेषज्ञों के मुताबिक, लगातार निष्क्रिय रहना नींद के पैटर्न, ऊर्जा स्तर और मानसिक स्थिरता को प्रभावित करता है। एक भारतीय अध्ययन में यह पाया गया कि कई युवा रोजाना 3 से 4 घंटे या उससे अधिक समय 'कम उद्देश्य' वाले कार्यों जैसे फोन स्क्रॉल करने या बेड पर निष्किय पड़े रहने में बिताते हैं। ऐसे युवाओं ने ध्यान केंद्रित करने में कठिनाई, पढ़ाई में देरी और मूड में अस्थिरता जैसी समस्याएँ महसूस कीं। खासकर क्रिएटर और डिजिटल प्लेटफॉर्म पर काम करने वाले युवाओं में यह समस्या अधिक दिखाई दे रही है, क्योंकि अनियमित दिनचर्या, अत्यधिक स्क्रीन-टाइम और प्रदर्शन के दबाव से थकान और मानसिक थकावट बढ़ जाती है। इसलिए जरूरी है कि 'बेड रोटिंग' को आराम का तरीका नहीं, बल्कि एक चेतावनी संकेत के रूप में समझा जाए यह बताता है कि व्यक्ति को संतुलित दिनचर्या, शारीरिक गतिविधि और मानसिक स्वास्थ्य पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है।

रील्स ने भारतीय युवाओं के लिए नये आर्थिक अवसर खोले हैं पर वे आगाह भी करते हैं कि यह अवसर अनिश्चित, जोखिम-पूर्ण और असंगठित भी है। शोध-आधारित नीति-हस्तक्षेप, सार्वजनिक-स्वास्थ्य उपाय और प्लेटफॉर्म-जिम्मेवारी के बिना यह क्षेत्र कुछ के लिए रोजगार बनकर कुछ के लिए संकट भी बन सकता है। इसलिए सरकार, प्लेटफॉर्म्स और नागरिक-समाज को मिलकर रचनात्मकता को सुरक्षित, टिकाऊ और समावेशी बनाना होगा ताकि डिजिटल-युवा न केवल 'वायरल' हों, बल्कि स्थायी और सुरक्षित आजीविका भी पा सकें।

...और क्या कह रही है ज़िंदगी
ममता तिवारी
लेखिका साहित्यकार हैं।

प्लेसीबो इफेक्ट-भ्रम के शिकार का, बिना नुकसान इलाज

प्लेसीबो इफेक्ट। हम इस विषय पर क्यों बात कर रहे हैं क्योंकि अनजाने में हम सालों से इस विषय पर काम कर रहे हैं और कारगर भी हैं। तो क्या है प्लेसिबो इफेक्ट? हम हिंदी में इसे प्रायोगिक औषध प्रभाव कहते हैं परंतु यह एक मनोवैज्ञानिक घटना है जिसमें हम किसी निष्क्रिय दवा, उपचार और हाँ बातों से भी रोगी को काफी कुछ सकारात्मक दिशा में ले जाकर ठीक किया जा सकता है क्योंकि इसमें पीड़ित व्यक्ति जब यह विश्?वास करता है कि इन दवाओं (जो सिर्फ शक्कर की गोली है) या मीठी बातों से मैं ठीक हो सकता हूँ। हम माँ बचपन में बच्चों के पेट दर्द (जो स्कूल ना जाने का एक बहाना हो सकता है) में उनके पेट पे धीरे धीरे हाथ घुमाती हैं। उसे अच्छा और सुरक्षित महसूस होता है। अब तो जब भी उसके पेट में दर्द होता था वो कहता, माँ तुम्हारे हाथ में जादू है हाथ घुमाते ही पेट दर्द चला जाता है (पर ध्यान रखती हूँ ये सचमुच वाला पेट दर्द तो नहीं)। प्लेसिबो इफेक्ट से जाने वाला दर्द मनोवैज्ञानिक, काल्पनिक होता है कई बार पर कई जान लेवा बीमारियों में हम जिन्हें ठीक नहीं कर पाते उनके दर्द को कम कर सकते हैं। हम खुद को भी ये प्रभाव दे सकते हैं (जिसे मेनिफेस्टिशन से भी जोड़ सकते हैं)।

मैं खुद को कई बार असमंजस में पाती थी क्या जो दवाईयाँ मैं ले रही हूँ वो कारगर हैं? ब्लड प्रेशर, शुगर नापते रहने वालों के लिये, समय पर ना उठने वालों के लिये, घड़ी आगे कर देना, जो हर समय ये कहते हैं, अरे हमारे साथ ही ऐसा क्यों होता है। प्लेसीबो एक चीनी की गोली, नमक का पानी, कभी कभी एक नकली सर्जरी भी हो सकती है। मेरी माँ डीमेंशिया से पीड़ित थीं। उन्हें हर बात पे दवाई खाने का रोग था। हमने शक्कर की गोलियाँ रखी थीं। चलते-फिरते किसी से भी कहती, आज भूख नहीं है, सरदर्द है, बुखार है, अच्छा नहीं लग रहा। हम लोग उन्हें शक्कर की गोली दे देते थोड़ी देर में ही वो कहती तूने बहुत अच्छी दवाई दी।

बच्चों पे माँएँ बचपन से इस प्रभाव का उपयोग कर रही हैं। गिरते ही चोट पर फूंक मारना और बच्चे का पुनः खेलने दौड़ जाना। एक स्त्री के बाल झड़ने का रोना या बहुत काम है, हम तो थक गये जैसे वाक्यों पे रोज कहें, अरे! तुम्हारे बाल फलाँ तेल से वापस आने लगे, अरे तुम चुटकियों में काम कर लेती हो, कभी थकती नहीं, फलाँ तो हमेशा थकने का राग अलापती है। इस विषय पर बात करते हैं अनुभवी साइकोलॉजिस्ट डॉ. सीमा विजयवर्गीय से।

ममता- सीमा जी, सबसे पहले बताइये प्लेसीबो इफेक्ट की आवश्यकता क्यों महसूस हुई?

डॉ. सीमा - दरअसल कई बार कुछ लोगों को भ्रम हो जाता है कि वो किसी बीमारी के शिकार हैं दरअसल जो होते नहीं हैं। देखिये जैसे झुग्गीवासी हमारे हेल्पर्स झोलाछाप डॉक्टर से बोतल (चाहे उसमें पानी भरा हो) लगा के दो घंटे में काम पे आ जाते हैं। ऐसे लोग, बच्चे जो स्कूल ना जाने के बहाने बनाते हैं, हिस्टीरिकल स्त्री, पुरुष जो ध्यान आकर्षण के लिये फिट का बहाना करते हैं।

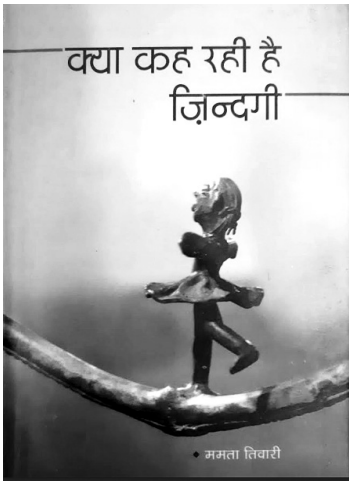

ममता- तो क्या वास्तव में बीमार मरीजों के लिये प्लेसीबो इफेक्ट का कोई मतलब नहीं?

डॉ. सीमा- देखिये जैसा कि हिंदी में हम इसे प्रायोगिक औषध प्रभाव भी कहते हैं तो इसका उपयोग दवाओं के परीक्षण के लिये भी करते हैं। जब कैंसर जैसी लाइलाज बीमारियों में जब दर्द अधिक होता है और दवायें काम नहीं कर रही हैं तब हम मनोवैज्ञानिक तरीकों से, प्लेसीबो प्रभाव का उपयोग कर उनकी काउंसिलिंग कर दर्द कम करने की कोशिश करते हैं वहीं दवायें असर करती हैं जो उन्हें दी जा रही हैं अर्थात् दवा के साथ मानसिक सहयोग उनकी तकलीफ कम करता है।

ममता- कई लोग इसका गलत फायदा भी उठा सकते हैं?

डॉ. सीमा- नैदानिक परीक्षण में एक व्यक्ति को गोली दी जा सकती है जो वास्तव में प्लेसीबो है लेकिन वह सोचता है कि वह एक नई दवा ले रहा है और बेहतर महसूस कर रहा है इसे ब्लाइंड ट्रायल भी कहते हैं। कई लोग अपनी दवाओं को मार्केट में लाने के लिये दुरुपयोग करते हैं। उन दवाओं के साइड इफेक्ट बहुत बुरे होते हैं।

ममता- तब तो इसका कानूनी पहलू भी होगा कि आप रोगी या उसके परिवार वालों को बिना बताये उस पर प्रयोग कर रहे हैं?

डॉ. सीमा- साइड इफेक्ट होने पर, बात खुलने पर कानून की मदद ली जा सकती है।

ममता- चलिये हम अब मनोवैज्ञानिक तरीके से इसे देखें।

डॉ. सीमा- यह प्रभाव मस्तिष्क की अपेक्षाओं और विश्वासों पर आधारित होता है, जिससे शरीर में कुछ वास्तविक, शारीरिक प्रतिक्रियाएं होती हैं। उदाहरण के लिये प्लेसीबो के कारण मस्तिष्क एंडोर्फिन जैसे दर्द निवारक रसायन जारी कर सकता है जिससे दर्द कम होता है।

कुछ उदाहरण हैं। प्लेसीबो लेने वाले एक रूप ने, माइग्रेन के दर्द में सुधार बताया ऐसे कि मानो उन्होंने गोली खाई हो। कोई व्यक्ति जिसे शराब ना दी हो पर उसे कहा जाये कि उसे एल्कोहल दिया गया है तो उसे नशे का अहसास हो सकता है हम इसे उल्टा भी इस्तेमाल कर सकते हैं शराब छुड़ाने के लिये।

ममता- कूल मिलाकर अगर ड्रग ट्रायल वाले गलत मुंह को छोड़ दें तो प्लेसीबो प्रभाव लोगों की भलाई के लिये है।

डॉ. सीमा- यह बताता है कि कैसे रोगी की अपेक्षायें उपचार के आसपास का माहौल किसी व्यक्ति की भलाई को प्रभावित कर सकता है। जीवन शैली की आदतों जैसे व्यायाम ध्यान के लाभ भी बढ़ा सकता है हम कह सकते हैं फलाँ व्यायाम या इतने मिनट के ध्यान से आप का सुधार होगा क्योंकि व्यक्ति इन गतिविधियों को एक सकारात्मक चिकित्सा अनुष्ठान के रूप में देखता है।

तो दोस्तों मैंने माना आस्था, श्रद्धा, विश्वास, पूजा पाठ भी एक तरह का प्लेसीबो प्रभाव है (यदि उससे फायदा हो रहा है) अंगूठी पहनते ही उसे लगने लगता है अरे मेरा सब भला हो रहा है (चाहें आपके कर्मों से हो रहा हो) पर अतिरिक्त विश्वास मिलने पर फायदा हो तो विश्वास करने में ना चूकें अंधविश्वासी ना बनें बल्कि अपने चारों तरफ प्लेसीबो प्रभाव फैलायें (कृपया वो सकारात्मक हो) और मुस्कुरा कर पूछते रहें एक दूसरे से और क्या कह रही है ज़िंदगी?

वृक्ष : रक्षति रक्षित

बोहरा बाखल तहसील रोड़ सुवासरा जहां पेड़ काटा नहीं गया।

वक्रोक्ति
मुकेश नेमा
लेखक मध्य प्रदेश के वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी हैं।

वे निकले तो कवि बनकर निकले

एक रिश्तेदार है साहब के। बाप ने स्कूल में दाखिले के वक्त कम उमर लिखवाई थी इसलिए बासठ के बजाय छाछठ तक नौकरी करते रहे। ठीक ठाक टाईप के सरकारी थे। चुप्पे से आदमी। साहब को पूरी उम्मीद थी ये बचा हुआ जीवन अपने बगीचे की खतपतवार की देखरेख करते हुए बिताएँगे।कभी कभार दुआ सलाम होती रहेगी ,और जैसे दूसरे रिश्तेदारों से निभाई जाती है इनसे भी निभा ली जाएगी।

साहब के ये रिश्तेदार अच्छे भले आदमी थे। शरीफ थे। शरीफ थे इसलिए उनके बारे मे कहने सुनने जैसा कुछ नही था। फिर कोरोना आया। घर में दो साल बंद रहे। निकले तो कवि बनकर निकले। कवि भी ऐसे वैसे नही। श्रंगार रस के कवि। कवियों के जितने भी प्रकार होते हैं उनमें श्रंगार रस का कवि सबसे अधिक मारक होता है। और कवि यदि भूतपूर्व सरकारी हो तो वो नीम चढ़े करेले से कम नहीं होता।

उनके कवि होने की सूचना समय रहते मिल चुकी थी साहब को। पर थे रिश्तेदार। पत्नी के चचेरे भाई। साले थे इसलिए पूरी सावधानी के बावजूद उनसे बचना मुश्किल था। कवि हो चुके साले एक सुबह पधारे घर। पर्याप्त मात्रा में कविताएँ लिख चुके थे इसलिए अब किताब छपवाने के चक्कर में थे। वो किताब छपवाएँ साहब को क्या एतराज हो सकता था ? पर दिक्कत यह कि उन्हें अपने जीजा के पढ़े लिखे होने की खबर थी और वो चाहते थे कि जीजाजी उनके कविता संग्रह की भूमिका लिखें।

साहब अनमने हुए इस बेगार से। चूँकि साले ने यह आग्रह अपनी बहन की उपस्थिति में किया था। इसलिए साहब से ना कहते नहीं बना। साहब यह सोचकर भी राजी हुए कि कविता संग्रह की भूमिका लिखने के लिए कविताएँ पढ़ना भी पढ़ें ये क़तई जरूरी नहीं। पर साहब तब कष्ट में पड़े जब कवि ने अपनी कविताओं के कालजयी होने का दावा किया और उन्हें बांचना शुरू किया।

साहब कसमसाए। पर करते क्या ? कवि यदि साला हो तो उसकी कविताएँ सुनना बाध्यता ही समझिए। साले कवि ने पहली कविता सुनाई वो कुछ ऐसी थी।

मन कहता है
मन सुनता है
कलाकारी है ये
जैसे बेतार

हाँ नहीं कहता है
लड़के का बाप
जब तक न मिले
दहेज में कार

कविता सुनकर साहब गिरते गिरते बचे। कविता मे लड़के के बाप का घुस आना नितांत अप्रत्याशित था। पर वो घुसा क्योंकि कवि यही चाहता था। साहब सँभले उसके पहले कवि ने दूसरी कविता उठा ली।

कोयल गाती
मीठा मीठा
गाना भर है उसका काम
सुनकर उसके ही गीत
मीठे होते लंगडा आम
कोई भला आदमी
फंसता है जब भी
नेताजी के चक्कर में
मारा मारा फिरता है
बनता नहीं कभी उसका काम

साहब कोयल से नेताजी का मेल बर्दाश्त नहीं कर पाए। कवि को पटक पटक कर मारने की इच्छा हुई उनकी। पर कवि के लिहाज में धीरज रखा उन्होंने। साहब ने कविताओं की भूरी भूरी प्रशंसा की। विनम्रता पूर्वक आग्रह किया कवि से। कहा कि पांडुलिपि छोड़ दें। वो समय निकाल कर उन्हें पढ़ेंगे भी और भूमिका के अलावा समीक्षा भी लिखेंगे।

लगातार मना करने के बावजूद उत्साही कवि ने कुछ और मारक कविताएँ सुनाई साहब को। नाश्ते के बाद लंच किया। झपकी ली। और फिर शाम की चाय पीकर विदा हुए। अब सूरत ए हाल यह कि कवि भूमिका के लिए लगातार तक़ाज़े कर रहे हैं। साहब फँस चुके। न उनसे उगलते बन रहा है न लीलते। लिखना तो होगी उन्हें भूमिका। जब लिखेंगे साहब। जैसी लिखेंगे आपको बताएँगे।